धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

दिसम्बर – 2015 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

80 वें जन्मोत्सव पर श्रद्धायुक्त वंदनाएं

(9 दिसम्बर 2015)

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- थराद से शंखेश्वर छःरि पालित संघ 27.नवम्बर 2015 से
- वल्लभीपुर से सिद्धाचल तीर्थ के लिए छःरि पालित संघ 7 दिसम्बर 2015 से
- अयोध्यापुरम से सिद्धाचल तीर्थ के लिए छःरि पालित संघ
- श्री सिद्धाचल तीर्थ पर एक साथ 2 नव्वाणु यात्रा प्रारम्भ दिनांक 18 दिसम्बर 15 से

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

हमारे गौरव

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

3007

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर
(सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी
धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी
आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी
जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती शोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी
तख्तगद, मुम्बई

श्री बाबूलालजी
गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी
सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी
विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी
सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी
बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी
वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी
भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी
धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी
धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी
दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी
संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी
सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत
गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी
चोराऊ

शाा. नरसाजी आसाजी बाफणा
कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी
कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
धलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूतमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाचेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

32070

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मइवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

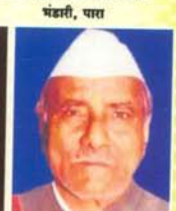
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फौजाजी
शक्तावत, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह मोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
दिसम्बर-2015 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 62 अंक 12
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

सुकुमालिका का विवाह भिखारी के साथ

धर्मरुचि मुनिजी को नागश्री द्वारा कड़वी शाक वहोराने तथा उससे मासक्षमण के तपस्वी मुनिश्री की मृत्यु का समाचार पूरे नगर में फैल गया। ब्राह्मण परिवार का बड़ा अपयश हुआ। नागश्री को उसके पति ने घर से निकाल दिया। वह दर-दर भटकने लगी। उसे कई रोग हो गए। दारुण वेदना भुगतते हुए उसकी मृत्यु हो गई। वह मर कर छठे नरक में गई। उसे नरक से तिर्यञ्च तथा तिर्यञ्च से पुनः नरक के कष्ट सहन करने पड़े।

चम्पा नगरी में सागरदत्त सेठ के घर नागश्री का जीव पुत्री के रूप में जन्म लेता है। माता-पिता ने पुत्री सुकुमालिका का खूब लाड़-प्यार से पालन किया।

विवाह योग्य होने पर उसका विवाह नगर के ही जिनदास सेठ के पुत्र सागर के साथ धूमधाम से कर दिया। पहली ही रात्रि शयन के समय सागर को सुकुमालिका को स्पर्श करने पर उसे पत्नि का शरीर धधकते अंगारे की तरह लगा। सागर घबराकर भाग गया।

इस स्थिति में सुकुमालिका रोने लगी। माता-पिता ने उसे सांत्वना दी। सेठ सागरदत्त सेठ जिनदत्त के पास चर्चा के लिए गए। जिनदत्त के पुत्र सागर ने स्पष्ट कह दिया कि मैं अग्नि में जलकर भस्म होने को तैयार हूँ लेकिन सुकुमालिका को स्पर्श नहीं कर सकता हूँ।

सेठ ने एक स्वस्थ भिखारी को स्नान करवा, वस्त्रालंकारों से सज्जित कर सुकुमालिका का विवाह कर दिया। क्रमशः

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	निराकुल जीवन का रहस्य (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-29) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	13
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-29) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	16
4.	प्रश्नोत्तरी	19
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	20
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	21
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	22
8.	पू. आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.)	24
9.	प्रतिष्ठा शिरोमणि (डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय)	30
10.	गुरु भक्ति महात्म्य (संकलन-साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्री)	36
11.	पाती-साहित्य मनीषी के नाम (अशोक कुमार नांदेचा, नीमच)	38
12.	गुरु दक्षिणा का समय (श्रीमती पद्मा सेठ, राणापुर)	40
13.	ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति-3 (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयश्री म.सा.)	43
14.	भाव श्रावक-श्राविका का भाव जगत (मुनिश्री संयमरत्न विजयजी म.सा.)	44
15.	श्रेष्ठ धर्म अहिंसा (मुनिश्री वैभवरत्न विजयजी म.सा.)	47
16.	जैन धर्म दर्शन में समाधिकरण आत्महत्या नहीं (लेखांक-3) (प्रो. सागरमल जैन)	49
17.	अशुचि भावना (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्री म.)	52
18.	चिन्ता नहीं चिन्तन करो (साध्वी डॉ. श्री प्रीतिदर्शनाश्री म.)	55
19.	हमारी साधना और उपलब्धियाँ (डॉ. चंचलमल चौरडिया)	57
20.	समाधि के सूचक-अवधान समाधान और प्राणिधान (श्री शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	61
21.	शक्ति का स्त्रोत-मौन (अचलचन्द जैन)	63
22.	'क्षमापन अपना बनाती' परीक्षा के उत्तर	65
23.	'क्षमापन अपना बनाती' ओपन बुक एक्जाम-के परिणाम	68
24.	गुजराती संभाग	70
25.	कुमकुम सने पगलिये	83
26.	श्रीसंघ सौरभ	87
27.	परिषद् प्रांगण से	89
28.	जैन विश्व	108
29.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	109-110

प्रवचन लेखांक 6

निराकुल जीवन का रहस्य

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

दौलत रहे या जाये

एक सेठ का कारोबार बहुत बड़ा था। अनेक नौकर चाकर थे उनके पास। समय सदा एक सा नहीं रहता। समय के फेर से सेठ का कारोबार ठप पड़ने लगा। व्यापार में घाटा होने लगा। अब सेठ ने एक-एक करके नौकरों की छुट्टी करना शुरू कर दिया। अन्त में केवल एक नौकर बचा। नाम था उसका दौलत। सेठ ने उससे भी कह दिया-'भाई! तू भी दीपावली तक कोई दूसरी जगह ढूँढ लेना। अब मेरे पास कोई काम नहीं रहा है।'

दौलत समझदार था। वह कभी मौका नहीं चूकता था। दीपावली आ गई। सेठ ने पूजन की तैयारी की। पूजन के लिए वे तैयार बैठे थे। दौलत भी वहाँ जाकर बैठ गया। उसने सेठ से धीरे से पूछा-'सेठ साहब! दौलत आपके सामने उपस्थित है। वह रहे या जाये? आपका क्या आदेश है, उसके लिए'

दीपावली के दिन सेठ 'दौलत जाये' ऐसा तो कह नहीं सकते थे। उन्होंने कहा - 'भाई? दौलत अवश्य रहे, जाये नहीं।'

दौलत ने पुनः पूछा-'सेठजी! दौलत हमेशा के लिए रहे या कुछ समय के लिए?'

सेठ को कहना ही पड़ा-'मेरे यहाँ दौलत हमेशा के लिए रहे।'

दौलत ने भी कहा-'सेठ साहब!अब मैं आपके यहाँ से कभी कहीं अन्यत्र नहीं जाऊँगा।'

यह है, अवसर का लाभ उठाने का एक उदाहरण। बुद्धिमान हमेशा अवसर से लाभ उठाता है। वह अवसर नहीं चूकता। हम तो रोज कहते हैं-भाई! यह अपूर्व अवसर आया है। कुछ धर्म की कमाई कर लो। व्रत-नियम ग्रहण करो; पर कोई ध्यान नहीं देता। हम कहते जाते हैं और आप सुनते जाते हैं। यहाँ मात्र कहना और सुनना चल रहा है। नल चल रहा है; पर बाल्टी भर नहीं रही है। क्या कारण है इसका? लगता है, या तो बाल्टी नल से दूर है; या फिर उसका तल फूटा हुआ है और सब पानी बेकार जा रहा है। बाल्टी फूटी न हो, वह नल के नीचे हो और नल से पानी आ रहा हो, तो ही बाल्टी भर सकती है।

मन को साथ रखो

व्याख्यान चल रहा है, कानों से सुनाई दे रहा है, पर मन ध्यान नहीं दे रहा है; तो कुछ भी पल्ले पड़नेवाला नहीं है। कान के साथ मन भी सुनने का काम करें तो अवश्य कुछ प्राप्ति हो सकती है। संसार

भ्रमण बढ़ाने की कला से अपना भला होने वाला नहीं है। संसार घटाने की कला जब प्राप्त होगी, तभी अपना भला होगा। और संसार घटाने की कला तभी प्राप्त होगी, जब भगवान की वाणी अपने घट में उतरेगी।

वीतराग शासन की विशेषता

यह वीतराग शासन है। यहाँ वैराग्य योग की बात बताई गई है। इस शासन को स्वीकार करने वाला जीव भोगों से विरक्त होता है और योग मार्ग में प्रवृत्ति करता है। इस शासन में जीव को शिव बनने का अवसर प्राप्त है। इस शासन को अपनाकर जीव नर से नारायण बन जाता है। ज्ञानी भगवन्तों ने आत्मा को चंदन की उपमा दी है। कर्म-नाग इससे लिपटे हुए हैं। वे अपना जहर उगलते जा रहे हैं। इन कर्म नागों को दूर करने से शुद्ध आत्मस्वरूप प्राप्त होता है। नागों को दूर करने के पश्चात् ही तो चंदन के गुणों का अनुभव किया जा सकता है। धर्मसत्ता के आगे कर्मसत्ता का जोर नहीं चलता। प्रत्येक जीव कर्मजाल तोड़कर ही मुक्त हो सकता है।

जैसा भाव वैसा फल

जीव को सदा उसके परिणामों का फल मिलता है। जैसे परिणाम वैसा फल। हम दूसरों का भला चाहेंगे, तो हमारा भला होगा और बुरा चाहेंगे तो बुरा। नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात लें। जो खड्डा खोदता है, वही खड्डे में गिरता है। इसीलिए कहा गया है-

जो तो को काँटा बुवै,
ताहि बोय तू फूल।
तो को फूल के फूल हैं,
वा को है तिरसूल।।

एक थे पंडितजी। राजा के महल में जाते और कथा सुनाते। जब बिदा होते, तब राजा रुक्का लिखकर दे देता। पंडितजी रुक्का लेकर खजाँची के पास जाते और एक स्वर्णमुद्रा प्राप्त कर लेते। राजा का नाई, पंडितजी से कहा करता-'पंडितजी एक दिन का रुक्का तो मुझे दे दीजिए; शायद मुझे भी कुछ मिल जाए।' तब पंडितजी कहते-'भाई! यह तो अपनी-अपनी तकदीर है। मुझे मेरी तकदीर से मिल रहा है।' पंडितजी ने कभी उसे रुक्का नहीं दिया।

नाई, पंडितजी से जलने लगा। उसने पंडितजी को फँसाने का निश्चय किया। एक बार जब वह राजा की दाढ़ी बना रहा था; तब उसने बात छेड़ दी-

'महाराज! ये पंडितजी अपने आप को बड़ा समझते हैं और आप से नफरत करते हैं।'

'अरे ! तेरे मन में गलतफहमी हो गई है। पंडितजी मेरे प्रति बहुत आदर भाव रखते हैं।'

'महाराज! उनकी वाणी से जरूर आदर भाव प्रकट होता है; पर उनके आचरण से तो आपके प्रति घृणा भाव ही प्रकट होता है।'

'सो कैसे?'

'देखिये महाराज! पंडितजी जब कथा सुनाते हैं, तब अपने मुँह के आगे कपड़ा रखते हैं। क्यों रखते हैं, जानते हैं आप?'

-क्रमशः...

लेखांक - 29

गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महावीर–मेरी कल्पना नहीं हैं, किन्तु सार्वकालिक नियम है कि सर्वथा असत्–अविद्यमान का निषेध नहीं होता और जिसका निषेध किया जाता है, वह कहीं न कहीं संसार में विद्यमान ही होता है। वस्तुतः निषेध से वस्तु के सर्वथा अभाव का नहीं, किन्तु उसके संयोग, समवाय, सामान्य और विशेष रूप अभाव को प्रदर्शित किया जाता है कि अन्यत्र विद्यमान देवदत्त आदि का यहाँ संयोग या समवाय या सामान्य या विशेष रूप सम्बन्ध नहीं है। वैसे ही जब हम यह कहते हैं कि खर विषाण नहीं है, तब उसका तात्पर्य यही है कि खर और विषाण ये दोनों पदार्थ अपने–अपने स्थान पर विद्यमान हैं, किन्तु उनका समवाय सम्बन्ध नहीं है। 'दूसरा चन्द्रमा नहीं है' इस प्रयोग में चन्द्र का सर्वथा निषेध न करके एक व्यक्ति में सामान्य का अवकाश नहीं होने से चन्द्र सामान्य का निषेध किया गया है और जब यह कहते हैं कि घड़े के जैसे (बराबर) मोती नहीं हैं, तब मोती का सर्वथा अभाव अभिप्रेत न होकर घट परिणाम रूप विशेष के अभाव के प्रतिपादन का अभिप्राय होता है। इसी प्रकार 'आत्मा नहीं है' में भी आत्मा का सर्वथा अभाव अभिप्रेत न होकर उसके संयोगादि का ही निषेध मानना चाहिए।

इन्द्रभूति– आपके नियमानुसार यदि मेरे लिए कहा जाये, तो इसका आशय यह हुआ कि मेरी त्रिलोकेश्वरता के निषेध का निषेध किये जाने से मैं भी तीन लोक का ईश्वर माना जाऊँगा। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि मैं तीन लोक का ईश्वर नहीं हूँ। अतएव जिसका निषेध किया जाए, वह वस्तु होना, यह नियम अयुक्त है। दूसरी बात यह है कि आपके मन्तव्यानुसार तो निषेध के

संयोगादि उक्त चार प्रकार होने से निषेध का पाँचवा प्रकार नहीं है, यह भी कहा जाएगा। परन्तु निषेध का पाँचवा प्रकार होना चाहिए, क्योंकि आप उसका निषेध कर रहे हैं।

महावीर- प्रतीत होता है कि मेरे कथन का यथार्थ तात्पर्य नहीं समझ सके हो। अन्यथा ऐसा प्रश्न हो ही नहीं सकता। क्योंकि त्रिलोकेश्वरता के निषेध में सामान्यतः तुम्हारी ईश्वरता का सर्वथा नहीं, किन्तु त्रिलोकेश्वरता रूप विशेष मात्र का निषेध अभीष्ट है। इसी प्रकार 'प्रतिषेध चतुःसंख्या से विशिष्ट नहीं है' का तात्पर्य निषेध के पाँचवे प्रकार का प्रतिषेध किया है, किन्तु निषेध का सर्वथा अभाव अभिप्रेत नहीं है।

सर्वथा असत् का निषेध नहीं होता

इन्द्रभूति-आर्य! मुझे तो आपका यह सब कथन असंबद्ध ही प्रतीत होता है, क्योंकि आप देखते नहीं कि 'मेरे त्रिलोकेश्वरत्व' में मूल में ही असत् अविद्यमान है। अतः असत् का ही निषेध किया गया है। इसी प्रकार प्रतिषेध का पाँचवा प्रकार भी सर्वथा असत् है, जिससे उसका ही निषेध किया गया है। इसी प्रकार संयोग, समवाय, सामान्य या विशेष ये भी सब असत् हैं, अतः गृहादि में देवदत्त आदि का निषेध किया है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि जो असत् है, उसी का निषेध होता है। इसलिए 'जिसका निषेध किया जाता है, वह विद्यमान ही होता है।' यह आपका कथन अयुक्त है।

महावीर-आयुष्मन्! मेरी युक्ति मेरे कथन को बराबर समझने का प्रयत्न करोगे तो वह तुम्हें संयुक्तिक ज्ञात होगा। मैंने यह तो कहा ही नहीं कि जिसका निषेध किया जाता है, वह सर्वत्र सर्वथा होता है। मेरे कहने का तात्पर्य तो इतना ही है कि जहाँ जिस वस्तु का निषेध किया जाता है, वह भले ही वहाँ विद्यमान न हो, किन्तु अन्यत्र तो वह विद्यमान होती ही है। जैसे देवदत्त का संयोग चाहे उसके घर में न हो, परन्तु अन्यत्र रास्ते में अथवा दूसरे घर में देवदत्त का संयोग विद्यमान होता ही है। इस प्रकार समवाय सामान्य और विशेष के बारे में भी यह निश्चित है कि उसका निषेध एक स्थान पर किया जाता हो, तो अन्यत्र वह सिद्ध विद्यमान होता ही है।

शरीर तो जीव का आश्रय है

इन्द्रभूति- आपकी बात मानकर ही तो शरीर में अविद्यमान जीव का निषेध करता हूँ कि शरीर में जीव नहीं है। ऐसा मानने में अनुचित भी क्या है? किन्तु आप तो शरीर में भी जीव को मानते हैं, जो मुझे मान्य नहीं है।

महावीर– यह तुमने ठीक कहा और ऐसा कहकर मेरे इच्छित की पूर्ति ही कर दी, क्योंकि मेरा मूल उद्देश्य जीव का अस्तित्व सिद्ध करना है और यदि वह सिद्ध हो जाता है, तो उसका आश्रय स्वत: ही सिद्ध हो जाएगा। क्योंकि वह निराधार तो है नहीं। तुमने शरीर में जीव का निषेध किया। अत: उसकी विद्यमानता तो उक्त नियम से सिद्ध हो ही गयी। अब तो यह प्रश्न विचारणीय है कि वह वस्तुत: शरीर में है या नहीं। जीवित शरीर में जब जीव की उपस्थिति के चिन्ह ज्ञानादि दिख रहे हैं, तब तुम ही बताओ कि उस शरीर में जीव क्यों नहीं मानना चाहिये?

इन्द्रभूति– शरीर में जीव मानने के बजाय शरीर को ही जीव क्यों न मान लिया जाये?

महावीर – शरीर को जीव नहीं मानने का कारण यह है कि शरीर में जीव होने तक यह जीता है, जीवित है और शरीर से जीव का संबंध छूट जाने पर यह मर गया तथा जीव में मूर्च्छा (बेहोशी) आने पर वह मूर्च्छित हो गया, इत्यादि व्यवहार मात्र शरीर को ही जीव मानने पर नहीं घट सकता।

इन्द्रभूति– शरीर से भिन्न किसी दूसरी वस्तु के लिए जीव पद का प्रयोग नहीं होता। इसीलिए तो शास्त्रों में कहा है– 'जीव शब्द शरीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। जैसे कि यह जीव है। इसका हनन मत करो।' तात्पर्य यह है कि आप जीव को नित्य मानते हैं, जिससे उसके घात का प्रश्न ही नहीं है। शरीर का ही घात होता है। अत: शास्त्र में जीव शब्द का अर्थ शरीर मानकर ही जीव के घात का निषेध किया गया है।

(क्रमश:)

---

* अपनी बात कहते समय तकिया कलाम जैसे ' मैं कहूं कि' आदि अनावश्यक वाक्य जोड़ने की जरुरत नहीं है। हाथ या आंख नचाते हुए बात न करें।
* सामान्य बातचीत के दौरान भड़कना, उत्तेजित होना या चिढ़ना अशिष्टता है। माथे पर बल पड़ना आपके तनावग्रस्त होने का परिचायं है, इससे बचें।
* मुंह की किसी दूसरे के मुख के पास ले जाना या हाथ रखकर बात करना गलत है। इसका ध्यान रखें।
* बात करते समय डींगे हांकना, दूसरों की बुराई या आलोचना गलत है।
* बातचीत के दौरान यदि आप मजाक भी कह रहे हैं, तो अपनी सीमाओं का ध्यान रखें।

स्वर्णप्रभा

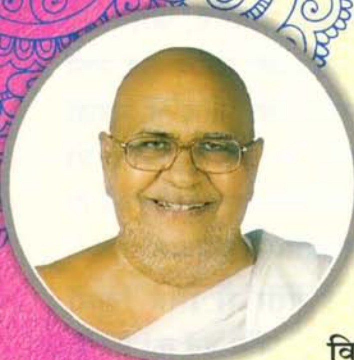

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

भोजन के समय जब सब एक स्थान पर एकत्रित हुए, तब स्वर्णप्रभा ने अपने पति से कहा–'आपने एक काम तो सफलतापूर्वक सम्पन्न कर दिया अब दूसरे काम के विषय में क्या करना है? यह भी विचार किया है अथवा नहीं।'

'जिस परिवार से काम है, वह परिवार पड़ोस में ही रहता है। उस परिवार का लड़का शांतिदासजी से मिलने के लिए आया था। इस प्रकार दूसरे काम की शुरूआत भी हो गई है।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने बताया।

'आप दोनों आपस में सांकेतिक रूप से बात करके क्या गोलमाल कर रहे हैं। अपना काम हमें नहीं बता सकते क्या? हो सकता है, हम आपकी कुछ सहायता ही कर दें।' श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी ने कहा।

'गोलमाल जैसी कोई बात नहीं है, भाभीजी! असल बात यह है कि लगभग एक माह पूर्व एक महिला स्वर्णप्रभा के पास आई थी और अपनी पारिवारिक समस्या का समाधान करने के लिए निवेदन किया था। स्वर्णप्रभा ने अपनी आदत के अनुसार उस महिला को आश्वस्त कर दिया था। उस महिला की असली समस्या उसकी पुत्रवधू है, जो यहीं की है।'... नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने बताया। वह आगे कुछ बताता इसके पूर्व ही श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी बोल पड़ी–'कहीं आप अमरचंदजी की पुत्री फूलकुंवर के विषय में तो बात नहीं कर रहे हैं।'

> आप दोनों आपस में सांकेतिक रूप से बात करके क्या गोलमाल कर रहे हैं।

'हाँ, मैं अमरचंद की पुत्री के विषय में ही बात कर रहा

हूँ। उसका नाम तो मुझे स्मरण नहीं है, किन्तु वह अमरचंद की पुत्री ही है और उसका विवाह शिवपुर निवासी राधाकृष्ण के पुत्र कृष्णवल्लभ के साथ हुआ है। उस फूलकुंवर के व्यवहार के कारण सारा परिवार दु:खी है। वह पूरा परिवार ही सज्जन है। यदि उनके स्थान पर अन्य कोई और होता तो अभी तक फूलकुंवर कभी की अपने पिता के यहाँ भेज दी जाती। उनकी भलमनसाहत के कारण अभी तक बात घर में ही है। किन्तु अब लगता है कि उनकी सहनशीलता जवाब दे गई है। यदि शीघ्र ही उनकी समस्या का समाधान नहीं हुआ तो बड़ा विस्फोट हो सकता है।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा।

> किन्तु जो अपना होता है, वह यदि वर्षों बाद घर आए तो क्या उसका स्वागत सत्कार नहीं करना चाहिए?

'अरे, वह तो नाम से ही फूल है। वैसे तो वह विष से लिप्त शूल है। अमरचंदजी ने बेचारे राधाकृष्णजी और उनके परिवार के साथ धोखा किया है। वह लड़की बड़ी सिर चढ़ी है। अपने आगे किसी को कुछ समझती ही नहीं है। यदि कोई उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ कहे अथवा करे तो वह मारने-मरने पर उतर आती है।' श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी ने कुछ आवेश में आकर कहा।

'बहन! ऐसा लगता है, कि आप उसके सम्बन्ध में बहुत कुछ जानती हैं। इस समय तो हमारे लिए अच्छा यही है कि हम उसकी बात को अपने मस्तिष्क से निकाल दें और शांति से भोजन कर लें। भोजन करते समय आवेश में आना उचित नहीं है। भोजनोपरांत हम इस विषय में विस्तार से बात कर लेंगे। मुझे जो जानना है, वह भी जान लूंगी।' स्वर्णप्रभा ने कहा।

'भाभीजी! आपका कथन एकदम सत्य है। इस समय उसकी चर्चा करना भोजन का मजा किरकिरा करना है।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'गलती मेरी ही थी जो मैंने पहले बिना सोचे-

विचारे बात की। खैर! छोड़िए इस बात को, और भोजन मंगवाइये। अब तो भूख और भी जोर से लग रही है।' वातावरण को हल्का बनाने के लिए स्वर्णप्रभा ने यह बात कुछ इस प्रकार कही कि सबके मुख पर मुस्कान खिल उठी। भोजन करने के पश्चात् नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर और श्रेष्ठी शांतिदास तो अपने अतिथि कक्ष में जाकर बैठ गए और स्वर्णप्रभा और श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी अंत:कक्ष में चली गईं।

दो-तीन दिन की बातचीत और खोजबीन से स्वर्णप्रभा को फूलकुंवर के विषय में बहुत कुछ जानकारी मिल गई। इसके बावजूद वह यह नहीं जान सकी कि मिथ्यात्व पर उसका विश्वास किस प्रकार दृढ़ हो गया। चूंकि यहाँ निर्धारित समय से भी अधिक दिन तक रुकना हो गया था, इसलिए अब अपने गृहनगर की ओर प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया। आज जब दोपहर के समय सब एक स्थान पर एकत्र हुए तो स्वयं स्वर्णप्रभा ने ही प्रस्थान करने की बात कह दी।

'भाभीजी! अभी इतनी शीघ्रता न करें। अभी तक तो आप अपने कार्य में व्यस्त रहीं। हमें आतिथ्य का तो अवसर ही नहीं मिला। साथ बैठकर भी हम बातचीत नहीं कर सके।' स्वर्णप्रभा की बात के उत्तर में श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'अपने ही घर में अतिथि बनाकर हमें पराया बनाना चाहते हो, देवरजी!' स्वर्णप्रभा ने कहा।

'नहीं...नहीं..। जैसा आप सोचती हैं, वैसा नहीं है। आप तो मेरे अपने ही हैं, किन्तु जो अपना होता है, वह यदि वर्षों बाद घर आए तो क्या उसका स्वागत सत्कार नहीं करना चाहिए?' श्रेष्ठी शांतिदास ने पूछा। यह कहकर श्रेष्ठी ने बाजी उलट दी। स्वर्णप्रभा भी कम नहीं थी। उसने तत्काल कहा-'अपने व्यक्ति के वर्षों पश्चात् घर आने पर जो उमंग और उत्साह होता है, वह तो यहां पहले ही हो चुका। अब तो हम यहां परिवार के सदस्य बनकर रह रहे हैं। इसलिए आप व्यर्थ की बातें छोड़ें और अब जाने की अनुमति दे ही दें।'

(क्रमश:)

प्रश्नोत्तरी

उत्तरदाता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दर्शन चेतना किसे कहते हैं ?

प्रश्नकर्त्ता

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. चेतना के कितने भेद हैं?

उ. दो भेद हैं– 1. दर्शन चेतना, 2. ज्ञान चेतना।

प्र. दर्शन चेतना किसे कहते हैं?

उ. जिसमें महासत्ता (सामान्य) का प्रतिभास (निराकार झलक) हो उसे दर्शन चेतना कहते हैं।

प्र. महासत्ता किसे कहते हैं?

उ. समस्त पदार्थों के अस्तित्व गुण को ग्रहण करने वाली सत्ता को महासत्ता कहते हैं।

प्र. ज्ञान चेतना किसे कहते हैं?

उ. अवान्तर सत्ता विशिष्ट विशेष पदार्थ को विषय करने वाली चेतना को ज्ञान चेतना कहते हैं।

प्र. अवान्तर सत्ता किसे कहते हैं?

उ. किसी विवक्षित पदार्थ की सत्ता को अवान्तर सत्ता कहते हैं।

प्र. सम्यक्त्व गुण किसे कहते हैं?

उ. जिस गुण के प्रगट होने पर अपने शुद्ध आत्मस्वरूप का प्रतिभास हो, उसे सम्यक्त्व गुण कहते हैं।

प्र. चारित्र किसे कहते हैं?

उ. बाह्य और आभ्यन्तर क्रिया के निरोध से प्रादुर्भूत आत्मा की शुद्धि विशेष को चारित्र कहते हैं।

प्र. बाह्य क्रिया किसे कहते हैं?

उ. हिंसा करना, झूठ बोलना, चोरी करना, मैथुन करना, परिग्रह संचय करना।

प्र. आभ्यन्तर क्रिया किसे कहते हैं?

उ. योग और कषाय को आभ्यन्तर क्रिया कहते हैं।

प्र. योग किसे कहते हैं?

उ. मन, वचन, काया के निमित्त से आत्म प्रदेशों के चंचल होने को योग कहते हैं।

प्र. कषाय किसे कहते हैं?

उ. क्रोध, मान, माया, लोभ रूप आत्मा के विभाव परिणामों को कषाय कहते हैं।

प्र. सुख किसे कहते हैं?

उ. आह्लाद स्वरूप आत्मा के परिणाम विशेष को सुख कहते हैं।

प्र. वीर्य किसे कहते हैं?

उ. आत्मा की शक्ति (बल) को वीर्य कहते हैं।

प्र. भव्यत्व गुण किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति के निमित्त से आत्मा को सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र प्रगट होने की योग्यता हो, उसे भव्यत्व गुण कहते हैं।

जोरदार गतिविधियां करें हम सभी

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

आगामी नौ दिसम्बर मिति मार्गशीर्ष कृष्णा (गुजराती कार्तिक विदी) 13 को युग प्रभावक आचार्यदेव गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का अस्सीवां जन्मोत्सव पूरे देश में आस्था तथा उत्साह के साथ मनाया जायेगा। हम सभी उनके स्वास्थ्य के अच्छे रहने एवं दीर्घायु बन कर समाज (श्रीसंघ) पर कृपादृष्टि की वर्षा करते रहने की कामना करेंगे । श्रीसंघ तथा परिषद की शाखाएं हर जगह कार्यक्रम आयोजित करेंगे ।

पूज्य युगप्रभावक गच्छाधिपति श्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन श्रीसंघ को सर्वांगीण बनाने एवं सुदृढ़ करने में प्रयुक्त किया है। प्रारंभ से ही उनके हृदय में श्रीसंघ की उन्नत करने की टीस रही, वे युवाओं को संगठित तथा स्फूर्तिमय बना कर समाज को अगली पंक्ति को सशक्त बनाने की धुन में रहे, महिलाओं को एकता का संदेश देकर चतुर्विध श्रीसंघ के एक सेवानिष्ठ प्रगतिशील अंग के रूप में अग्रिम पंक्ति पर स्थान दिलाने की प्रेरणा करते रहे। उनने देव गुरू तथा धर्म तीनों की उपासना की क्रियाओं को बल देकर वायुमान को धार्मिक तथा आध्यात्मिक परमाणुओं से परिपूर्ण करने के उपक्रम किये। इनकी बहुमुखी प्रतिभा कौन-से क्षेत्र में उपलब्धियां देने में पीछे रही। नये तीर्थों की रचना एवं ग्रामस्तर तक के जिनालयों के जीर्णोद्धार व उपाश्रयों के निर्माण के लिये ही आपने उपदेशों की धारा प्रभाव नहीं की बल्कि नवीन गुरू मंदिरों के निर्माण को आपकी प्रेरणा से बाढ का रूप मिल गया। आपने संकल्प ग्रहण किया था कि आप सदा गुरूदेव पूज्य श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के अपने जीवन में एक सौ आठ गुरू मंदिर स्थापित करेंगे, यह संख्या आज दो सौ के लगभग स्पर्श कर रही है। आपने दो सौ से अधिक ग्रंथों का लेखक, संशोधन या अनुवाद किया। कोई डेढ़ सौ से अधिक आत्मर्थियो को संयम मार्ग पर अग्रसर कर आपका शिष्यस्व प्रदान किया है। आपने जितने कीर्तिमान स्थापित कर दिये हैं, उनकी गणना करना दुष्कर कार्य है।

हमारी यह कामना है कि पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति श्री भविष्य में दीर्घ समय तक आपकी कृपा दृष्टि से श्रीसंघ का तथा हमारा मार्गदर्शन करते रहें । हमारे कार्यक्रमों में नवकार मंत्र तथा गुरूदेव का जाप, धर्मानुष्ठानिक आयोजन, आपके सुदीर्घ जीवन के लिये प्रार्थनाएं आदि भी सम्मिलित रहनी चाहिये, जन कल्याण के लिये स्वास्थ्य, रक्तदान, आदि शिविरों का आयोजन तो होगा ही, साथ ही गरीबों को भोजन, दीन-हीनों को वस्त्र-बर्तन-नकद आदि की सहायता, अनाथों-विधवाओं के प्रति अनुकम्पा की प्रस्तुति भी की जानी चाहिये । आईये, हम लोग अपने-अपने यहां इन गतिविधियों को व्यवस्थित रूप दें । जय जिनेन्द्र ! जय राजेन्द्र ! जय जयंत ।

यह हमारे लिए महायज्ञ है, इसमें आहुति अर्पित करें

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा., विशाल साधु-साध्वी वृंद के सान्निध्य में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं महिला परिषद् का वर्ष 2015-16 का वार्षिक एवं तरुण परिषद् का अधिवेशन गुरु जन्मभूमि पेपराल में आयोजित किया गया। सम्मेलन यानि संगठन के साथियों का मिलन सम्मेलन जिसमें देश के सुदूर क्षेत्रों तक संस्कार, सेवा, समर्पणता के उद्देश्यों को आत्मसात कर जिन शासन प्रभावना में जुटे स्वयंसेवकों का एकत्रिकरण हुआ। वार्षिक सम्मेलन के माध्यम से परिषदजन ने एक जाजम पर विराजित होकर आगामी सेवा प्रकल्पों एवं संगठन उद्देश्यों को गति प्रदान करने हेतु वैचारिक मंथन किया।

परिषदजनों में धड़कता सेवा का स्पंदन संगठन को नीत नई ऊँचाइयों की ओर चलायमान कर रहा है। सम्मेलन में प.पू. गुरुदेवश्री के मार्गदर्शन ने हमारी सेवा भावना की तरंगों को नई ऊर्जा प्रदान की। हमें गुरुदेव के पावन सान्निध्य में संगठन की दिशा तय करने हेतु विचारों का प्रस्फुटन करना है।

प.पू. गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की जयन्ति व स्वर्गारोहण दिवस गुरु सप्तमी, राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के जन्मोत्सव व पाटोत्सव पर परिषद् परिवार के तत्वावधान में सेवा प्रकल्प आयोजित किये जाते हैं। सम्मेलन में सेवा प्रकल्प आयोजित करने का निर्णय किया गया। केन्द्रीय परिषद् के तत्वावधान में शाश्वत धर्म प्रसार वृद्धि अभियान संचालित है। ज्ञान पंचमी को आराधना स्वरूप प्रत्येक शाखा परिषद् को स्थानीय स्तर पर शाश्वत धर्म के कम से कम 10 नवीन सदस्य बनाने का लक्ष्य दिया गया था। आशा है आपने इस लक्ष्य को पूर्ण किया होगा। यदि पूर्ण न हुआ हो तो अब पूर्ण कर लीजिए। विभिन्न प्रांतों की शाखाओं ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किए हैं जिसमें विशेषकर शाखा विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश) द्वारा संचालित अन्नदाता योजना प्रकल्प अनुकरणीय एवं अनुमोदनीय है। शाखा द्वारा प्रत्येक मंगलवार को 500 दीन-हीन व्यक्तियों को भोजन कराया जाता है। आशा है हम परिषद् के संकल्पों को प्राप्त करने की दिशा में इसी उत्साह से बढ़ते रहेंगे।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् समाजसेवा का ऐसा महायज्ञ है जिसके माध्यम से समाज को सुफल की प्राप्ति संभव है। हजारों नवयुवकों की अनुशासनबद्ध, व्यवस्थित, उत्साह से परिपूर्ण कतारें, परिषद् परिवार की शोभा ही नहीं सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति की अभिवृद्धि करना समाज विकास तथा समाज के उज्वल भविष्य के हित में सकारात्मक अभियान है। हम सभी इसके ऐसे अंग हैं जो अपनी त्यागपूर्ण सेवा से इसके उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए राष्ट्रसंत, युग प्रभावक, जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज के स्वप्नों तथा संकल्पों को साकार रूप दे सकते हैं। ऐसा करना हमारे जीवन का कर्त्तव्य है। यही कर्त्तव्यभाव हमको सफलता की ओर ले जा सकता है। आईये, इस महायज्ञ में अपने योग, सहयोग, परिश्रम व सेवा की आहुति दें। जय जिनेन्द्र! जय राजेन्द्र! जय जयंत! जय परिषद्!

संपादकीय

आत्मोत्थान के लिये पाप आलोचना

पाप कर्मों के कारण भवों याने जन्म मरण की अन्तहीन परम्परा गतिमान है। कर्म ही संसार भ्रमण के कारण है। इस जीवन में भी हम हिंसा, असत्य आदि अठारह पाप स्थानकों में नित्य लिप्त हैं। इस मन तथा परभव में जो दुष्कृत्य किये गये हैं, व्यक्ति को ईमानदार पूर्वक उनकी आलोचना अथवा गर्हा करनी चाहिये। व्यक्ति को स्वयं अपने प्रति अपने अकृत्यों को लेकर धिक्कारभाव उत्पन्न करना चाहिये। जो बूरे कर्म हैं, उनको रसपूर्वक याद कर उनका आनन्द लेना ऐसी प्रवृत्ति है जो इन बुरे कार्यों को हमारे साथ प्रगाढ बना देती है। ऐसा करना अशुभ भाव की ओर प्रवृत्त होना है जिसके फल में हम नरक या निर्मल के भव का बंध ही करते हैं। इससे विपरीत बुरे कर्मों की आलोचना करना तथा उनके लिये प्रायश्चित लेना हमारे जीव को शुद्ध बनाता है। हम अपने अकार्यों को याद करें तथा विचारें कि मैंने इस भव तथा परभव में जो ये दुष्कृत्य किये है, वह खूब खराब काम किये हैं, जो करने योग्य नहीं थे, उसे मैंने कर डाले हैं, ऐसे अकार्यों को में स्वीकार करता हूँ तथा उनकी में गर्हा करता हूँ, आलोचना करता हूँ, उन्हें मिथ्या मानता हूँ, साथ ही मानता हूँ कि विषय-कषाय की आधीनता के कारण मैंने ये सम्पन्न किये। मैं इनके कारण शर्मिन्दा हूँ। इस प्रकार पापों की गर्हा करने से दुष्कृत्यों की ओर जीव का सभाव शिथिल पड़ता है। आत्मा में जो पाप संस्कार पड़े होते हैं, वे भी ढीले पड़ते हैं।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

सामान्यत: व्यक्ति की यह प्रवृत्ति होती है कि उसने जिन दोषों का सेवन किया है, उन्हें छिपाने का प्रयास करता है। इसका मुख्य कारण लज्जा है। वह यह मानता है कि समाज की दृष्टि में मेरा मान-सम्मान है, मैं बड़ा माना जाता हूँ, मेरे पांडित्य का परव्यक्ति लोहा मानते हैं यदि मेरे पापों

की जानकारी प्रकट हो गई तो वे मुझे हेय दृष्टि से देखना प्रारंभ कर देंगे, उनकी निगाह में मेरी मान-प्रतिष्ठा लघु हो जायेगी। इस भय से पापों की आलोचना या स्वीकृति को टालते हैं लेकिन शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है कि शल्य (छिपाया हुआ पाप) सहित कोई भी जीव शुद्ध नहीं होता । दोष के चार चरणों का उल्लेख आता है अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार तथा अनाचार । अतिक्रम से तात्पर्य है दोष करने की इच्छा उत्पन्न होना पाप करने के लिये व्यक्ति का अंतर से प्रेरित होगा अथवा यह कहें कि पाप करने के लिये मन की तैयारी हो जाता । व्यक्तिक्रम को अर्थ है अतिक्रम की स्थिति से आगे मन की प्रेरणा से दोष करने के लिये कदम बढना व्यक्ति का उस दोष को सम्पन्न करने के लिये आगे बढा। वह इस निर्णय में आ जाये कि पाप करने के लिये इसकी पूर्ण इच्छा है, इसकी सम्पूर्ति करना है। तृतीय चरण है अतिचार । पाप करने के लिये अग्रसर होते हुए वह वस्तु का स्पर्श कर ले। यह चरण उसे दोष सम्पन्न करने की पूर्व स्थिति में लाता है तथा चौथा चरण अनाचार याने दोष अथवा पाप का सेवन करना है। इसमें प्रथम तीन चरण के समाधान के लिये प्रतिक्रमण करने का मार्ग तथा चौथे अनाचार के निरजन के लिये दंड भोगने का मार्ग उपदिष्ट है । पाप का क्षय करने के लिये उसकी स्वीकृति आलोचना एवं गुरू से प्रायश्चित की प्राप्ति के मार्ग हैं। तीर्थंकरों की आत्माओं ने भी पाप किये थे लेकिन आलोचना के द्वारा उन्होंने उनका क्षय किया। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के 27 भवों में से दो भव उनको नर्क गति में व्यतीत करना पड़े। विकसित कर्मों को भुगतने पर ही उनकी आत्मा शुद्ध हुई तथा उनकी आत्मा का उत्थान हो पाया ।

मनीषियों का कथन है कि पाप करना दुष्कर नहीं है लेकिन उसकी आलोचना लेना दुष्कर है। पश्चाताप के तीव्र भाव रुप से आलोचना हो जाए तो आलोचना किये बिना भी केवलज्ञान हो जाता है । शुद्ध आलोचना के लिये अपने गुरु के सन्मुख अपने पापों की कपट रहित स्वीकारोक्ति करनी चाहिए । गुरु से कुछ भी छिपाना नहीं चाहिये बल्कि एक-एक पाप को याद करते हुए कहना चाहिये एवं गुरू से उन सभी का प्रायश्चित लेना चाहिये। आलोचना से मोक्ष मार्ग भी प्रशस्त हो जाता है। आजतक असंख्य आत्माओं ने आलोचना के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति की है।

आलोचना करने के पश्चात उसके लिये पछताना या उन्हीं पापों को फिर कर लेना असंगत है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में आपने गुरू से आलोचना करना चाहिये। भव आलोचना लिये बिना कोई भी आराधक नहीं बन सकता। एक बार आलोचना के बाद उसी पाप की पुनरावृत्ति होती हैं तो पुनः आलोचना लेनी चाहिये। ■

महाव्रत रूपी महापर्वत को धारण करने में दक्ष

पू. आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

(साध्वीश्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.)

इस वसुंधरा पर अनेक संत-महात्मा, ऋषि-मुनि हुए हैं जिन्होंने अपने तपोबल एवं साधना बल से सम्पूर्ण चराचर जगत को प्रभावित किया। सचमुच तप-त्याग, व्रत-साधना की शक्ति अद्भुत है। महापुरुष स्वयं के कल्याण के लिए साधना करते हैं किन्तु उनकी साधना की विशेषता यह रहती है कि सम्पूर्ण जगत ही उससे लाभान्वित होता है। जैसे सूर्य के प्रकाश से सभी अन्य भी स्वतः ही प्रकाशित हो जाते हैं। शांत सुधारस कार कहते हैं कि उत्तम जागृति वाले संयमी आत्माओं के संयम के प्रभाव से धरती पर कंप नहीं होता है। सूर्य-चंद्र धरती पर टूट नहीं पड़ते हैं। सागर अपनी मर्यादा को नहीं छोड़ता, ऋतुएं यथासमय घटित होती हैं। अति वृष्टि या अनावृष्टि देखने को नहीं मिलती है। प्रजा सुखी और धर्मी बनती है। परम पूज्य आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. भी एक ऐसे ही महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने अध्ययन काल में ज्ञान की अथक साधना की। साथ ही उस ज्ञान को सम्यक् आचरण के सांचे में ढाला भी है। संयम जीवन के पालन में गुरुदेव की विशेष जागृति है। आवश्यक क्रियाओं के समय गुरुदेव की अप्रमत्तता निहारने योग्य होती है। ज्ञान की उच्चता और आचरण की निर्मलता ने उनको एक विशिष्ट स्थान पर प्रतिष्ठित किया है। ज्ञान का आचरण में आ जाना इतना आसान नहीं है, इसके लिए अत्यन्त जागृति एवं अभ्यास की आवश्यकता रहती है।

गुरुदेव आठों ही याम अत्यन्त अप्रमत्त एवं चैतन्य रहते हैं। उनकी मनोभूमि पर स्वस्थ संतुलित आत्मभावों का झरना सदैव बहता रहता है, तभी तो स्खलना एवं प्रमाद रूपी कूड़ा कर्कट वहाँ टिक नहीं पाता है। गुरुदेव ने अपनी साधना के बल से भीतर में एक ऊर्जा का भंडार संचित किया है जिसकी अदृश्य रश्मियाँ बाहर भी चारों ओर सतत् प्रवाहित होती

रहती हैं। इसलिए गुरुदेव के आभामंडल में आने वाले भक्तों को एक अलौकिक ऊर्जा का अनुभव होता है। गुरुदेव ने उस ज्ञानामृत को घूंट-घूंट कर स्वयं तो पिया ही है और अन्य प्यासे भव्य जीवों को भी उसका आस्वादन करवाया है। भव्य जीवों के जीवन में भव्य भावना को जगाने हेतु गुरुदेव एक माध्यम बन चुके हैं। अहम् के विनाश एवं अर्हम् तत्त्व के विकास हेतु अनेकानेक मुमुक्षु साधकों के लिए गुरुदेव एक पुष्ट आलंबन बन चुके हैं। गुरुदेव ने पंच महाव्रत रूपी पर्वत के महाभार को बहुत अच्छी तरह से वहन कर रखा है, जिसकी शीतल छाया आज सम्पूर्ण चतुर्विध संघ को मिल रही है। कोई भी व्रत भावों में परिणित होने के पश्चात् जब क्रियारूप बनते हैं तो उसका फलितार्थ बहुत ही अद्‌भुत एवं चमत्कारिक होता है। अहिंसा व्रत, सत्यव्रत, अचौर्यव्रत, ब्रह्मचर्य व्रत, अपरिग्रह व्रत की महत्ता स्वयंसिद्ध है-

1. अहिंसा व्रतः- इस जगत में अहिंसा अमृतरूप है और प्राणी जगत का एक सुरक्षा कवच है। अहिंसा व्रत जीव जगत को एक धरातल पर लाकर खड़ा करता है। गुरुदेव के हृदय में आत्मवत् सर्वभूतेषु की उदात्त भावना सदैव ही हिलोरे लेती रहती है। अहिंसा से गुरुदेव के वात्सल्य का असीम विस्तार हो चुका है। उनका यह वात्सल्य किसी संघ-समाज तक सीमित नहीं है, वरन् इसके विस्तार ने समस्त जीव राशि को समेट रखा है। अहिंसक साधक के आभामंडल में आने पर जीव को अपनत्व की अनुभूति होती है। यही कारण है कि प्रत्येक नगर के संघ को यह लगता है कि गुरुदेव की हमारे संघ पर विशेष कृपा है। प्रत्येक भक्त को यह लगता है कि गुरुदेव का मुझ पर विशेष वात्सल्य है। सभी को गुरुदेव के प्रति अपनत्व की अनुभूति होती है। यह अहिंसा की फलश्रुति है।

ऋषि पतंजलि ने अहिंसा के बारे में अपने योग सूत्र में लिखा है-

'अहिंसाया वैरः नाशः'

अहिंसा से वैर का नाश होता है। जब तक अहिंसा का उदात्त रूप भावों में परिणत नहीं होता है, तब तक वैर की सूक्ष्म वृत्ति नष्ट नहीं होती है। जब तक वैर की वृत्ति नष्ट नहीं होती तब तक व्यक्ति शरणभूत नहीं बन सकता है। गुरुदेव के रोम-रोम में अहिंसा की भावना व्याप्त है। इसीलिए गुरुदेव सभी जीवों के लिए शरणभूत बने हुए हैं। संसार के संताप से संतृ प्राणी जब गुरुदेव की शरण में आते हैं, तो उन्हें एक शांति और विश्वास की प्राप्ति

होती है। गुरुदेव के पाद युगल जहाँ-जहाँ पड़ते हैं, वहाँ-वहाँ वैर-विरोध की ज्वालाएं समाप्त हो जाती हैं और शांति का सुखद जल प्रपात बहने लगता है। ऐसे कितने ही नगर एवं गाँव हैं, जहाँ गुरुदेव के आगमन से वर्षों के वैर विरोध समाप्त हुए और शांति की स्थापना हुई है।

सत्यव्रत - सत्य महाव्रत में गुरुदेव की निष्ठा अत्यन्त दृढ़ है। गुरुदेव सदैव सत्य वचन का ही प्रयोग करते हैं। गुरुदेव के मन-वचन-काया की प्रवृत्ति, सत्य अर्थ का बोध कराने वाली है। उनकी कथनी और करनी में समानता है। सत्य के प्रभाव से उन्हें कई उपलब्धियाँ प्रगट हुई हैं। सामवेद में सत्य की महिमा को बताते हुए लिखा है-'ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियम्'- अर्थात् सत्य की जिह्वा से मधुरस झरता है, उनकी वाणी सभी को प्रिय लगती है। गुरुदेव के वचन भी कर्णकुहर को अत्यन्त प्रिय लगते हैं। मन करता है बस सुनते रहें। किसी का उठने का मन नहीं करता है। घर जाने के बाद भी गुरुदेव की कही हुई बातें लोगों के कानों में गूंजती रहती हैं। वे बार-बार स्मृति में आकर प्रेरणा के साथ प्रसन्नता का अनुभव कराती हैं। गुरुदेव के वचनों की मधुरता से प्रभावित होकर ही उनके अध्ययन काल में एक पंडितजी ने उन्हें 'मधुकर' की उपमा से अलंकृत किया था, जो आज भी प्रसिद्ध है। यह सर्वविदित है कि गुरुदेव को वचन सिद्धि की विशेषता प्राप्त है। कितने ही लोगों ने इस बात को अपने जीवन में अनुभव किया है कि किस तरह गुरुदेव के मुख से निकले वचन अक्षरश: जीवन में परिणित होते हैं। यह वचन सिद्धी कैसे प्राप्त होती है ? इसका उत्तर है-यह सत्यमहाव्रत का प्रतिफल है।

शास्त्रों में लिखा है कि सत्य वक्ता की वाणी अमोघ हो जाती है। उसे वचन सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है। उसका अन्त:करण इतना निर्मल हो जाता है कि क्रियारूप होने वाली बात ही उसके मुख से निकलती है। योगदर्शन में सत्य के फल को बताते हुए 'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफला श्रमत्वम्' अर्थात् सत्य की दृढ़ स्थिति हो जाने पर वह क्रियाओं के फल का आश्रय बन जाता है। यानि आशीर्वाद एवं वरदान के रूप में क्रिया का फल प्रदान करने की शक्ति उसमें आ जाती है।

उदाहरण के रूप में एक बार निमाड़ क्षेत्र में पू. गुरुदेव को विहार के दौरान भील चोरों ने घेर लिया। वे जैसे ही अपने शस्त्र चलाने के लिए उद्यत हुए सभी के हाथ स्थंभित हो गए। साक्षी बने श्रावक एवं साधुगण आज भी

इस विस्मयकारी घटना को अपनी स्मृति में संजोए रखे हैं। यह सत्य व्रत का प्रभाव है। आवश्यक सूत्र एवं प्रश्न व्याकरण सूत्र में भी सत्य व्रत का संगान करते हुए लिखा है– 'सत्य वक्ता के लिए पानी तैरने योग्य हो जाता है। मार्ग भूलने पर यथास्थान पहुँचाने वाला कोई मार्गदर्शक मिल जाता है,अग्नि, चोर आदि उपद्रव भी उसे हानि नहीं पहुँचा सकते हैं। सत्य पालक में ऐसी दिव्य शक्ति आ जाती है कि स्वयं देव भी उसके समीप चले आते हैं।'

अचोर्यव्रत – साधु गृहत्यागी अकिंचन होते हैं। अचोर्यव्रत धारण करते समय सांसारिक वस्तुओं का परित्याग कर देते हैं। अतः चाहे वस्तु सार्वजनिक हो, उसका उपयोग आज्ञा के बिना नहीं कर सकते हैं। स्थूल रूप से इस व्रत के पालन में कोई कठिनाई नहीं लगती है किन्तु सूक्ष्मरूप से इसका पालन कठिन है। साधु समाज से लेता है और देने के नाम पर कह दे कि साधु को संसार से क्या वास्ता । हमें तो अपना कल्याण करना है। तो इस प्रकार का उदासीन और निरपेक्ष भाव भी कर्तव्य की चोरी है। पू. गुरुदेव आत्मनिष्ठ संत के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से आप्लावित हैं। प्राणीमात्र के हित की चिंता करते हैं। यदि संघ और समाज धर्म व न्याय के पथ से विचलित होते हैं तो पू. गुरुदेव सत्पथ प्रदर्शन के लिए सदैव कटिबद्ध रहते हैं। श्रमण संघ एवं श्रावक संघ के प्रत्येक सदस्य की समस्या का समाधान करने के लिए तत्पर रहते हैं। छोटे बालक से लेकर वयोवृद्ध तक सभी की पुकार सुनते हैं। अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव सजग रहते हैं।

मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर से समर्थ होने के बाद भी स्वार्थवश कार्य से इंकार करना यह शक्ति की चोरी है। पू. गुरुदेव ने संघ और समाज के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है। न कभी अपने स्वास्थ्य की चिंता की और न कभी आराम से दोस्ती की। शासन कार्य हेतु किसी संघ की विनती पर पू. गुरुदेव भीषण गर्मी और कड़कड़ाती ठंड की उपेक्षा कर, उग्र विहार कर यथासमय उपस्थित होते हैं। घंटों–घंटों स्थिर आसन में बैठकर धर्मसभाओं को निश्रा प्रदान करते हैं। चार घंटे से अधिक समय निंद्रा नहीं लेते हैं। वर्त्तमान में स्वास्थ्य की गिरती अवस्था में भी सारे कार्य यथावत निष्पादित कर रहे हैं। पू. गुरुदेव के इस अचोर्यव्रत का अद्भुत प्रभाव रहा है। गुरुदेव की थोड़ी सी प्रेरणा पर शासन एवं जनकल्याण के कार्यों हेतु करोड़ों की राशि

संग्रहित हो जाती है जैसे लक्ष्मी उनकी सेवा में उपस्थित हो। सिन्दुर प्रकरण ग्रन्थ में उल्लेख है–

तमभिलषति सिद्धस्तं वृणीते समृद्धिः
तमभिसरति कीर्तिमुञ्चते तं भवार्तिः।।

अर्थात् जो अदत्त ग्रहण नहीं करते हैं, सिद्धि स्वयं उसकी अभिलाषा करती है। समृद्धि उसे स्वीकार करती है, कीर्ति उसके पास आती है।

पू. गुरुदेव ने श्रावकों को ऐसे कार्य भी सौंपे जो उनके आर्थिक सामर्थ्य से बाहर थे। फिर भी वे कहते हैं कि हमें पता नहीं धन कैसे और कहाँ से आता है और गुरुदेव का फरमाया हुआ कार्य पूरा हो जाता है। योगदर्शन में कहा है– 'अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थाम्' अर्थात् जीवन में अस्तेय व्रत के प्रतिष्ठित हो जाने पर सर्वरत्न स्वयं ही उपस्थित होते हैं। यानि सारी सुविधाएँ एवं अनुकूलताएं सहज ही प्राप्त होती हैं।

ब्रह्मचर्य व्रत – ब्रह्मचर्य के अनेक अर्थ हैं। उनमें सबसे अधिक उत्कृष्ट अर्थ है ब्रह्म यानि आत्मा, चर्य अर्थात् विचरण करना। आत्मा में विचरण करना। इन्द्रिय संयम, मन–वचन–काया की पवित्रता आदि इसमें अन्तर्निहित ही हैं। आत्मा में विचरण करना इन सभी के बाद की भूमिका है। दुनिया चमत्कार के पीछे भागती है किन्तु सारे चमत्कार ब्रह्मचर्य व्रत में समाहित हैं। शास्त्रों में ब्रह्मचर्य का महात्म्य बताते हुए कहा गया है– 'ब्रह्मचारी साधक के मुखमंडल पर अलौकिक तेज रहता है। उस व्यक्ति के निकट रहने पर उनके दर्शन से अद्भुत आनंद की प्राप्ति होती है। लोग स्वतः ही उसकी ओर खींचे चले आते हैं। उसका आत्मविश्वास चरम सीमा पर होता है। संसार का कोई कार्य उसके लिए असंभव नहीं है।' ये सारी विशेषताएँ पू. गुरुदेव के जीवन में परिलक्षित होती हैं। गुरुदेव के पास आने पर लोगों को तीर्थस्थल पर स्नान की भांति परम शांति का अनुभव होता है। उनके पावन पवित्र आभामंडल में पहुंचकर लोगों की समस्याएँ और चिंताएं स्वतः दूर हो जाती हैं। भक्तों की लंबी कतार सदैव उपस्थित रहती है।

पू. गुरुदेव का आत्मज्ञान अत्यन्त परिपुष्ट है। बाह्य कार्यों का निष्पादन करते हुए भी देहभास से विमुक्त सदा आत्मभावों में विचरण करना उनकी एक निराली छटा है। पू. गुरुदेव सुगंध–दुर्गंध, रूप–कुरूप आदि पौद्गलिक भावों में समचित्त हैं। उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति अत्यन्त निर्मल आशय को लेकर होती है। अबोध जन इस बात को नहीं समझ पाते हैं। पूज्य गुरुदेव की स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र है।

पहली बार मिला व्यक्ति यदि सालों के लंबे अन्तराल के बाद भी मिलता है तब भी व्यक्ति का नाम, स्थल व अन्य बातें वे बता देते हैं। यह ब्रह्मचर्य का प्रभाव है। शास्त्रों में कहा है-ब्रह्मचर्य से ज्ञानतंतु शक्तिशाली बनते हैं, मस्तिष्क में शक्ति आती है जिससे स्मृति, मेधा, बुद्धि आदि विकसित होती हैं।

अपरिग्रह व्रत - साधु को बाह्य परिग्रह का त्याग होता है किन्तु हमारे यहाँ मूर्च्छा-आसक्ति को ही परिग्रह कहा गया है। बाह्य पदार्थों पर आसक्ति के कारण ही वे बाह्य परिग्रह कहलाते हैं। आसक्ति के कारण व्यक्ति अनेक संकल्प-विकल्पों से घिरा रहता है। चित्त अत्यन्त मलीन बना रहता है। ज्ञान की निर्मलता नहीं हो पाती है। अनासक्त दशा को प्राप्त किए बिना अपरिग्रह महाव्रत का सम्यक् पालन नहीं हो सकता है और न ही ज्ञान निर्मल हो पाता है। शास्त्रों में लिखा है अपरिग्रह की सम्यक् चेतना जाग्रत हो जाने पर व्यक्ति का चित्त शुद्ध और निर्मल होता है।उसे भूत-भविष्य का ज्ञान होने लगता है। अपरिग्रही व्यक्ति के मन में कोई इच्छा होती है तो बाहर में वैसे ही संयोग मिल जाते हैं। विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता है।

पू. गुरुदेव को भी घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। मेरे जीवन की एक घटना है। पू. गुरुदेव ने मेरी दीक्षा का समय अनाचक विजय मुहूर्त से बदलकर सुबह 7 बजे कर दिया। अचानक समय परिवर्तन को लेकर जनमानस में उहापोह था। सभी की जिज्ञासा उस समय शांत हुई जब पूर्व निर्धारित समय में उस पांडाल में एक बहुत बड़ा अग्निप्रकोप हुआ और बदलाव से जनहानि होने से बच गई। घटनाओं का पूर्वाभास होना कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है। साधक की आत्म विशुद्धि एवं ज्ञान का विशेष क्षयोपशम होने पर ही ऐसी प्राप्ति होती है। पू. गुरुदेव की अनासक्त दशा गजब की है। शिष्य परिवार एवं विशाल भक्त वर्ग के बीच रहते सर्वत्र वात्सल्य का भाव जरूर है किन्तु कहीं भी आसक्ति नजर नहीं आती है। संघ समाज के सारे कार्य करते हुए भी कहीं जुड़ाव नहीं है। अनासक्ति की धारा सतत प्रवाहित रहती है। इस अनासक्ति के कारण ही गुरुदेव का ज्ञान इतना निर्मल है।

जिस प्रकार कमल अपनी सुगंध से भंवरों को आकर्षित करता है वैसे ही पू. गुरुदेव अपने गुण सौरभ से जीवमात्र को आकर्षित करते हैं। कमल तो मात्र एक सरोवर को शोभित करता है किन्तु गुरुदेव तो सम्पूर्ण धरातल को सुशोभित कर रहे हैं।

जन्म दिवस पर प्रशस्ति

प्रतिष्ठा शिरोमणि

(डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय)

आप जिएं हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार।

सदियों में हस्तियाँ ऐसी भूतल पर आती हैं,
जिनके गुण सौरभ से जनता धन्य-धन्य बन जाती है।

जैन धर्म और संस्कृति के इतिहास की ऐसी ही एक हस्ती हैं–श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन त्रिस्तुतिक परम्परा के रत्नपुरुष, अनन्त आस्था के आयाम, ज्ञान के कुबेर, साहित्य के आदित्य, उत्कृष्ट धर्म प्रभावक, तारक तीर्थ प्रभावक, महान दार्शनिक, मनन के मनीषी, चिंतन के चितेरे, निष्काम कर्म के नंदीद्वीप, लोकमंगल के क्षीरसागर, अनन्त उपकारी, संघ शिरोमणि, सुविशाल गच्छाधिपति, शासन सम्राट राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर' का समग्र जीवन अनगिनत विलक्षण विशेषताओं का अविस्मरणीय दस्तावेज है, जिसने युग के केनवास पर अपनी उपस्थिति की प्रतिष्ठा विविध रूपों में, विभिन्न विधाओं से विभिन्न क्षेत्रों में की है।

धरु परिवार के ध्रुव , माँ पार्वतीजी एवं पिता स्वरूपजी के कुलदीपक– पेपराल के 'पूनमचंद' ने मात्र सत्रह वर्ष की अल्पायु में अपने दीक्षा गुरु आत्मान्वेषी, पीताम्बर विजेता श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीजी के वरद्हस्त से संयम कीर्ति का वरण किया। 30 वर्षों की अनवरत् श्रमण साधना के पश्चात् सन् 1984 में आचार्य पद पीठिका पर प्रतिष्ठित हुए। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकरदयालजी शर्मा ने आपश्री को 'राष्ट्रसंत' की उपाधि प्रदान की।

प्रतिष्ठांजन शलाकाएं प्रभु प्रतिमा की– कुशल शिल्पी द्वारा शिल्पित, निर्मित प्रतिमा में आचार्य भगवन्त शुभ दिन, शुभ घड़ी, शुभ मुहूर्त और शुभ वातावरण में शुभ विधि द्वारा चैतन्य स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा, अंजन शलाका करते हैं। इस महानतम् साधना प्रसूत, दैविक एवं अलौकिक कार्य से जिन प्रतिमा जिन सारिखी बनकर अद्भुत शक्तियों की निधि के रूप

में दर्शनीय, वंदनीय एवं पूज्यनीय बन जाती हैं। श्रद्धानिष्ठ परम भक्तगण प्रभु प्रतिमा में ही आगमों के आगम, वेदों के वेद, भागवद्गीता के भगवान के दर्शन पाकर निहाल हो जाते हैं। ज्योतिष सिद्ध परमपूज्य पारंगत श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने 250 से भी अधिक प्रतिष्ठांजन शलाका, मंगलकारी प्रतिष्ठापन कर जिनशासन की गौरव गरिमा में अभिवृद्धि की। आपश्री की पावन प्रेरणा एवं निर्देशन में 15 से अधिक तीर्थों का निर्माण हुआ जो शिल्प कला के भी अद्भुत एवं बेजोड़ कीर्तिस्तम्भ हैं।

प्रतिष्ठा गुरु मंदिरों की – प्रभु महावीर के शासन–अनुशास्ता, सुधर्मा स्वामी की पाट–परम्परा के प्रकाश स्तम्भ, 20वीं शताब्दी के महान ज्योतिर्धर, योगीश्वर, मुनिश्वर, सूरीश्वर, ध्यानेश्वर, सत्य के ग्राहक–प्रचारक–प्रसारक महान क्रियोद्धारक अभिधान–राजेन्द्र कोष के रचियता प्रातः स्मरणीय दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के षष्टम् पट्टधर वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने एकलव्य की भांति अपने दीक्षा गुरु दादागुरु की प्रबल भक्ति, प्रबल श्रद्धा से प्रेरित और प्रबल बहुमान से लक्षित होकर 50 से अधिक गुरु मंदिरों का निर्माण एवं लगभग 150 गुरु मंदिरों की प्रतिष्ठा कर जन–जन के मन में अपने दादा गुरु की यश पताका को फहराया है।

प्रतिष्ठा संयम की– संसार के दुखों से दग्ध, भव–भव की भटकन से त्रस्त आत्मावलोकन की मस्ती में मस्त, राग से विराग की ओर प्रशस्त 140 से अधिक मुमुक्षु भव्यात्माओं को संयम की सद्राह पर दीक्षित–प्रस्थित कर उन्हें आत्मानंद की अमृत बूंदों का वरदान देकर, पंच परमेष्ठी के प्रथम पद पर प्रतिष्ठित किया। दिव्य अमृत योग में दीक्षित प्रथम शिष्य श्री नित्यानंदजी म.सा. एवं प्रथम शिष्या साध्वी श्री पीयूषप्रभा श्रीजी म.सा. के शुभमुहूर्त में अमृतागमन से आपश्री के आज्ञानुवर्ती 26 श्रमण एवं 156 श्रमणी भगवंतों के विशाल परिवार से जिन शासन व समाज समृद्ध हुआ।

प्रतिष्ठा धर्म–तप–जप–उपधान और नवकार की– जो धारण किया जा सके वह धर्म है। धर्म एक द्वीप है, प्रतिष्ठा है, गति है, उत्तम शरण है, उत्तम मंगल है, एक प्रयोग है। पूज्यश्री ने मैत्री, प्रमोद, कारुण्य एवं माध्यस्थ भावना से भावित होकर देश, काल, परिस्थिति के अनुसार अब तक एक

लाख अस्सी हजार किलोमीटर से अधिक दूरी का विहार किया। प्रत्येक चातुर्मास में तप-जप-उपधान, प्रेरक प्रवचन आदि के माध्यम से धर्म की अविस्मरणीय, अवर्णनीय, अनुकरणीय एवं अभिनंदनीय प्रतिष्ठा की। आपश्री की पावन निश्रा में अब तक 20 से अधिक उपधान तप आराधनाओं में हजारों आत्माओं ने तप बोध, जप बोध एवं सूत्र बोध प्राप्त किया। 70 से अधिक छःरी पालक पैदल यात्रा संघों के माध्यम से ज्ञान, क्रिया, जप, तप से आध्यात्मिक के साथ सामाजिक सद्भावों की भी प्रतिष्ठा की।

पंच-मंगल-महाश्रुत रूप नवकार मंत्र, मंत्रों का राजा है। जैन शासन की समस्त आराधना, उपासना, साधना का आदि व अंत बिंदु नवकार मंत्र है। सर्वथा, सार्वभौमिक एवं संप्रदायातीत महापावन एवं महाप्रभावक नवकार मंत्र की नौ दिन की सामूहिक आराधना पूज्य श्री की परम पावन प्रेरणा, प्रयास एवं निश्रा में सन् 1961 से प्रारंभ होकर अब तक निरंतर जारी है।

प्रतिष्ठा सद्ज्ञान व सद्साहित्य की– साहित्य एवं संस्कृति समस्त विश्व की अमूल्य धरोहर होती है। सृजन के सूत्रधार, सरस्वती सुत पूज्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने संयम जीवन के प्रारंभिक काल से ही साहित्य सृजन का जो श्रीगणेश किया था वह आज तक अनवरत् जारी है। प्रखर प्रज्ञा, चिंतन-मनन के नवनीत से, पूज्यश्री ने जैन समाज को 280 से अधिक स्वलिखित, संकलित, संशोधित, अनुवादित आध्यात्मिक पुस्तकों की सौगात समर्पित की है। इसमें कथा साहित्य, नवकार साहित्य, मुक्तक साहित्य, उपदेशात्मक साहित्य, इतिहास, भूगोल, वास्तु साहित्य, पूर्णतया आत्मलक्ष्मी एवं तात्विक साहित्य, दोहा, सतसई साहित्य आदि प्रमुख हैं।

साहित्य की प्रत्येक विधा पर प्रज्ञा प्रक्षेपन समर्थ गुरुवर श्री सुर, ताल, सरगम और गीतों के गोविंद भी हैं। सुन्दरतम राग-रागिनियों से सज्जित-पूजा साहित्य, सहस्राधिक मधुरतम गेय स्तवनों, शताधिक सज्झायों, शताधिक चैत्यवंदनों एवं स्तुतियों की रचना कर आपश्री ने इन्हें जन-जन के मन-मस्तिष्क और जिव्हा पर प्रतिष्ठित किया। स्वरसाधना के महान साधक पूज्य गुरुदेवश्री ने साहित्यिक अनुराग के साथ संगीत साधना के रूप में भी जन-मन में अपनी संवेदनाओं को प्रतिष्ठित कर स्तवन गाने और गुनगुनाने की कला का प्रक्षाल किया।

'वंदनीय है साधना, वंदनीय है ज्ञान, आत्म साधना साधकर, गुरुवर बने महान।'

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की लोक कल्याणकारी भावना से आप्लावित आपश्री की प्रेरणा से ज्ञानांजन शलाका के रूप में कई शिक्षण संस्थाओं का शुभारंभ हुआ जो सफलतापूर्वक अध्यापन कार्यों में रत हैं। प्रज्ञापुरी अवन्तिका में 'श्री राजेन्द्र सूरि शताब्दी शोध संस्थान' के रूप में एक अनुमोदनीय विशाल ज्ञान प्रतिष्ठान की स्थापना भी हो चुकी है।

प्रतिष्ठा मौन साधना की – 'स्व' में गति एवं 'पर' से निवृत्ति का श्रेष्ठतम प्रावधान साधन 'मौन योग' है, जो स्वाध्याय, चिंतन, मनन, आत्माव-लोकन, आलेखन, ध्यान से अन्तर्जगत की अनुभूति को सहज बनाता है। समंदर की तरह सीमातीत, यशकीर्ति में शब्दातीत, क्षितिज से कल्पनातीत गुरुदेव श्री की मौन साधना और आत्मावलोकन के अद्‌भुत प्रयोगों ने उनकी नवकार आत्म शक्ति को मंथित किया और नवनीत के रूप में निरूपम उपहार 'श्री नवकार मंत्र- अड़सठ तीर्थ भाव यात्रा' का प्रतिष्ठापन किया।

प्रतिष्ठा कला-शिल्प की- शिल्पी पाषाण को संस्कारित कर उसे प्रतिमाकार प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार अनुष्ठान की गहराई से आत्मक्षितिज की ऊँचाई तक अक्षर और भाव जगत से लेकर समाज, राष्ट्र और वैश्विक आयाम तक श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी के विश्वकर्मा स्वरूप की रवि रश्मियों ने स्वयं अपने इन्द्रधनुषी और समर्थ व्यक्तित्व एवं कृतित्व को गढ़ा है। अपने शिष्य-शिष्या परिवार को, समाज को, संगठनों के साथ भक्तों के जीवन को पू. जयन्त बावजी ने गढ़ा है। भक्तों के रोम-रोम में आपश्री का शिल्पी स्वरूप निनादित होता प्रतीत होता है।

साधना पथ के अक्षय पायदान पर पूज्यश्री द्वारा प्रेरित एवं निर्देशित नयनरम्य भव्यातिभव्य मंदिरों की नक्काशियाँ और वास्तुशिल्प देखकर अहोभाव से भावित मन, नत मस्तक हो जाता है। कला और शिल्प की अद्‌भुत कृति रूप में मोहनखेड़ा स्थित म्यूजियम नवखण्डों का नायाब खजाना है जो समग्र जैन दर्शन, तत्व, धर्म और इतिहास की कीर्ति पताका के रूप में प्रतिष्ठित है, आपश्री के शिल्पी स्वरूप की गौरव गाथा का भी साकार प्रतिबिंब है।

प्रतिष्ठा गुर्वाज्ञा की – ज्ञान, ध्यान,

तप, जप, संयम, गुरु भक्ति व श्रुत भक्ति के महान साधक पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने अपने अन्त समय में अपने अन्तेवासी शिष्य मुनि श्री जयन्तविजयजी म.सा. को अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं 'शाश्वत धर्म' पत्रिका का कार्यभार विश्वासपूर्वक सौंपा था। पूज्यश्री ने तब से लेकर आज तक अपने गुरुदेव द्वारा प्रदत्त आज्ञा एवं दायित्व का निर्वाहन कुशलतापूर्वक किया है। प्रबल पुरुषार्थ द्वारा परिषद् में प्राण भरकर पचपन वर्ष के कालक्रम में संगठन, सुधार, धार्मिक शिक्षा, आर्थिक सहयोग की प्रवृत्तियों को रचनात्मक दिशा प्रदान की। मातृशक्ति, युवाशक्ति की सहभागिता से समाज हित साधन के रूप में परिषद् एवं शाश्वत धर्म पत्रिका को हिमालयी ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। धार्मिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ 'यतीन्द्र जयन्त विद्यापीठ 'के रूप में परीक्षा बोर्ड का गठन भी किया गया जो सफलतापूर्वक संचालित है।

प्रतिष्ठा समर्थ व्यक्तित्व की- मान-सम्मान-पदवी-उपाधि से गुरुवर सदैव निर्मोही रहे। किन्तु जैन साधना के नये आयामों के अन्वेषक और संस्कृति के नव धरातल के कोलम्बस पूज्यश्री को समाज ने समय-समय पर कविभूषण, साहित्य मनीषी, वचनसिद्ध आचार्य, युग प्रभावक, हृदय सम्राट, धर्म चक्रवर्ती, शासन संचालक, संघ एकता के शिल्पी, दीक्षा दानेश्वर, संघ-समर्थ अनुशास्ता, राष्ट्रसंत, प्रतिष्ठा शिरोमणि आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया, जो आपश्री के महानतम व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रमाण है।

प्रतिष्ठा स्वयं की भक्तों के अन्तर्मन में- छः दशक से अधिक समय की संयम साधना, धर्म प्रभावना, साहित्य सृजन के साथ बड़ी संख्या में जिन मंदिर, गुरु मंदिर, धर्मशाला, भोजनशाला, गौशाला, विद्यालय, चिकित्सालय, शोध संस्थान, म्यूजियम, कीर्ति स्तम्भ, विस्तृत परिषद् परिवार , शाश्वत धर्म पत्रिका के माध्यम से आपश्री भक्तों के अन्तर्मन में प्रतिष्ठित हैं। स्नेहभासित वासक्षेप, आशीर्वाद से भी भक्तों के हृदय सिंहासन पर भी आपश्री प्रतिष्ठित हैं। यह अनुभव भी अमिट, शब्दातीत है।

'कैसे चरण पखारूँ आपके, कैसे करूँ नमन।
जितना कोकिल आपको खोजे, उतना खोता जाए मन।।'

सच है-असीम को सीमा में बांधना संभव नहीं है।

अस्तु आध्यात्मिक चेतना के ऊर्ध्वकरण के लिए, नैतिक मूल्यों के जागरण के लिए, शाश्वत मूल्यों के प्रतिष्ठापन के लिए, सर्वे भवन्तु सुखिन: की भावना अनुरूप मानवता व प्राणीमात्र के हित के लिए जो प्रकाश स्तम्भ आपश्री ने प्रतिष्ठित किए हैं, जैन संस्कृति को जो नया रूप, नया रंग, नया परिवेश दिया है, उससे प्रभावित होकर पूना जैन श्रीसंघ ने आपश्री को 'प्रतिष्ठा शिरोमणि' की उपाधि से प्रशस्त, अलंकृत किया है। इस अलंकरण के साथ ही दीर्घकाल तक आपश्री के तपस्वी, मनस्वी, यशस्वी, ज्ञानी व्यक्तित्व की शीतल जगमग ज्योति जैन समाज को निरन्तर प्रगति के पथ पर प्रशस्त करती रहें, ऐसी मंगल कामना की।

'ओ अमृत के रूप, कर दिया तुमने क्षर को अक्षर,

धन्य हो गया तुम्हें प्रकट कर, यह भव का रत्नाकर।।'

समझने योग्य-अपनी त्रुटियाँ

व्यवहार योग्य-सहनशीलता

स्मरण करने योग्य-हरिनाम

करने योग्य-दूसरों की भलाई

ग्रहण करने योग्य-इन्सानियत

लघुकथा

भगवान महावीर और भविष्य गोशालक

एक बार भगवान महावीर और उनका एक शिष्य गोशालक एक गांव से गुजर रहे थे। भगवान गोशालक को समझा रहे थे कि जितना ही तुम इस अस्तित्व, इस सृष्टि के प्रति उत्तरदायी होंगे उतना ही तुम अपनी आत्मा के निकट आओगे। उसी समय मार्ग में एक छोटा सा पौधा दिखाई दिया। गोशालक ने उस पौधे को उखाड़कर फेंक दिया। भगवान ने कहा तुम्हारा यह काम गैरजिम्मेवारी का है, किंतु तुम अस्तित्व का नाश नहीं कर सकते। गोशालक ने कहा कि मैंने इस पौधे को नष्ट कर दिया है। अस्तित्व मेरा क्या कर लेगा। फिर दोनों भिक्षा मांगने गांव के अंदर चले गये। जब वे भिक्षा मांग कर उसी मार्ग पर लौटे तो देखा वह पौधा फिर से रोपित हो गया है। जब वे भिक्षा मांगने गये थे उसी बीच तीव्र हवा चली और वर्षा हुई। हवा और वर्षा के सम्मिलित प्रभाव से वह पौधा फिर जमीन पर लग गया। भगवान ने कहा जितना ही तुम अस्तित्व के खिलाफ जाते हो उतना ही तुम उससे अलग होते जाते हो। अंततः अस्तित्व का कुछ नहीं बिगड़ेगा। यह पौधा छोटा है किंतु यह एक विशाल अस्तित्व एक परम विशाल शक्ति का एक अंग है। अब से हमारा और तुम्हारा रास्ता एक नहीं हो सकता, क्योंकि तुम अस्तित्व के प्रति अपने आपको उत्तरदायी नहीं समझते हो और अकारण हिंसा का मार्ग अपनाते हो।

आज कल जब हम पर्यावरण की सुरक्षा की बात करते हैं तब यह सोचने की बात है कि वह सोच भगवान महावीर की शिक्षाओं में इतने प्राचीन काल से निहित है। भगवान महावीर का काल ईसा पूर्व छठी शताब्दी में माना जाता है। वे भगवान बुद्ध के समकालीन किंतु अवस्था में काफी बड़े थे।

गुरु भक्ति महात्म्य

संकलन–साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्री

'शरणं भव्य जीवानां, संसारातविमहागने।
मुक्त्वा गुरु अन्यः नास्ति न भविष्यति नापि चाभवत। '

अर्थात् भयंकर संसार रूपी जंगल में भव्य जीवों को गुरु के बिना अन्य कोई शरणरूप न हुआ है, न है और न होगा। जैसे करुणाशील वैद्य, रोगी को दवाई देता है, उसी प्रकार भवरोग से पीड़ित जनों को गुरु धर्मरूपी दवाई देते हैं।

गुरु का माहात्म्य अचिन्त्य है। गुरु के प्रति एकलव्य की तरह श्रद्धा और भक्ति भाव रखने वाले शिष्यों को साधना का फल अवश्य मिलता है। इसके विपरीत गुरु भक्ति के भाव के बिना गौशालक जैसे कष्टों को सहन करना पड़ता है।

जीवन को सफल बनाने के लिए शिष्य को स्वयं के हृदय में गुरु के प्रति भक्ति भाव पत्थर पर खींची लकीर के समान स्थिर रखना चाहिए। मिट्टी में अंगुली से खींची रेखा आसानी से मिट सकती है। कागज पर पेन, पेंसिल से खींची लकीर भी रबर या दूसरे साधनों से मिटा सकते हैं। इसके विपरीत लकड़ी पर धातु से उकेरी रेखा, शिला पर खींची रेखा चिर स्थायी रहती हैं। इसी तरह शिष्य के हृदय में गुरु भक्ति के भाव आजन्म बने रहते हैं। गुरु का देवलोक गमन होने पर भी उनके प्रति भक्ति भाव बना रहता है। श्री वीरप्रभु के शिष्य सुनक्षत्र साधु के हृदय में गुरुभक्ति के भाव वज्र से उकेरित रेखा के समान थे। हमें भी जीवन में गुरु के प्रति भक्ति भाव को ही मुख्य बनाना चाहिए। क्योंकि गुरु की सेवा, गुरु की भक्ति ही मोक्ष का प्रथम साधन है। इसके बिना ज्ञानादि गुणों की प्राप्ति नहीं होती है।

जैसे कुछ क्रियाएं जिनमें कायक्लेश के अतिरिक्त कुछ फल नहीं मिलता विडंबना कहलाती हैं, उसी तरह गुरु भक्ति के भाव के बिना शिष्य का जीवन भी विडंबना रूप है। भाव रहित शिष्य के जीवन में उच्चतम साधना संभव नहीं है। व्यवहार से उच्च कोटि का साधक दिखाने पर भी निश्चय दृष्टि में वह विराधक ही है। गुरु भक्ति की भावना के बिना की गई सभी आराधनाएं, साधनाएं भी विडंबना रूप और संसार का भ्रमण कराने वाली

हैं। चाहे गुरुभक्ति की भावना के बिना शिष्य बहुश्रुत वाला हो, विकट तप करने वाला हो, भक्ति करने वाला हो, गजब की शासन प्रभावना करता हो, निरतिचार चारित्र पालता हो, बहुत जीवों को उपदेश देकर धर्म प्राप्ति करवाता हो, शास्त्र की रचना, अद्भुत काव्य रचना करता हो, ज्ञान में कुशल, ज्योतिष का जानकार हो, विद्यासिद्ध, योग सिद्ध हो, ये सभी विडंबना रूप ही हैं। केवल गुरुभक्ति की भावना के साथ की गई आराधना-साधना ही संसार से पार उतारने वाली हैं।

संसाररूपी जंगल में परिभ्रमण करता हुआ जीव असंख्य कष्टों को सहन करते, कर्म निर्जरा कर मनुष्य भव को प्राप्त करता है। मनुष्य भव में भी अति दुर्लभ जिनशासन प्राप्त करता है। उसमें भी मुश्किल से अच्छे गुरु का योग मिलता है, उनसे प्रवचन सुनता है, संसार से वैराग्य प्राप्त करता है, चारित्र ग्रहण करता है, अनेक प्रकार की साधनाएं करता है, बहुत से शिष्य एवं गुरु बनाता है, आचार्य पदवी प्राप्त करता है, चारों ओर कीर्ति एवं प्रभाव का संचार करता है। लेकिन यदि उसके हृदय में गुरु के प्रति बहुमान का भाव न हो, गुरु भक्ति के भाव न हों तो ये सारी उपलब्धियाँ भी विडंबनारूप ही हैं, क्योंकि इतनी मेहनत करने पर भी उसे कोई फल नहीं मिलता है। वह फिर से भवभ्रमण की राह ग्रहण करता है। वैसे ही जैसे यदि कोई व्यक्ति भोजन बनाने की सभी सामग्री किसी तरह एकत्रित कर ले किन्तु अग्नि प्रगट ना हो तो भोजन नहीं बनेगा। ऐसे में सामग्री इकट्ठा करने की मेहनत उसके लिए विडंबनारूप ही हैं, उसका कुछ भी फल उसे नहीं मिलता है। इसी तरह सभी प्रकार की आराधना-साधना करने पर भी गुरुभक्ति के भाव के बिना शिष्य मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता है।

प्रेरणा के पुष्प

* प्रभु की उपासना ऋद्धि-सिद्धि के लिए नहीं पर हृदय शुद्धि के लिए करो।
* परिचित का प्रेम से और अपरिचित का मुस्कान से स्वागत करो तो आपका घर बनेगा।
* हजारों गुण प्राप्त करना आसान है, पर एक दोष दूर करना कठिन हैं।
* जिसकी भाषा में सभ्यता हैं, उसके जीवन में भव्यता होती हैं।
* संसार में अभागा वह नहीं, जिसके पास माया नहीं, पर संसार में अभागा वह हैं, जिस पर गुरु की छाया नहीं।

प्रमोद सुधाजी

पाती साहित्य मनीषी के नाम

(श्री अशोक कुमार नांदेचा, नीमच)

हे प्रज्ञा पुरुष! साहित्य मनीषी! आपकी लेखनी को प्रणाम। आपकी वाङ्मयता को नमन। किन शब्दों में आपके गुणों का वर्णन करूँ, मेरे पास शब्द नहीं हैं। आपकी कलम से रचित शब्दों में अद्वितीय आकर्षण है। हर शब्द पूर्णिमा के शशि समान है शीतलता प्रदान करता है। सुविशाल त्रिस्तुतिक गच्छाधिपति आचार्य भगवन् श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चरणों में मेरा वंदन। आपके द्वारा रचित नवकार गीतों में पंच परमेष्ठि भगवंतों की सामीप्यता का अनुभव पाता हूँ, चैत्यवंदनों में चौबीस तीर्थंकर परमात्मा के दर्शन परिलक्षित होते हैं। स्तुतियाँ सुनकर मन भाव विभोर हो जाता है। विहार करते समय आपके मुखारविंद से गाए भक्ति गीत इतने रसपूर्ण, वाणी माधुर्यता लिए होते हैं कि मीलों तक की दूरी कब तय हो जाती है, समय का पता ही नहीं चलता। उग्र विहार करते हुए भी आपकी कलम शब्दों की रचना करती रहती है। मैंने सदैव आपश्री को चलते ही देखा है।

हे गच्छाधिपति, गच्छ की मर्यादाओं का पालन करने में अच्छी तरह से समर्थ, मेरे गुरुवर आपने त्रिस्तुतिक मर्यादाओं को जिस तरह संजोया, संवारा और हमें दिया है, वह अतुलनीय है। हे मर्यादा पुरुष! आप समर्थ हैं सबको साथ लेकर चलने में। हे एकता के शिल्पी! आपने संघों की विषमताओं को एकता की माला में पिरोया है, बिछुड़ों को मिलाया है। उन्हें माला रूप गूंथकर स्नेहरूपी रस बरसाया है। आपको नमन।

हे वाणी के पुरोधा! आपकी जुबाँ से शब्द बनकर 'शाश्वत धर्म' में उकरते हैं जिनकी लयबद्धता अनुपम है जो सामायिक लेकर स्वाध्याय करने में सहायक है। आत्मा से परमात्मा बनने तक का गूढ़ चिंतन आपके लेखों में समावेश पाता है। कषायों से बचने के विभिन्न उदाहरणों से आलोकित आपकी शैली में एक-एक शब्द अनमोल है, जिन्हें पढ़ने से आत्मा का स्वरूप दृष्टिगत होने लगता है।

हे जन-जन के वंदनीय! श्री राजेन्द्र, श्री यतीन्द्र जैसे महान गुरुओं की पाट परम्परा में सुशोभित सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश भरी

सभा में सहस्त्रों की जनमेदिनी के बीच मैंने आपको दूर होते हुए भी अत्यन्त निकट पाया है। किन शब्दों में वर्णन करूँ सूझ नहीं पड़ता। मोहनखेड़ा तीर्थ की पावन भूमि का दृश्य सदैव मेरी आँखों के सामने होता है। कोई माने या न माने मैंने आपका अलौकिक स्वरूप देखा है। पाट पर विराजे आपकी छद्मस्थ अरिहंत अवस्था, मस्तक के पीछे अलौकिक प्रकाश, चेहरे की गंभीरता, वाणी की ओजस्विता, हजारों हजार की जनमेदिनी में और चारों ओर शांत निरवता में भी मैंने आपको श्रवण किया है।

हे मेरे समकित दाता मेरा आपसे विनय है कि मैं चाहे कितना ही दूर रहूँ, मेरे हृदय कमल में आपका वास भव-भवान्तर तक बना रहे। प्रमादवश, कषायों के कारण यदि विपरीत गति में जाऊँ तो मुझे वहाँ से बाहर निकालना मेरे गुरुवर। हे सत्य पथ प्रदर्शक आपका हाथ सदा मेरे सिर पर रहे यही विनती है, बस यही प्रार्थना है।

''जय जिनेन्द्र, जय राजेन्द्र
जय जयन्त, जय मधुकर''

समुद्र पाल

भगवान महावीर स्वामी के एक शिष्य श्रावक का नाम था 'पालित'। वह नवतत्वों का ज्ञाता था। अंग देश की राजधानी चम्पानगरी का निवासी था। एक बार समुद्री राह से जहाजों में माल भरकर 'पिहुण्ड' नगर पहुँचा। व्यापार किया। उनकी न्याय नीति प्रामाणिकता व व्यवहार कुशलता पर प्रसन्न होकर वहाँ के एक श्रेष्ठी ने अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।

कुछ महीनों वहीं रहे। फिर देश को लौटने लगे तभी सुमद्र राह में ही उनकी पत्नी को पुत्र हुआ, जिसका नाम 'समुद्र पाल' रखा । 'रुपिणी' नामक सुन्दर कन्या से उसका विवाह किया उनके पिता ने।

एक दिन भवन के गवाक्ष में बैठे नगर दृश्य देख रहे थे। उनकी दृष्टि पडी वध्य-स्थान की ओर ले जाते हुए एक हथकडी-बेडी पडे हुए अपराधी पर ।

समुद्रपाल चिंतन करने लगे-जो जीव जैसा कर्म करता है-अच्छा या बुरा उसको उसका विपाक(फल) मिलता ही है । कर्म बन्धन व कषायों के कारण जीव संसार में सुख और दुःख पाता है। इस दलदल से बचने का उपाय यदि कोई है तो वह-श्रमणत्व। विषय भोगों और कषायों के कीचड में तो अधिकाधिक भटकना ही पडता है। पाप करने पर दुःख वेदना मिलती है और संवर व संयम धर्म की आराधना करने पर असीम सुख। क्षणिक सुख की साधना क्षणिक है किंतु चिरसुख की प्राप्ति के लिए महान आराधना-उपासना की आवश्यकता है, इसके लिए सांसारिक भोगवासना से हटकर योग में जुड़ना होगा ।

इस तरह का चिंतन करते हुए समुद्रपाल का मन संवेग-वैराग्य से सराबोर हो गया । माता-पिता की अनुमति से वे दीक्षित हुवे ।

गुरु दक्षिणा का समय

(श्री पद्मा सेठ, राणापुर)

'गुरुदेव' कितना प्यारा शब्द है। अपनत्व जुड़े एक शब्द ने न जाने कितनों को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। जरूरत है तो बस इस शब्द के प्रति आस्था रखने की, इसके प्रति समर्पण भाव को रखने की। गुरु का स्थान ईश्वर के समकक्ष ही नहीं उनसे बढ़कर माना गया है। मेरी नजर में मेरे गुरुदेव साक्षात् भगवान हैं। मेरे गुरुदेव हैं वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.।

हमने ईश्वर को कभी नहीं देखा किंतु हम भगवान की प्रतिमा देखकर ही इतने आनंदित हो जाते हैं कि अपना सारा दुःख दर्द भूल बैठते हैं। वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. भी साक्षात ईश्वररूप प्रतीत होते हैं।

प्राचीनकाल में गुरुकुल पद्धति के साथ गुरु दक्षिणा की परंपरा भी प्रचलन में थी। बिना गुरु दक्षिणा के शिक्षा अधूरी मानी जाती थी। आज हमारे गुरुदेव हमसे गुरुदक्षिणा नहीं मांगते हैं परन्तु सच्चे श्रावक होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने गुरु को गुरुदक्षिणा प्रदान करें।

गुरु दक्षिणा के रूप में हम सभी श्रावकगण यह प्रतिज्ञा करें कि वर्ष में सिर्फ एक या दो बार ही अपने गुरुदेव से सिर में वासक्षेप डलवाएंगे। प्रति व्यक्ति यदि माह में एक बार भी गुरुदेव के दर्शन उपरांत वासक्षेप डलवाएं तो वर्ष में 12 बार यह क्रिया संपादित होती है। सबको बार-2 वासक्षेप करते गुरुदेव के हाथों में दर्द होने लगता है। हमारी आकांक्षा सही होने पर भी हमें अपने मन को इस बात के लिए राजी करना होगा। एक बात और कि जब भी हम उनके दर्शन करने जाएं तब इधर-उधर की बातें न कर उनके स्वास्थ्य की सुख-साता पूछें।

'भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें करुणा रसधार नहीं।
हृदय नहीं वो पत्थर है,
जिसमें गुरु के प्रति प्यार नहीं।।'

आज हमारे गुरुदेव के हृदय में सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक संघ समाया हुआ है। कहाँ का संघ किस तरह चल रहा है? कहाँ पर मंदिर या उपाश्रय बनवाना है? कहाँ प्रतिष्ठा होना है? कहाँ किन साधु भगवंत या साध्वीजी म.सा. का चातुर्मास होना है? विहार कर किस तरफ जाना है? आदि बातें गुरुदेव के

मन में रहती हैं। इन सभी बातों का सभी जगह गुरुदेव ध्यान रखते हैं। आज जबकि एक परिवार चलाना भी किसी व्यक्ति के लिए मुश्किल हो जाता है, ऐसे में पूरा त्रिस्तुतिक संघ का संचालन बहुत बड़ी बात है, जिसका सामर्थ्य हमारे गुरुदेव में है।

ऐसे में हम सभी गुरुभक्तों का यह कर्त्तव्य बनता है कि हम आपश्री के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। हमारे सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक संघ की अमूल्य धरोहर को सहेजे रखना हमारा परम धर्म है। मेरा आप सभी गुरुभक्तों से निवेदन है कि अपने गुरु को गुरुदक्षिणा में ऐसा प्रण लें कि अब हम उन्हें तकलीफ हो ऐसा काम कभी नहीं करेंगे।

गुरुदेव आप स्वनाम धन्य हो,
आप सचमुच ही दिव्य शक्ति हो।
पुरुषार्थ की एक अमिट ज्योति हो,
जगत में जागरण की अभिव्यक्ति

सच्ची कमाई, सद्‌गुणों का संग्रह

संसार में ऐसा कोई नहीं है जिसमें कोई दोष न हो अथवा जिससे कभी गलती न हुई हो, किसी की गलती देखकर बौखलाओ मत और न उसका बुरा चाहो।

दूसरों को सीख देना मत सीखो । अपनी सीख मान कर उसके अनुसार बन जाना सीखो । जो सिखाते हैं, खुद नहीं सीखते । सीख के अनुसार नहीं चलते, वे अपने आप को और जगत को भी धोखा देते हैं।

सच्ची कमाई है, उत्तम से उत्तम सद्‌गुणों का संग्रह। संसार का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी सद्‌गुण से संपन्न है, परंतु आत्मगौरव का गुण मनुष्यों के लिए सबसे बड़ी देन है। इस गुण से विभूषित प्रत्येक प्राणी को, संसार के समस्त जीवों को अपनी आत्मा की भांति ही देखना चाहिए। सदैव उसकी ऐसी भावना रहे कि उसके मन, वचन एवं कार्य किसी से भी जगत के किसी जीव को क्लेश न हो। ऐसी प्रकृतिवाला अंत में मोक्ष को पाता है।

यह विचार छोड़ दो कि धमकाए बिना अथवा बिना छल-कपट के तुम्हारे मित्र, साथी, स्त्री-बच्चे या नौकर-चाकर बिगड़ जाएंगे। सच्ची बात तो इससे बिलकुल उलटी है। प्रेम, सहानुभूति, सम्मान, मधुरवचन, त्याग और निश्छल सत्य के व्यवहार से ही तुम किसी को अपना बना सकते हो ।

महत्वपूर्ण होना अच्छा है, किन्तु अच्छा होना अधिक महत्वपूर्ण है।

ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति-3

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

जैन प्रश्नोत्तर ग्रंथों में भी उपलदेव को उत्पल कंवार लिखा है। खोज के आधार पर कहा जाता है कि विपत्ति के टल जाने पर उपलराज पुनः आबू को लौट गए तथा वहाँ के राजा बने थे। मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात में उपलदेव का कोई साल-संवत् तो नहीं बताया मगर उपलदेव को धारा नगरी के राजा भोज की सातवीं पुश्त माना है।

कई इतिहासकार व पुरातत्व विद्वानों ने उपलदेव को ही परमार माना। मारवाड़ के परमारों की श्रृंखलाबद्ध वंशावलियाँ उपलदेव से मिलती हैं। परमारों का मूल स्थान भी आबू ही था। लेकिन कुछ इतिहासकार व पुरातत्व विद्वान उपलदेव के परमार होने पर सहमत नहीं हैं।

ओसवाल जाति की उत्पत्ति के संबंध में कहा गया है कि 'उपकेशगच्छ चरित्र' और 'उपकेशगच्छ पट्टावली' को यदि माना जाए तो वीर निर्वाण संवत् 70 में अर्थात् विक्रम संवत् से करीब 400 वर्ष पूर्व भिनमाल के राजा भीमसेन के पुत्र उपलदेव ने ओसियां नगरी बसाई और भगवान पार्श्वनाथ के सातवें पट्टधर उपकेशगच्छीय आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिजी ने राजा को प्रतिबोध देकर जैनधर्म की दीक्षा दी और महाजन वंश की स्थापना की।

परम्परागत और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वीर संवत् 70 में ओसियां में आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिजी ने अनेक क्षत्रियों को प्रतिबोध देकर जैन धर्म में दीक्षित कर महाजनवंश की नींव रखी और उसी समय महाजन वंश के 18 गोत्रों की भी नींव पड़ी थी। उद्भव से लेकर आज तक अनेक गौत्र बनते गए। वर्तमान में ओसवालों के गौत्रों की संख्या ठीक-ठीक नहीं बताई जा सकती है। जैन सम्प्रदाय शिक्षा के अनुसार यह संख्या जहाँ 440 है, वहीं महाजनवंश मुक्तावली अनुसार यह संख्या 609 है। एक सेवक द्वारा की गई गिनती के आधार पर यह संख्या 1444 है।

भगवान श्री महावीर स्वामी के निर्वाण के 52 वर्ष पीछे श्री रत्नप्रभसूरिजी आचार्य पद पर पदासीन हुए और वे ओसियां पधारे। इन्होंने एक लाख अस्सी हजार राजकुलों को

प्रतिबोधित किया और इस प्रकार ओसिया नगरी में ओसवाल वंश की स्थापना की।

कुछ विद्वानों ने यह अटकल लगाई कि ओसवंश के संस्थापक रत्नप्रभसूरि (प्रथम) न होकर अंतिम रत्नप्रभसूरि हैं। आद्य रत्नप्रभसूरि और अंतिम रत्नप्रभसूरि के बीच 900 वर्षों का अन्तर है। अंतिम रत्नप्रभसूरि के समय के अनेक ग्रंथ तो आज मिलते हैं, किन्तु किसी भी ग्रन्थ या शिलालेख से यह पता नहीं चलता कि विक्रम की पांचवी शताब्दी में अंतिम रत्नप्रभसूरि ने ओसवाल वंश की स्थापना की हो।

कोरंटपुर में हस्तलिखित पट्टावली मिली थी जिसमें यह उल्लेखित है कि वीर निर्वाण संवत् 70 में आचार्य श्री रत्नप्रभसूरि जी उपकेशपुर पधारे थे और उन्होंने उपकेशपुर के उपलदेव और मंत्री ऊहड़ और सवा लाख क्षत्रियों को जैन धर्म का श्रावक बनाया। इस नगर में वीर निर्वाण से 70 वें वर्ष में आचार्यश्री रत्नप्रभ सूरिजी द्वारा भगवान महावीर मंदिर में प्रतिष्ठित मूर्ति आज पर्यन्त विद्यमान है।

एशियाटिक सोसायटी में उपलब्ध कवित्तों में ओसवाल वंश प्रतिष्ठापक श्री रत्नप्रभसूरिजी का स्पष्टतः भगवान महावीर के निर्वाण के 42 वर्ष बाद आचार्य पद पर आसीन होना एवं उसके 18 वर्ष बाद ओसिया पधारने का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि उस समय श्री रत्नप्रभसूरिजी ने चार लाख चौरासी हजार राजपूतों को प्रतिबोध दिया था।

ओसवाल जाति को राजपूतों की विरासत मिली। इसी कारण राजस्थान के प्रत्येक क्षेत्र में भाटों ने अपने बहियों में ओसवाल जाति के विभिन्न गौत्रों की वंशावलियों को समय-समय पर अंकित करने का कार्य किया है। इन बहियों में भाटों ने ओसवंश की उद्‌भव कथा अंकित की है। -क्रमशः

---

* पुण्योदय होता है तब साधन व्यक्ति के पीछे भागते हैं और पाप का उदय होता हैं तब व्यक्ति साधनों के पीछे भागता हैं।
* दूध में से नवनीत निकालनेवाले को मानव कहते हैं, पत्थर में से मोती निकालनेवाले को जादूगर कहते हैं, तो हृदय से वैर निकालनेवाले को संत कहते हैं।
* जीना है गर स्नेह से तो दूर रहो संदेह से।
* आलोचना में रहा लोचन जब तक दूसरों पर टिका रहता है, जब तक जीवन मलिन ही बना रहता है । यही लोचन जब अपने ऊपर टिक जाता है, तो चमत्कार घडना शुरू हो जाता है।

भाव श्रावक-श्राविका का भाव जगत

(मुनिश्री संयमरत्न विजयजी म.सा.)

आचार्यदेव श्रीमद् शांतिसूरिजी म.सा. ने धर्मरत्न प्रकरण के प्रारंभ में धर्म के अधिकारी बनने के लिए अक्षुद्रतादि 21 गुण बताए हैं। पश्चात् श्रावक के क्रियागत छः लक्षण और भावगत 17 गुण बताए हैं।

भावगत 17 गुणों के उल्लेख में -

1. **स्त्री/ पुरुष के वशीभूत होना :-** भाव श्रावक-श्राविका के मन में हमेशा यही भावना रहती है कि कब समय आये और मैं यावज्जीव ब्रह्मचर्य का पालन करूँ। भाव श्रावक स्त्री के वश में और भाव श्राविका पुरुष के वशीभूत नहीं होते।

2. **पांच इन्द्रियों को संयम में रखना :-** इन्द्रियाँ घोड़े की तरह हैं, जिन पर सम्यग् ज्ञान की लगाम न रखने पर ये आत्मा को दुर्गति में ले जाए बिना नहीं रहती हैं। भाव श्रावक-श्राविका स्वयं के आँख, कान, नाक, जीभ और चमड़ी पर नियंत्रण रखते हैं। पंचेन्द्रिय के विषय-शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श से दूर रखते हैं।

3. **अर्थ को अनर्थकारी मानता है:-** वह अर्थ जिसे प्राप्त करने के लिए जीव, जगत के समस्त पापों को करने के लिए भी तैयार हो जाता है, ऐसे अर्थ को भाव श्रावक अनर्थकारी मानते हैं। भाव श्रावक संतोषी होता है, इसलिए धर्म को छोड़कर कभी भी अर्थ धन का उपार्जन नहीं करता।

4. **संसार को असार मानते हैं:-** जन्म, जरा, मृत्यु, रोग, शोक, ईष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग से भरपूर यह संसार सम्पूर्ण असार है। जहाँ कण भर सुख हो-मण भर दुख हो, ऐसे संसार में भाव श्रावक-श्राविका आनंद नहीं मनाते।

5. **विषयों को विष से भी खराब मानते हैं:-** विषय शब्द में ही विष अंतर्निहित है। भाव श्रावक-श्राविका ऐसा ही समझते हैं कि विष तो मात्र एक भव को ही मारता है, लेकिन विषय तो भवों-भव को मारने वाला है इसलिये संसार में रहते हुए भी संयम पूर्ण जीवन जीता है।

6. **आरंभ से भयभीत होता है:-** आरंभ-समारंभ के बिना संसार कभी होता ही नहीं। दयालु भाव श्रावक संसार में रहता है, मगर उदासीन भाव से मात्र सामान्य आरंभ से स्वयं का जीवन यापन करता है, किन्तु महा आरंभ-समारंभ का कभी आश्रय नहीं लेता।

7. **गृहवास को बंधन मानता है:-** भाव श्रावक-श्राविका को घर जेल की तरह व मोक्ष महल की तरह लगता है। कैदी के पैर में चाहे सोने की बेड़ी हो या लोहे की बेड़ी, बेड़ी आखिर बेड़ी ही है। भाव श्रावक चाहे जितने भी बाह्य सुखों के बीच रहता हो, किन्तु उसे संसार बंधन ही लगता है। पिंजरे में कैद पक्षी की तरह हमेशा घर-संसार में से छूटने के लिए तड़पता है।

8. **सम्यक्त्व में दृढ़ बनते हैं:-** 'मेरे परमात्मा ने जो कहा है, वह सत्य ही है।' ऐसा विश्वास होना ही सम्यक्त्व है, इसके विपरीत मान्यता रखना, वह मिथ्यात्व है। भाव श्रावक-श्राविका को मिथ्यात्व महाशत्रु लगता है, इसलिए सम्यक्त्व को स्थिर रखने हेतु वह निरंतर प्रयत्न करता है। ऐसे आचार/विचार से सदा दूर रहते हैं जिससे सम्यक्त्व मलीन हो या चला जाए । शासन प्रभावना आदि ऐसे कामों में हमेशा प्रवृत्त रहते हैं जिससे सम्यक्त्व निर्मल बने।

9. **भेड़ चाल से दूर रहते हैं:-** भेड़ जिस प्रकार बिना विचारे मुँह नीचे रखकर झुंड के पीछे-पीछे चला करती है, वैसा आचरण भाव श्रावक नहीं करता। भाव श्रावक-श्राविका जो भी कार्य करते हैं, बुद्धिपूर्वक विचार कर करते हैं। जहाँ स्वयं को कुछ समझ नहीं आता, वहाँ ज्ञानी-गीतार्थ गुरुओं से पूछते हैं।

10. **आगम को आगे करते हैं:-** भाव श्रावक-श्राविका परलोक को नजर के सामने रखकर जीते हैं। स्वयं की प्रत्येक क्रियाएं आगम धर्मशास्त्र को नजर के सन्मुख रखकर करते हैं। आगम विरुद्ध प्रवृत्तियों से सदा दूर रहते हैं।

11. **दानादि चार धर्म में प्रवृत्त बनते हैं:-** संसारी जीव स्वयं की शक्ति को छुपाये बिना, स्वयं की आय का विचार करके, जिस प्रकार संसार के कार्यों का निष्पादन अच्छी तरह संपादित करता है, उसी प्रकार से भाव श्रावक-श्राविका स्वयं की शक्ति को छुपाए बिना इहलोक और परलोक में हितकारी दान-शील-तप और भाव धर्म में प्रवृत्त रहते हैं।

12. **धर्म करते हुए शर्म नहीं रखते:-** परमात्मा द्वारा बतायी हुई धर्म क्रियाएं आत्मा को लाभकारी हैं। क्रिया करते समय कोई हंसी मजाक

उड़ाए तब भी अपनी धर्म क्रियाओं का त्याग भाव श्रावक-श्राविका नहीं करते और न ही धर्म क्रिया करते हुए शर्माते हैं। इसके विपरीत अपनी आत्मा को समझता है कि, हे जीव! संसारवर्द्धक क्रियाएं करते हुए जब शर्म नहीं आती, तो धर्म क्रिया में शर्म किस बात की?

12. **राग-द्वेष से दूर रहते हैं:-** इस संसार में जन्म लिया है, इसलिए शरीर है, शरीर है इसलिए धन,स्वजन, आहार और घर की भी जरूरत है। भाव श्रावक इनका उपयोग करते हैं लेकिन इसके अच्छे-बुरे गुण धर्मों को देखकर कभी राग-द्वेष नहीं करते।

14. **मध्यस्थ भाव रखते हैं:-** भाव श्रावक के विचार प्रधान होते हैं। इस कारण से वे राग/द्वेष के परिणामों में उलझकर कभी तनावग्रस्त नहीं होते। राग-द्वेष के निर्मित होने की स्थिति में उदासीन, मध्यस्थ या सम भाव में रहते हैं। भाव श्रावक हमेशा स्व-पर के हित का विचारक होने से कहीं कदाग्रह या दुराग्रह नहीं रखता।

15. **धनादि में आसक्त नहीं बनते:-** अनित्य भावना से आत्मा को भवित करने वाला भाव श्रावक धन, स्वजन, शरीर, मकानादि के प्रति ममत्व भाव नहीं रखता। संसार और समस्त वस्तुओं की क्षणभंगुरता का चिंतन करता हुआ, उसके प्रति रही हुई आसक्ति को दूर करता है।

16. **काम भोग का सेवन अनासक्त भाव से करते हैं:-** भाव श्रावक-श्राविका संसार से विरक्त मन वाले होते हैं। उन्हें इस बात का पूरा ध्यान रहता है कि संसार के भोग-उपभोग के साधनों से आत्मा को कभी तृप्ति नहीं मिलती। जैसे-जैसे भोगों को भोगते हैं, वैसे-वैसे इच्छा अधिक बलवती होती जाती है। इसलिए वे हमेशा उससे दूर रहते हैं। कभी उस ओर प्रवृत्ति करना भी पड़े तो अनासक्त भाव से करते हैं।

17. **गृहवास के प्रति शिथिल आचरण:-** भाव श्रावक श्राविका गृहवास के प्रति शिथिल आदर वाले होकर हमेशा यही विचार करते हैं कि इस घर में रहने जैसा कुछ नहीं है। कब समय आये और इस नश्वर घर को छोड़कर शाश्वत घर में स्थान प्राप्त करें।

भाव श्रावक-श्राविका यही चिंतन करते हैं कि इन सत्रह गुणों में से मुझमें कितने गुण हैं और कितने गुणों का अभाव है। अभाव वाले गुणों को ग्रहण करने का सद्भाव रखकर उसका प्रभाव जीवन में प्राप्त करते हैं।

श्रेष्ठ धर्म अहिंसा

मुनि श्री वैभवरत्न विजयजी म.सा.

भारतवर्ष की भूमि सदियों से अहिंसा की गाथा गाती आ रही है। अहिंसा के लिए कितने ही वीरों ने अपने प्राणों की आहुति तक दे दी। अहिंसा का जो मर्म भारतीय परंपरा में बताया गया है वो दुनिया की किसी संस्कृति में नहीं है। इसी अहिंसा को दिल में बसाये हुए कितने ही महात्मा इस धरती को पावन कर गए और भारत माता को गर्व हो, ऐसा बलिदान दे गए। जब अहिंसा का नाम आता है तो करुणामूर्ति महावीर का नाम सभी की जुबान पर सबसे पहले आता है।

श्री महावीर स्वामी ने अहिंसा का संदेश पूरे जगत में फैलाया। जितनी गहरी बातें उन्होंने बताईं वो किसी अन्य ने नहीं कहीं। जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने जीवों का जो सूक्ष्म स्वरूप बताया उसे जानकर हर एक पल जीव हिंसा ना हो इस बात का ध्यान रखने का मन होता है। जीव के कुल 563 भेद जैन धर्म के जीव विचार ग्रन्थ में बताए गए हैं। जल में, पृथ्वी में, अग्नि में, वायु में, वनस्पति में भी जीव हैं। यह बात जैन धर्म बतलाता है। हमारे भगवंतों ने अहिंसा का मार्ग ही बतलाया है। किसी जीव की हत्या करना हमारा

अधिकार नहीं है। प्राणी मात्र को जीने का अधिकार है। सिर्फ बाह्य हिंसा ही नहीं आंतरिक हिंसा जैसे किसी का दिल दुखाना, उन्हें ठेस पहुँचे ऐसे कार्य करना, विश्वासघात करना आदि भी हिंसा के सूक्ष्म स्वरूप हैं। सूक्ष्म हिंसा के स्वरूप भारतीय परंपरा में बताए गए हैं। अहिंसा की बात हो तो हमारे सामने अनेक उदाहरण आते हैं, जिनमें से सर्वश्रेष्ठ है– वे हैं महात्मा गांधी। एक अकेला इंसान कैसे अहिंसा के दम पर पूरी सल्तनत को हिला सकता है, इस बात की मिसाल बापू ने कायम की है। यह सत्व उन्हें मिला अहिंसा के मार्ग से।

गाँधीजी ने जिन्हें अपना गुरु माना, वे जैन साधु श्रीमद् राजचंद्रजी की अहिंसा की बातों से ही प्रभावित थे। अपनी आत्मकथा समान किताब 'सत्य के प्रयोग' में गांधीजी ने

साफ लिखा है कि जैन साधु श्रीमद् राजचन्द्रजी और गुजरात के जैन समुदाय की अहिंसा से वे बहुत ही प्रभावित थे। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने राष्ट्रव्यापी अहिंसा का आन्दोलन कर भारत देश को आजादी दिलाई। एक अकेला व्यक्ति बिना किसी हिंसा के पूरे देश को आजादी दिलाने का दुष्कर कार्य कैसे कर सकता है, यह आपने कर दिखाया। यह एक अनोखी घटना थी और इस रूप में एक स्वर्णिम इतिहास गांधीजी ने बनाया है- वह भी अहिंसा के माध्यम से।

'अहिंसा परमोधर्म' का मंत्र भी श्री महावीर स्वामी ने दिया है, जिसे गांधीजी ने पूरी दुनिया में उजागर किया। इसी वजह से आज इतने सालों बाद भी पूरी दुनिया गाँधीजी को नमन करती है। हमें क्या करना है? गांधीजी ने इतना बड़ा बलिदान इसलिए दिया कि आने वाली पीढ़ी एक खुशहाल आजादी की जिन्दगी जिए। लेकिन हमने उन्हें क्या दिया? अगर बापू आज जीवित होते तो चारों तरफ फैली हिंसा को देख क्या वे खुश होते? शायद वो स्वर्ग में बैठे भी सोच रहे होंगे कि देखों कैसे अधर्मी लोगों के लिए मैंने अपना जीवन दे दिया। अहिंसा सिर्फ बापू का काम नहीं था। हम सब को मिलकर बापू की इस अहिंसक ज्वाला को पूरे विश्व में फैलाना है। यह तभी होगा जब हम बापू के जीवन और चिंतन का 10 प्रतिशत आचरण भी अपने जीवन में उतार सकें, अनुभव कर सकें। संकल्प करें कि अहिंसा को अपना कर 'अहिंसा के संदेश' को दुनिया भर में फैलायेंगे। यही गांधीजी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जीवन सब को प्यारा है। फिर चाहे मानव हो या बेजुबान अन्य जीव। बेजुबान पशुओं की हत्या बापू को कैसे पसंद आएगी? एक मच्छर के काटने से भी हम उथल-पुथल मचा देते हैं तो जिनका सिर ही कट जाता है, उन्हें कितनी वेदना होती होगी? बापू की इस महान अहिंसा यात्रा को आगे बढ़ाने का संकल्प हरेक घर में दीपक जैसे जलाए जाएं, यही मंगल कामना।

जो मनुष्य सत् प्रवृत्ति नहीं करते, केवल पठनपाठन में ही लगे रहते हैं, वे केवल ज्ञान में आसक्ति रखने वाले ही कहलाते हैं। किन्तु जो पुरुष अपने ज्ञान को आचरण में उतर लेते हैं वे ही क्रियावान और पंडित कहलाते हैं।

लेखांक (3)

जैन धर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं

(प्रो. सागरमल जैन)

समाधिमरण का मूल्यांकन :- स्वेच्छा मरण के विषय में पहला प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य को प्राणान्त करने का नैतिक अधिकार है? पं. सुखलालजी ने जैन दृष्टि से इस प्रश्न का जो उत्तर दिया उसका संक्षिप्त सार यह है कि जैन धर्म सामान्य स्थितियों में चाहे वह लौकिक हो या धार्मिक, प्राणान्त करने का अधिकार नहीं देता है। लेकिन जब देह और आध्यात्मिक सद्गुण इनमें से किसी एक को चुनने का समय आ गया हो तो देह का त्याग करके भी अपनी विशुद्ध आध्यात्मिक स्थिति को बचाना चाहिए; वैसे ही जैसे सती स्त्री दूसरा मार्ग न देखकर देहनाश के द्वारा अपने सतीत्व की रक्षा करती है। देह और संयम दोनों की समान भाव से रक्षा हो सके तो दोनों की ही रक्षा करना कर्त्तव्य है, पर जब एक की रक्षा का प्रश्न आ खड़ा हो तो सामान्य व्यक्ति जहाँ देह की रक्षा करना पसंद कर आध्यात्मिक संयम की उपेक्षा करेंगे समाधिमरण का अधिकारी संयम की रक्षा को महत्व देगा। जीवन तो दोनों ही हैं, दैहिक और आध्यात्मिक। इनमें से आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए प्राणान्त या अनशन की इजाजत है। पामरों, भयभीतों और लालचियों के लिए नहीं। भयंकर दुष्काल आदि आपत्तियों में देह रक्षा निमित्त संयम से पतित होने का अवसर आ जावे या अनिवार्य रूप से मरण लाने वाली बीमारियों के कारण स्वयं अथवा दूसरों को निरर्थक परेशानी होती हो, संयम और सद्गुणों की रक्षा सम्भव न हो, तब मात्र समभाव की दृष्टि से संथारे या स्वेच्छामरण का विधान है। यदि सद्गुणों की रक्षा के निमित्त देह का विसर्जन किया जाता है तो वह अनैतिक नहीं है। नैतिकता की रक्षा के लिए किया गया देह विसर्जन अनैतिक कैसे होगा?

जैन दर्शन के इस दृष्टिकोण का समर्थन गीता भी करती है। उसमें कहा गया है कि यदि जीवित रहकर (आध्यात्मिक सद्गुणों के विनाश के कारण) अपकीर्ति की सम्भावना हो तो उस जीवन से मरण ही श्रेष्ठ है।

काका कालेलकर लिखते हैं कि 'मृत्यु शिकारी के समान हमारे पीछे पड़े और हम बचने के लिए भागते जावें, यह दृश्य मनुष्य जीवन को शोभा नहीं देता। जीवन का प्रयोजन समाप्त हुआ, ऐसा देखते ही मृत्यु को आदरणीय अतिथि समझकर उसका स्वागत करना, स्वेच्छा स्वीकृत मरण के द्वारा जीवन को कृतार्थ करना, यह एक सुन्दर आदर्श है। आत्महत्या को नैतिक दृष्टि से उचित मानते हुए वे कहते हैं कि इसे हम आत्महत्या न कहें। निराश होकर, कायरता में, डर के मारे शरीर छोड़ देना एक किस्म की हार ही है। उसे हम जीवन द्रोह भी कह सकते हैं। सब धर्मों ने आत्महत्या की निंदा की है, लेकिन जब मनुष्य सोचता है कि उसके जीवन का प्रयोजन पूर्ण हुआ, ज्यादा जीने की आवश्यकता नहीं रही तब वह आत्मसाधना के अंतिम रूप के तौर पर यदि शरीर छोड़ देता है तो ऐसा करना उसका हक है। मैं स्वयं व्यक्तिशः इस अधिकार का समर्थन करता हूँ।'

समकालीन विचारकों में धर्मानंद कोसम्बी और महात्मा गांधी ने भी मनुष्य के प्राणान्त करने के अधिकार का समर्थन नैतिक दृष्टि से किया है। महात्माजी का कथन है कि जब मनुष्य पापाचार का वेग बलवत्तर हुआ देखता है और आत्महत्या के बिना अपने को पाप से बचाने में अपने को असमर्थ पाता है, तब पाप से बचने के लिए उसे आत्महत्या करने का अधिकार है। कोसम्बीजी ने भी स्वेच्छामरण का समर्थन किया था और उसकी भूमिका में पं. सुखलालजी ने कोसम्बीजी की इच्छा को भी अभिव्यक्त किया था।

काका कालेलकर स्वेच्छामरण को महत्त्वपूर्ण मानते हुए जैन परम्परा के समान ही कहते हैं कि 'जब तक शरीर मुक्ति का साधन हो सकता है तब तक अपरिहार्य हिंसा को सहन करके भी इसे जलाना चाहिए। जब हम यह देखें कि आत्मा के अपने विकास के प्रयत्न में शरीर बाधारूप ही होता है, तब हमें उसे छोड़ना ही चाहिए। जो किसी भी हालत में जीना चाहता है, उसकी शरीर निष्ठा तो स्पष्ट है ही, लेकिन जो जीवन से ऊबकर अथवा केवल मरने के लिए मरना चाहता है, तो उसमें भी विकृत शरीर निष्ठा है। जो मरण से डरता है और जो मरण ही चाहता है, वे दोनों जीवन का रहस्य नहीं जानते। व्यापक जीवन में जीना और मरना दोनों का अन्तर्भाव होता है। जिस तरह उन्मेष और निमेष दोनों क्रियाएं मिलकर ही देखने की एक क्रिया पूरी होती है।'

भारतीय नैतिक चिन्तन में केवल जीवन जीने की कला पर ही नहीं, वरन् उसमें जीवन की कला के साथ-साथ मरण की कला पर भी विचार हुआ है। नैतिक चिन्तन की दृष्टि से

जीवन को कैसे जीना चाहिए यही महत्त्वपूर्ण नहीं है, वरन् कैसे मरना चाहिए यह भी महत्त्वपूर्ण है। मृत्यु की कला जीवन की कला से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। आदर्श मृत्यु ही नैतिक जीवन की कसौटी है। जीना तो विद्यार्थी के सत्रकालीन अध्ययन के समान है, जबकि मृत्यु परीक्षा का अवसर है। हम जीवन की कमाई का अंतिम सौदा मृत्यु के समय करते हैं। यहाँ चूके तो फिर पछताना होता है। इसी अपेक्षा से कहा जा सकता है कि जीवन की कला की अपेक्षा मृत्यु की कला अधिक मूल्यवान है। भारतीय नैतिक चिन्तन के अनुसार मृत्यु एक ऐसा अवसर है जब अधिकांश जन अपने भावी जीवन का चुनाव करते हैं। गीता का कथन है कि मृत्यु के समय जैसी भावना होती है, वैसी ही योनि जीव प्राप्त करता है (18।5-6)। जैन परम्परा में खन्धक मुनि की कथा यही बताती है कि जीवन भर कठोर साधना करने वाला महान् साधक जिसने अपनी प्रेरणा एवं उद्बोधन से अपने सहचारी पांच सौ साधक शिष्यों को उपस्थित मृत्यु की विषम परिस्थिति में समत्व की साधना के द्वारा निर्वाण का अमृत पान कराया वही साधक स्वयं की मृत्यु के अवसर पर क्रोध के वशीभूत हो किस प्रकार अपने साधना से विचलित हो गया।

– क्रमशः...

महावीर के 27 पूर्व भव

1. नयसार ग्राम चिंतक
2. सौधर्म देव
3. मरीचि
4. ब्रह्म स्वर्ग का देव
5. कौशिक ब्राह्मण
6. पुष्य मित्र ब्राह्मण
7. सौधर्म देव
8. अग्निद्योत
9. द्वितीय कल्प का देव
10. अग्निभूति ब्राह्मण
11. सनत्कुमार देव
12. भारद्वाज
13. महेन्द्र कल्प का देव
14. स्थावर ब्राह्मण
15. ब्रह्म कल्प का देव
16. विश्व भूति
17. महाशुक्र का देव
18. त्रिपृष्ठ वासुदेव
19. सातवीं नरक
20. सिंह
21. चतुर्थ नरक (अनेकभाव, अन्त में पहली नरक का नेरिया)
22. पोट्टिल (प्रिय मित्र) चक्रवर्ती
23. महाशुक्र कल्प का देव
24. नन्दन
25. प्राणत देवलोक
26. देवानन्दा के गर्भ में
27. त्रिशला की कुक्षी से भगवान महावीर

- संकलित

अशुचि भावना

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शना श्रीजी म.)

मोक्षमार्ग की साधना-आराधना करते हुए शुद्ध आत्मस्वरूप की प्राप्ति में विशेष रूप से चार अवरोधक तत्व होते हैं- स्वजन, परजन, धन सम्पत्ति एवं देहासक्ति। इनकी आसक्ति से मुक्त होने के लिए पूर्व में अनित्यादि पाँच भावनाओं का वर्णन है, जिसमें इन पदार्थों की निरर्थकता बताई गई है। शरीर आदि संयोग अनित्य है, अशरण है, असार है, साथ नहीं देते एवं ये अपनी आत्मा से एकदम भिन्न हैं।

पत्नी, मित्र, वैभव सहित अन्य सभी की आसक्ति छूटना फिर भी सरल है किन्तु शरीर का मोह छूटना अत्यन्त दुष्कर है। संयम लेने पर घर, परिवार, वैभव-विलास सब छूट जाता है। संयमी के पास परिजन आदि कुछ नहीं होता, किन्तु शरीर का साथ तो रहता ही है और इस देह में रहकर देह की आसक्ति से रहित होना आसान नहीं है। देह प्रेम से मुक्त होने के लिए अशुचि भावना बताई गई है। अशुचि भावना का चिन्तन, शरीर से आसक्ति तोड़ने के लिए, देह ममत्व को खत्म करने, शरीर का मोह नष्ट करने के लिए ही बताया गया है।

शुचि अर्थात् पवित्र एवं 'अशुचि' याने अपवित्र। यह देह अत्यन्त अपवित्र एवं गंदगी का ढेर है। शरीर का प्रत्येक अंग अशुचि से भरा हुआ है। आँख, कान, नाक, मुँह आदि पुरुष के नौ द्वार एवं स्त्री के बारह द्वारों से निरंतर अशुचि बहती रहती है।

उपाध्याय विनय विजयजी म.सा. ने शांत सुधारस ग्रन्थ में फरमाया है कि - 'यह शरीर अशुचि से भरे हुए छिद्र वाले घड़े के समान है। उस विष्ठा से भरे हुए घड़े को कितना ही धो लें, इत्र भी छिटक दें तो भी वह घड़ा स्वच्छ होगा क्या? उसके छिद्रों से गंदगी निकलना बंद हो जाएगी क्या? कभी नहीं। इसी प्रकार यह शरीर भी अशुचिमय है। जैसे लहसुन को कपूर आदि सुगंधित पदार्थों से वासित करने पर भी वह अपनी दुर्गंध नहीं छोड़ता, वैसे ही इस शरीर को भी कितने ही श्रेष्ठ और उत्तम पदार्थों के संपर्क में रखें, इसे अशुचि से मुक्त नहीं किया जा सकता। बल्कि शरीर के संपर्क में आने से उत्तम से उत्तम पदार्थ भी मलिन हो जाते हैं। यह शरीर सभी कुत्सित और निंदनीय वस्तुओं का

समुदाय है। कृमि आदि जीवों से, कीड़ों से भरा पड़ा है। अत्यन्त दुर्गंधमय है, मल मूत्र का घर है। तैल मर्दन एवं वस्त्राभूषण से विभूषित किया गया और बार-बार खाद्य पदार्थों से पुष्ट होने पर भी यह शरीर विश्वसनीय नहीं बनता।'

शरीर के अशुचिमय होने के चिंतन का सार यही है कि इस शरीर के प्रति ममत्व कम हो, दैहिक सुन्दरता के प्रति आकर्षण कम हो और मनुष्य अपनी आत्मिक सुन्दरता का दर्शन करे। क्योंकि जब तक इस देहालय में आत्मा विराजित है, तब तक ही इस शरीर की महिमा है। आत्माराम के निकल जाने पर तो इस देहालय की कोई कीमत नहीं है। ईंट, चूने, पत्थर का मकान तो शायद मालिक के जाने के बाद भी मूल्यवान रहता है किन्तु आत्मा के निकल जाने के बाद इस शरीर की कोई कीमत नहीं रहती। स्वजनों के द्वारा ही यह शरीर जला दिया जाता है और देखते ही देखते राख के ढेर के रूप में परिवर्तित हो जाता है। और तो और यह राख भी किसी काम नहीं आती है।

यह शरीर चाहे जितना अपवित्र हो, नश्वर हो, किन्तु इस देहालय में रहने वाली आत्मा परम पवित्र है, शुद्ध है, निर्मल है। उस शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप को प्राप्त करने के लिए ही शरीर का ममत्व छोड़ना है। इसीलिए अशुचि भावना का चिन्तन बताया गया है।

इस शरीर के अन्दर क्या-क्या पदार्थ हैं? इसके विश्लेषण में वैज्ञानिक डॉ.हेरोल्ड ह्वीलर ने बताया-'इस शरीर में सात बट्टी साबुन है, दस गैलन पानी है, स्नानघर पोता जा सके इतना चूना है, एक डब्बी सल्फर की गोलियाँ हैं, दो इंच लम्बी कील जितना लोहा है, नौ हजार पेंसिल बनें इतना कार्बन है, माचिस की बाईस सौ तीलियाँ (दियासलाई) बन सकें इतना फास्फोरस है और एक चम्मच मेग्नेसिया है। अब चिन्तन करना है कि इसमें से कौन सा पदार्थ मेरा अपना है।'

आचार्य हेमचन्द्रसूरिजी ने कहा है - 'यह शरीर रस, रक्त, मांस, मेद, मज्जा, वीर्य, आंत और विष्ठा आदि अशुद्ध पदार्थों का पात्र है। यह शरीर किस प्रकार शुद्ध किया जा सकता है? फिर भी मूढ़ व्यक्ति इस शरीर को सजाने-संवारने की रात-दिन मेहनत करते रहते हैं, कैसी अज्ञानता है?सुज्ञ आत्मन्! जरा याद करें, जीवन में गर्भावस्था के वे दुख से परिपूर्ण नौ माह। जैसे मल मूत्र में कृमि वगैरह कीड़े रहते हैं, वैसे माता के उदर में ऊँधे सिर जीव लटका था। माता के उदर में कितने दुख पाए थे? यदि उन

वेदनाओं से मुक्त होना हो तो अशुचि भावना का चिन्तन करें।

अच्छी तरह से तैयार किया स्वादिष्ट षड्रस भोजन भी खाने के बाद विष्टा होकर जुगुप्सा या घृणा उत्पन्न करता है। गाय का पवित्र माना जाने वाला दुग्ध भी मूत्र बनकर गंदगी फैलाता है। इस देह का स्वभाव दुर्जन के समान है। दुर्जन व्यक्ति की तरह देह का पोषण भी दुख और दोष ही उत्पन्न करता है। इनका शोषण (तपस्या आदि) करने पर सुख उत्पन्न होते हैं। फिर भी यह मूर्ख जीव रात-दिन देह का ही विचार करता है।

ज्ञातसूत्र में शरीर के सौन्दर्य की वास्तविक स्थिति दिखाने वाला एक मार्मिक उदाहरण है। मल्लिनाथ भगवंत जो कि पूर्वावस्था में मल्लिकुमारी थे, उन्होंने अपने पूर्व जन्म के छः मित्रों को इस जन्म में अशुचि दर्शन से ही प्रतिबोधित किया था। चक्रवर्ती सनत् कुमार अपने सौन्दर्य का इतना विकृत रूप देखकर दहल उठे। सारा साम्राज्य उन्हें भार लगने लगा। वे जान गए कि शरीर और वैभव नश्वर है और उसी समय प्रवज्या ले ली।

यह शरीर दिन-प्रतिदिन कृश हो रहा है। केश सफेद हो रहे हैं। सभी इन्द्रियों की शक्ति क्षीण होती जा रही है। इस स्थिति में क्षण मात्र समय भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। स्व शरीर के जैसे-पर शरीर को भी अशुचिमय देखना चाहिए। तत्वदृष्टि वाले महापुरुष नारी देह की सुकोमल त्वचा के भीतर झांकते हैं और उन्हें वहाँ विष्टा, मूत्र, खून, माँस, हड्डियों के अलावा कुछ अन्य दिखाई नहीं देता। उसको देखने मात्र से वैराग्य पैदा होता है। जबकि अज्ञानी, कामांध जीव नारी देह के कारण अपना मानव जीवन हार जाता है।

इस प्रकार अशुचि भावना में देह संबंधी अशुचिता का चिंतन किया जाता है। तथापि इसके चिन्तन की सीमा देह की अशुचिता तक ही सीमित नहीं है, वरन् इसमें आत्मा की पवित्रता, आत्मरमण की बातें भी समाहित हो जाती हैं। शरीर के अशुचिमय होने के चिन्तन का सार यही है कि इस शरीर के प्रति ममत्व कम हो, दैहिक सुन्दरता के प्रति आकर्षण कम हो, मनुष्य अपनी आत्मिक सुन्दरता के दर्शन करे। जो भव्य जीव पर (स्त्री आदि की) देह से विरक्त होकर अपनी देह में भी अनुराग नहीं करता है, अपने आत्मस्वरूप में अनुरक्त रहता है, उसके अशुचि भावना होती है।

चिंता नहीं चिंतन करो

(साध्वी डॉ. श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.)

चिंता आग समान है, करे बुद्धि बल नाश।
कहें जयन्तसेन चिन्तन करो, फैले आत्मप्रकाश।।

अर्थ– चिंता, अग्नि के समान है। यह केवल शरीर को ही नहीं बल्कि बुद्धि और बल को भी घटाती है। इसलिए गुरुदेव कह रहे हैं कि चिंता छोड़ो और चिंतन करो जिससे आत्मज्ञान का प्रकाश होगा।

भावार्थ :– बिना अग्नि के कौन जलाता है? चिंता। चिंता किसी समस्या का हल नहीं होती बल्कि इससे समस्याएँ और बढ़ जाती हैं। चिंता एक प्रकार का आर्तध्यान है और तीव्र आर्तध्यान में तिर्यञ्चगति का बंध होता है, साथ ही बुद्धि भी कुंठित हो जाती है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की हानियाँ भी होती हैं। कई प्रकार की बीमारियाँ शरीर में प्रवेश कर जाती हैं। ब्लड प्रेशर का घट–बढ़ जाना, हार्ट अटैक की संभावना होती है। एक समस्या का हल नहीं होता और दूसरी अनेक आ खड़ी होती हैं। कष्ट और समस्याएँ किसके जीवन में नहीं आती। प्रायः सभी महापुरुषों और महासतियों के जीवन में भी कठिन क्षण आए हैं। सभी का जीवन दुःख की अग्नि में से गुजरकर निखरा है। जीवन उनका ही निखरता है जो चिंता छोड़कर चिंतन करते हैं। जो चिंतन करते हैं वे आगे बढ़ते हैं, जो चिंता करते हैं वो जीते जी मरते हैं। कहा गया है कि चिता मुर्दे को और चिंता जिंदा व्यक्ति को जलाती है। सती मदनरेखा चारों ओर से संकट से घिर गई थी। मदनरेखा पर आसक्त मणिरथ के वार से पति घायल अवस्था में अंतिम श्वासें गिन रहा था। दूसरी तरफ उसका एक पुत्र महल में छूट गया था, एक पुत्र गर्भ में था। शील भंग का भी भय बना हुआ था। महासती ने चिंता छोड़कर सूझबूझ से काम लिया। उसने सर्वप्रथम पति को संभाला। उसके हृदय में मणिरथ के प्रति जल रही द्वेष और क्रोध की अग्नि को अपने मधुर वचनों में जिनवाणी का रसपान कराकर शांत किया। मदनरेखा के प्रति जो राग था, उसे भी दूर कर मध्यस्थ और मैत्री भावना से अपने पति के हृदय को आप्लावित किया। जैसे ही पति का

समाधिमरण हुआ। मृत शरीर को छोड़कर जंगल की ओर उसने प्रयाण कर दिया। वहीं पुत्र को जन्म दिया। आगे भी अनेक संघर्षों का सामना करते हुए दीक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को सफल किया।

इसी प्रकार गर्भवती सीता को राम ने जंगल में छुड़वा दिया। वहाँ सीता ने चिंता को मन-मस्तिष्क में प्रवेश नहीं दिया बल्कि चिंतन के प्रकाश में आगे बढ़ती रही। उसके चिंतन का ही यह सुफल था कि वह अग्नि परीक्षा में पास हो गई। सारी अयोध्या के लोग पलक पावड़े बिछाए उसका इन्तजार कर रहे थे। उसके चारों तरफ सुख का साम्राज्य बिखरा पड़ा था। श्रीराम उसे ले जाने के लिए आतुर हो रहे थे। ऐसे समय में उसने सारे भौतिक सुखों को दुःख का कारण जानकर, उन्हें ठोकर मार संयम ग्रहण कर लिया।

सनत्कुमार चक्रवर्ती ने रूपवान शरीर को एक क्षण में रोगों से घिरा हुआ पाया और तुरन्त चिंतन के आत्मप्रकाश में वे आगे बढ़ गए। विश्वासघाती ऐसे शरीर की एक पल के लिए भी उन्होंने चिंता नहीं की।

कई चिंताएं अकल्पनीय होती हैं। भविष्य की चिंता में कई लोग वर्तमान का सदुपयोग नहीं कर पाते हैं। इस बात को इस कहानी से समझ सकते हैं। एक ही पिंजरे में गाय तथा सिंह थे। बीच में मजबूत जाली थी। गाय को महीने भर तक खूब हरा घास आदि भोजन सामग्री परोसी गईं परन्तु गाय में कुछ अन्तर नहीं आया। वह पहले जैसी ही दुर्बल रही क्योंकि सिंह की उपस्थिति से वह सतत चिंता से घिरी रहती थी। नजर उठाते ही उसे जाली में से सिंह दिखाई देता और वह कांप उठती। उसकी भूख-प्यास समाप्त हो गई।

इसलिए गुरुदेव ने कहा कि चिंता, बुद्धि और बल दोनों का ही नाश करती है, अतः-

'चिंता छोड़कर चिंतन करो।
प्रसन्नता से जीवन भरो।।'

शुद्धि-सत्य से मन शुद्ध होता है। जल से शरीर शुद्ध होता है। ज्ञान से बुद्धि होती है। तप से आत्मा शुद्ध होती है। कांसे का बर्तन राख से मांजने पर शुद्ध होता है। तांबें का बर्तन खटाई से शुद्ध होता है। सोना अग्नि में तपाने पर शुद्ध होता है। बहता हुआ रहने से नदी का जल शुद्ध होता है। धर्म के पालन से आचरण शुद्ध होता है और ईश्वर के प्रति आस्था, अहोभाव और समर्पण की भावना रखकर शुभ कर्म करने से यह पूरा जीवन शुद्ध हो जाता है।

हमारी साधना और उपलब्धियाँ

(डॉ. चंचलमल चौरडिया)

आधुनिक समय धार्मिक प्रवृत्तियों के अनुकूल-आधुनिक युग में भौतिक विकास के साथ-साथ बाह्य रूप से धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। जितने धार्मिक आयोजन, सम्मेलन, शिविर, धर्मयात्राएं, सत्साहित्य का प्रकाशन, तपस्याएँ, दीक्षाएं, सद्गुरुओं का जनसम्पर्क आज हो रहा है, उतने शायद पहले नहीं थे। सैकड़ों विद्यार्थी धार्मिक विषयों पर नवीन शोध करने में व्यस्त हैं। हजारों विद्वान अपनी लेखनी द्वारा जन-जन को आध्यात्मिक प्रेरणा दे रहे हैं। हजारों स्वाध्यायी एवं प्रचारक धर्म प्रचार में अपने अमूल्य समय का योगदान कर रहे हैं। आज धर्म शास्त्रों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो जाने से जनसाधारण को उसका मर्म एवं रहस्य समझने के कई अधिक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। पहले चाहते हुए भी आगम पढ़ने व समझने का सौभाग्य सबको प्राप्त नहीं होता था।

लक्ष्यहीन साधना अप्रभावशाली - वर्तमान में धर्म एवं सिद्धान्तों की जानकारी सम्प्रदाय व क्षेत्रों तक सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फैल रही है। मानव की बुद्धि , तर्क व चिंतन का विकास हुआ है। सत्य को स्वीकारने में उसका दुराग्रह कम हुआ है। वह प्रत्येक तथ्य को अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार तर्क की कसौटी पर तोल कर ही अपनी मान्यता एवं धारणा बनाने का प्रयास करता है। उसकी श्रद्धा एवं विश्वास का यही मापदण्ड बनता जा रहा है। सम्यग् ज्ञान एवं श्रद्धा के अभाव में वह चल तो अवश्य रहा है परन्तु उसे अपने लक्ष्य का भान नहीं है। फलतः उसके भटकने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। यही वजह है कि धार्मिक क्षेत्र में इतना सब कुछ होने के बावजूद जीवन मूल्यों का ह्रास हो रहा है। धार्मिक क्षेत्र में कट्टरता, शिथिलता, साम्प्रदायिकता, अंधानुकरण, मूल सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण आदि बढ़ रहे हैं। इन बातों से धर्म से लोगों का विश्वास हटता जा रहा है। अधिकांश समाज धर्म के मूल सिद्धान्तों से भटक रहे हैं। हमारी लम्बे समय से नियमित साधना एवं धर्म

क्रियाओं के बावजूद भी हमारे जीवन में अपेक्षित परिवर्तन बहुत कम देखने को मिलता है। जिस उद्देश्य के लिए हम सब प्रयत्नशील हैं, उसे सही रूप में प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इनके पीछे रहे कारणों पर सम्यग् चिन्तन आवश्यक है। किसी कवि ने अपने भजन में कितनी मार्मिक बात कही है–

'जीवन में जो शान्ति न लाता,
वह धर्म नहीं बस धोखा है,
जीवन में जो क्रान्ति न लाता,
वह धर्म नहीं बस धोखा है।'

जो व्यापारी लाखों रुपए लगाकर व्यापार करता है एवं लाभ कमाने के स्थान पर अपनी मूल पूँजी भी गंवा दे तो वह सफल व्यापारी नहीं कहला सकता। हम भोजन खावें और भूख नहीं मिटे, पानी पीवें और प्यास नहीं बुझे तो हमें यह समझना होगा कि हम भोजन एवं पानी के रूप में अखाद्य एवं अपेय का सेवन कर रहे हैं।

साधना की नियमित समीक्षा आवश्यक- इसी प्रकार हम धार्मिक साधना करें एवं जीवन में बदलाव न आवे, सद्गुणों व सद्प्रवृत्तियों का जीवन में विकास न हो, संतोष, सरलता, शान्ति, समता का प्रादुर्भाव न हो, विषय –कषाय घटने के स्थान पर बढ़ने लगें तो हमें स्वीकारना होगा कि हमारी साधना पद्धति के मूल में भूल है एवं ऐसी धार्मिक क्रियाएँ व आचरण से धर्म के नाम पर अपने आपको व दूसरों को धोखा ही दे रहे हैं।

यदि हमारी दुकान में आय बराबर न हो तो हम चिंतित हो जाते हैं। ऐसा होने के कारण ढूँढने का प्रयास करते हैं। हम विचार करते हैं कि कहीं हमारे पास ग्राहकों की आवश्यकतानुसार उचित मूल्य पर उचित माल का अभाव तो नहीं है? कहीं दुकान एकान्त में तो नहीं है? ऐसे अनेक प्रश्न हमारे सामने प्रतिदिन खड़े होते हैं एवं हम आय बढ़ाने के स्रोतों का पता लगाकर उन्हें क्रियान्वित करते हैं। यदि हमारा बच्चा किसी कक्षा में बार–बार अनुत्तीर्ण होता रहे तो उसे बुद्धिमान नहीं कह सकते। इसी प्रकार दीर्घकाल की साधना के बाद भी यदि जीवन में परिवर्तन नहीं आवे तो साधना पद्धति की भूल को सुधारना आवश्यक होता है।

आश्चर्य तो इस बात का है कि धार्मिक क्षेत्र में हमारा दृष्टिकोण एवं मापदंड दूसरा ही होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक क्रियाएँ तो सद्गुरुओं की प्रेरणा एवं सुसंस्कार होने से परम्परागत हमको करनी पड़ती है। उसमें जितना उल्लास, रुचि, श्रद्धा, विश्वास पात्रता होनी चाहिए वे

नहीं होती हैं। अतः वर्षों की धार्मिक क्रियाओं के पश्चात् भी हम इस बात का पता नहीं करते कि हमारी साधना का लक्ष्य क्या है? उसमें कितना आगे बढ़ सके हैं? अगर नहीं बढ़े तो क्यों? जीवन में कितने सद्‌गुणों का विकास हुआ? जीवन कितना निर्व्यसनी एवं संयमित बना। राग-द्वेष एवं विषय-कषायों में कितनी कमी आई। साधना प्रारम्भ करने के बाद जीवन में समता, सरलता, संतोष एवं शान्ति में कितनी अभिवृद्धि हुई? हम अपने स्वभाव के कितने नजदीक आये?

यदि इन प्रश्नों के समाधानों से हम संतुष्ट हैं तो हमारा जीवन स्वयं एवं पर के कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है अन्यथा धार्मिक अनुष्ठानों में हमारे समय, श्रम एवं साधनों का उपयोग पूर्णरूपेण एवं संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। साधना एवं धार्मिक क्रियाएं हमें भार रूप लगने लगती हैं। उसमें जितना आनन्द, रस, प्रमोद एवं उत्साह होना चाहिए, वह नहीं होता। जो बाह्य क्रियाएँ अन्तर की प्रेरणा जागृत करने के लिए की जा रही हैं, वे बाहर तक सीमित रह जाएंगी। अतः आवश्यक है कि धार्मिक साधना, सम्यग् चिन्तन से पूर्ण हों। उसमें हमारा मन भी जुड़े, जितनी वाणी और काया जुड़ती है, अन्यथा तन से सामायिक करते हुए भी मन समता में न हो, हाथों में माला का मनका घुमाते हुए भी मन अन्य कार्यों में व्यस्त हो, मुँह से भले शास्त्रों की गाथाओं का उच्चारण करें पर मनोयोग नहीं है। जब तक पूर्ण मनोयोग से पूर्ण चिंतन नहीं चलेगा जीवन में उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा और आवश्यक बदलाव आना भी कठिन होगा। विकास करना हमारा स्वभाव है एवं उसके लिए अपने लक्ष्य की तरफ चलते ही रहना चाहिए।

साधना हेतु सही पथ प्रदर्शक आवश्यक- साधना पथ पर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है कि या तो हमें स्वयं मार्ग का ज्ञान हो अथवा जिसके पीछे चल रहे हैं, वह सही पथ प्रदर्शक सिद्ध हो। यदि हमें स्वयं के मार्ग का ज्ञान नहीं है और न ही सच्चे मार्गदर्शकों पर श्रद्धा एवं विश्वास हैं तो हमारा लक्ष्य पर पहुँचना हमारे लिए कठिन होगा। अपवाद के रूप में धार्मिक साधना से, विशेष ज्ञान नहीं रखने वाले साधक भी मिल सकते हैं, परन्तु उनका प्रतिशत नगण्य ही होता है। उनका जीवन अपने आराध्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होता है। तर्क का वहाँ कोई स्थान नहीं होता। वे तो आगम एवं गुरुवाणी को विनय एवं श्रद्धापूर्वक ही स्वीकार करते हैं। उनके स्वभाव में सरलता,

संतोष, करुणा, निस्पृहता जैसे भाव, सुसंस्कारों एवं सत्संगति से अधिक पाये जाते हैं, तब ही उनकी श्रद्धा दृढ़ होती है। वे भले ही ज्ञानी न हों, फिर भी सदैव सजग एवं सतर्क रहते हुए अपनी कमजोरियों का चिंतन कर उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं।

परन्तु आज के युग में जन साधारण को सच्चे गुरु एवं मार्गदर्शक का सान्निध्य मिलना अत्यन्त कठिन है। यदि पथ प्रदर्शक ही भटक जाए तो स्थिति और भी विकट हो जाती है और आज प्रायः ऐसी स्थिति सामान्य हो गई है।

गौतम स्वामी

अंगुठे अमृत वरसे, लब्धि तणा भंडार ।
ते गुरु गौतम समरीये, मन वांछित फल दातार ।।

गौतम स्वामी का जन्म मगध देश के गोबर नामक गाँव में हुआ था।
इनके पिता का नाम वसुभूति माता का नाम पृथ्वी व इनका नाम इन्द्रभूति था।
गौतम स्वामी के दो छोटे भाई का नाम अग्निभूति व वायुभूति था।
गौतम स्वामी ने दो छट्ठ के पारणे छट्ठ किये थे।
भगवान वीर के मरीचि (तीसरा भव) के भव में गौतमस्वामी का जीव (कपील) उनका शिष्य बना था।
भ.वीर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ उसके दूसरे दिन ही गौतम स्वामी को संयम मार्ग प्राप्त हुआ, भ. को मोक्ष प्राप्त हुआ उसके दूसरे दिन ही गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ।
गौतम स्वामी ने 150 तापस को करेमिभंते उच्चाराया था।
कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ ।
गौतम स्वामी ने 30 वर्ष तक भ.वीर की सेवा की और प्रभु निर्वाण के पश्चात 12 वर्ष केवली पर्याय में रहे।
गौतम स्वामी, ने 93 वर्ष का आयुष्य पाया और अपना अन्त समय निकट जान राजगृह के गुणशील चैत्यालय में आमरण अनशन स्वीकार किया। एक मास के संथारे के पश्चात समाधि पूर्वक काल करके सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गये।
गौतम स्वामी के 50 हजार शिष्यों में सभी उसी भव में मोक्ष पधारे।
गौतम स्वामी ने जगचिंतामणी सूत्र की रचना अष्टापद तीर्थ पर की ।

समाधि के सूचक-अवधान, समाधान और प्राणिधान

(श्री शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)

स्थानांगसूत्र में एक विवेचन किया है–'तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्तै तं जहा–मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, काय सुप्पणिहाणे।' प्राणिधान तीन प्रकार का है– मन, वाणी और काया प्राणिधान। अभिधान चिन्तामणि में कहा है– अवधान, समाधान और प्राणिधान– ये समाधि के सूचक हैं। तीन अवस्थाओं के सूचक हैं।

अवधान जागरूकता है। जो हर घटना, हर व्यक्ति, हर स्थिति के प्रति जागरूक है। वह समाधि की दिशा में जा सकता है। महान वैज्ञानिक आईंस्टीन रेल में यात्रा कर रहे थे। टिकिट चेकर आया। वह टिकट खोजने लगे, पर टिकट नहीं मिला। टिकिट चेकर ने कहा– मुझे मालूम है आप बिना टिकिट यात्रा कर ही नहीं सकते। आईंस्टीन ने कहा– भाई मैं तुम्हारे लिए नहीं, अपने लिए टिकिट खोज रहा हूँ ताकि मुझे मालूम हो जावे कि मुझे उतरना कहाँ है?

बात नासमझी की लगती है। लेकिन वस्तुतः जो सत्य की खोज में लग जाता है वह स्मृति में बाहरी बातों से अपना रिश्ता नहीं रखता है। उस व्यक्ति का अंतःकरण, अंतर्ज्ञान और अन्तर्दृष्टि से जुड़ जाता है। पदार्थ से परे सत्य की खोज में उसकी स्मृति का क्षेत्र ही बदल जाता है।

दूसरा शब्द है– समाधान। जिसे समस्या का समाधान स्वयं से नहीं मिलता वह समाधि में नहीं जा सकता। जो अपने आपसे पूछता है उसे समस्या का समाधान मिल जाता है। हमारे मस्तिष्क में इतनी शक्तियाँ हैं कि उससे हमें समस्याओं का समाधान मिलता ही है। समस्याएँ स्वतः मस्तिष्क की ही उपज हैं। हमें मस्तिष्क से काम लेना होगा।

तीसरा शब्द है–प्राणिधान। प्राणिधान याने चित्त की निर्मलता, समाधि की अवस्था। बगुले के ध्यान में एकाग्रता तो होती है, परन्तु शुभ ध्यान की श्रेणी में वह नहीं आती। पौराणिक कथा है– श्रीरामजी, लक्ष्मण और सीता के साथ जा रहे थे। पंपा सरोवर पहुँचने पर सबने देखा एक बगुला

एक टांग पर एकाग्रचित्त होकर खड़ा है। रामजी बोले–'पश्य लक्ष्मण। पंपायाम् बकः परमधार्मिकः। मदं मदं पदं धत्ते, जीवानां वघशंकया।।'

लक्ष्मण देखो–बगुला कितना धार्मिक है। एक टाँग पर खड़ा तपस्यारत है। साधु इर्यासमिति का पालन कर रहा है। धीरे धीरे पद रखते हुए जीवों को कुचलने से बचा रहा है।

राम की बात को पानी में मछलियों ने सुना। प्रतिवाद करते हुए मछली ने कहा–'बकः किं वर्ण्यते राम। येनाऽहं निष्कुलीकृता। सहचारी विजानीयात्, चारित्रं सहचारिणाम्।।' आशय कि राम आप बगुले की प्रशंसा कर रहे हैं। इसने मेरे कुल को नष्ट कर दिया है। सहचारी के चारित्र को सहचारी ही जान सकता है। कोई नया आदमी नहीं जान सकता।

हमारा प्रयत्न हो मन, वचन और काया सुप्राणिधान का। हमेशा शांति और समाधान की अवस्था में जी सकें। महाभारत में लिखा है–'यस्य वाङ्मनसी स्यातां, सम्यक प्राणीहिते सदा। तपस्त्यागश्च सत्यज्य सवै परमवाप्नुयात।।' जिसकी वाणी और मन दोनों प्राणिधान युक्त होते हैं, वह परम को प्राप्त कर सकता है।

लघुकथा

अनित्यता

एक सेठजी बडे सत्संग प्रेमी थे। पूरे परिवार में धार्मिक ज्ञान–चर्चा का रस लिया–दिया जाता रहता था। एक दिन सेठजी ने कहा–''मेरा जीवन सात दिन का हैं।'' मैं चाहिये वैसा परोपकार नहीं कर सका। अब शीघ्र कर लेना चाहता हूँ। यह सुनकर सेठानी बोली–''सात दिन की क्या बात? रात को जो मनुष्य सोता है, वह प्रातः कालीन सूर्य देखेगा भी या नहीं ? यह नहीं कहा जा सकता।''

यह सुनकर उनकी कन्या बोली–''जिस प्रकार पिताजी नहीं समझते, माताजी भी नहीं समझती, दो घड़ी बाद ही क्या क्या होगा ? मैं नहीं जानती।''

यह सब बातें सुनकर उनकी दासी बोली–न तो पिता और माता समझते है और न कन्या ही कुछ समझती है। जो श्वास बाहर निकल गई, सो निकल गई। वह लौटेगी भी या नहीं अर्थात् साँस छोड़ने के बाद साँस भी ली जा सकेगी या नहीं? सो नहीं कहा जा सकता। अतः सेठजी को जो भी परोपकार करना है, तत्काल प्रारंभ कर देना चाहिये।

प्रकाश गुन्देचा, जोधपुर (राज.)

मौन एकादशी के अवसर पर

शक्ति का स्रोत–मौन

(श्री अचलचन्द जैन)

भारतीय संस्कृति में मौन का विशेष महत्व है। इसे शक्ति संचय का माध्यम माना जाता है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में मागसर शुक्ला एकादशी को मौन एकादशी पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन लोग मौन रहते हुए व्रत रखते हैं। साधु सन्त एवं ऋषि मुनि एकान्त में रहकर मौन व्रत धारण करते हैं ताकि शक्ति संचय करने में बाधा उत्पन्न न हो। ज्यादा बोलने वाले को मौन रहने की सलाह दी जाती है, क्योंकि अधिक बोलने में शक्ति खर्च होती है और कभी–कभी वाद–विवाद की स्थिति भी निर्मित हो जाती है।

मौन, मानसिक शक्ति का प्रतीक है। मौनी व्यक्ति ज्यादा बोलने वाले अथवा शोर मचाने वाले व्यक्ति की अपेक्षा अधिक समय तक जीवित रहता है। उसका स्वास्थ्य भी अपेक्षाकृत अच्छा रहता है। यह मौन की शक्ति का प्रभाव है। अधिक बोलने से शरीर की प्राण शक्ति क्षीण होती है।

लम्बे समय मौन रहने के बाद व्यक्ति जब बोलता है तो उसकी वाणी में जादू सा असर होता है। महात्मा बुद्ध ने वाणी के प्रभाव से ही अंगुलीमाल डाकू जैसे क्रूर एवं निष्ठुर व्यक्ति का हृदय परिवर्तन किया था। यदि आप चिंतित हैं अथवा तरह–तरह के डर आपको सता रहे हैं तो मौन धारण कीजिए। आपको शान्ति मिलेगी। तात्पर्य यह है कि मौन रहकर कठिन से कठिन समस्याओं का हल पा सकते हैं। परन्तु मौन की पहली आवश्यकता है मन को शान्त एवं प्रसन्नचित्त रखना।

मौन रहते हुए गांधीजी अधिक से अधिक कार्य कर लेते थे। मौन के प्रति उनका आग्रह हमेशा रहा। गांधीजी मौनव्रत के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने लिखा है कि 'मौन में अन्तर्शक्ति जगाने की अत्यधिक क्षमता होती है। बोलना एक सुन्दर कला है, लेकिन मौन रहना उससे भी ऊँची कला है।' गांधीजी के अलावा विनोबा भावे भी मौन के समर्थक थे। कठिनाई आने पर वे मौन व्रत का सहारा लेकर कठिनाई पर पार पाते थे।

जैन धर्म में भी मौन का बड़ा महत्व है। कई जैन साधु–साध्वी चातुर्मास के दरम्यान नियत अवधि के लिए मौन व्रत धारण करते हैं। इस मौन के पीछे मुख्य कारण शक्ति का संचय करना है।

इस संचित शक्ति का उपयोग वे जनहित के कार्यों यथा उपदेश देने, मार्गदर्शन देने में करते हैं। मौनव्रत तपस्या की श्रेणी में आता है, जिससे अशुभ कर्मों का क्षय करने में मदद मिलती है।

धार्मिक भावना से प्रेरित होकर गाँवों में आज भी सोमवती अमावस्या (सोमवार को होने वाली अमावस्या) के दिन महिलाएँ सुबह जल्दी उठकर 2-3 घंटे का मौन व्रत रखती हैं। दैनिक कार्य निपटाकर देवदर्शन के पश्चात् ही मौनव्रत खोलती हैं। इस तरह आंशिक मौन व्रत की प्रथा आज भी गाँवों में प्रचलित है।

भारतीय संस्कृति में 'मौन' शब्द का अर्थ मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का संचय करने से है। इस तरह मौन शक्ति का स्त्रोत है। अतः हमें समय-समय पर मौन धारण कर ईश्वर की इस बहुमूल्य सौगात का लाभ उठाना चाहिए।

सत्पुरुषों का महत्व

एक बार मगध की सेना ने कौशल राज्य पर चढ़ाई कर दी और कौशल नरेश को उनके अंगरक्षकों तथा कुछ और व्यक्तियों के साथ एक स्थान पर घेर लिया। यह देखकर कौशल नरेश ने मगध के सेनानायक से कहा कि वह उनके सामने बिना किसी प्रतिरोध के समर्पण कर देंगे यदि उनके साथ आये हुए दस व्यक्तियों को यहाँ से सकुशल जाने दिया जाये। सेनानायक ने यह शर्त मान ली और दस व्यक्तियों को सकुशल छोड़ दिया । फिर उसने कौशल नरेश को बंदी बनाकर मगध सम्राट के सामने प्रस्तुत किया और उन्हें सारा विवरण भी सुनाया। यह सुनकर मगध सम्राट भी हैरान हो गये ।

उन्होंने कौशल नरेश से पूछा 'जिन व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए आपने स्वयं को कैद करवा दिया, वे कौन थे? कौशल नरेश बोले राजन, वे हमारे राज्य के महत्वपूर्ण विद्वान और संत थे। मैं भले मारा जाऊं मगर उनका जीवित रहना जरुरी है। वे रहेंगे तो राज्य में आदर्श कर्तव्य, दया, परोपकार, सत्यनिष्ठा आदि परंपराएं व भावनाएं जीवित रहेंगी। ऐसा होने से कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों के निर्माण का कार्य बराबर होता रहेगा तथा उपयुक्त शासक भी पुनः पैदा हो जायेंगे । राष्ट्र की सच्ची संपत्ति उसके श्रेष्ठ नागरिक ही होते है और उन्हें बनाने वाले होते हैं ये विद्वान और संत। मगध के राजा कौशल नरेश की ये बातें सुनकर दंग रह गये। उन्होंने कहा 'जिस राज्य में जनकल्याण में लगे सत्पुरुषों को इतना महत्व दिया जाता है, वहाँ की शासन-व्यवस्था में परिवर्तन की कोई जरुरत नहीं है। उससे तो हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए।' यह कहकर उन्होंने कौशल नरेश को मुक्त कर दिया ।

'क्षमापना अपना बनाती' परीक्षा के उत्तर

अ) अरिहंत

1. संयम, 2. मोहन विजय, 3. क्षमावीर, 4. विनय, 5. क्रोध, क्षमा, 6. श्रद्धा, 7. कुरगडु, 8. क्षमा प्रार्थना, 9. भजन, 10. झेर, 11. अति सूक्ष्म, 12. एकनाथ, 13. भविष्य, 14. वंकचूल, 15. प्रेमभाव, 16. मेतारज, 17. शास्त्र, सद्गुरु, 18. क्रोध,विजय, क्षमा, 19. अविनीत शिष्य, 20. जयंत गुरु के धाम, 21. जिनवाणी, 22. सीमंधर स्वामी, 23.160, 24. मन की, 25. समताधारी, 26. संयम, 27. सहने वालों की, 28. 154, 29. श्वांस की गति, 30. भ्रामरी प्राणायाम, 31. स्वयं को समझो, परखो, निरखो, 32. बहू-पूत, 33. सोनी-मुनि, 34. क्रोध, क्षमा गुण, 35. तीन, 36. पाँच, 37. मुझे क्रोध आता है, 38. पर्वाधिराज पर्युषण, 39. दो, 40. जयन्तसेन सूरिजी, 41. गुरु, 42. बुद्धि।

आ) सिद्ध

1.यतीन्द्र सूरिजी-पाठक, 2. जयन्तसेन सूरिजी पाठक, 3. युवक-चंडरुद्राचार्य, 4. जनरल-सैनिक, 5. जयन्तसेन सूरिजी-आराधक, 6. गजसुकुमाल-आत्मा, 7. व्यक्ति-पर्दा, 8. रामदास-शिवा, 9. संयमरत्न विजय-जनता, 10. हनुमानजी (महात्मा) एकनाथ, 11. बड़े-जनता/पाठक, 12. राजेन्द्र प्रसाद-सीताराम, 13. संत-ईश्वर, 14. चेलना रानी-भगवान, 15. आनन्द-गौतम स्वामी, 16. प्रवासी-प्रभु, 17. लेखक-पाठक, 18. गुरु-नूतन शिष्य, 19. महर्षि दयानन्द -शिष्य, 20. बहू-महिला, 21. पत्नी-पति, 22. सुकरात-शिष्य, 23. नित्यानंद वि.-पाठक, 24. राजेन्द्रसूरिजी-पाठक, 25. उदयन-चंडप्रद्योतन।

इ) आचार्य

1. शरीर/मन निवास/134, 2. आँख लाल/भी आँख लाल/50, 3. क्षमा/सुधर/4, 4. विद्वानों/विवाद/69, 5. हनुमानजी/ रामकथा/ 113, 6. मधु से/ मधुर/ 69, 7. खिलखिलाते/48, 8. महानता/

15, 9. बड़न/ ओछन/3, 10. अमृत/ विष/ 1, 11. मुलायम/ क्लिष्ट बेर/13, 12. त्यागी तपस्वी/ मुनि महाभाग/42, 13. दिल/धुँआ/47, 14. कंठ/बदलो, ढंग बदलो/117, 15. चीता/खूँखार जानवर/122, 16. श्रीकृष्ण/ 101/123, 17. माफ/आतम/41, 18. गुरु मर/क्रोध/59, 19. स्थिरता/शांति/जीवन 147, 20. वंदना/ शांति, शुचि/ प्रार्थना 145, 21. शरण /वैर भाव /141, 22. जयन्त /जीवन /136, 23. शांति /शास्त्र/श्रेय / धीरज-8, 24. मांगनी /देनी /शांत रहना-28, 25.केवल /मृगावती चंदना /57, 26. जयन्त/संयमरत्न प्र. /8

ई) उपाध्याय

1. जब क्रोध आये तो परिणाम पर विचार करो , 2. शस्त्र मारता है, शास्त्र तारता है, 3. क्रोध शत्रु को मार सकता है, 4. अजातशत्रु बनो,शत्रुता दफनाओ, 5. क्रोधी व्यक्ति सबका विश्वास और प्रेम गँवा बैठता है, 6. दिमाग को आईस फैक्ट्री बनाइए, 7. क्रोध ज्वाला है, 8. परिवार में प्रेम बांटेंगे तो भीतर सुख खोजेंगे, 9. स्वयं को बदलो, 10. क्रोध ज्यादा देर तक जीवित नहीं रहता, 11. जग में न देखी कहीं सूरत तुमसी, 12. क्या मैं तेरे ऊपर गुस्सा करूँ ?, 13. संस्कार बदलने की जरूरत है, 14. वह बड़ा सात्विक क्रोध है, 15. आप भी अजीब हैं, 16. अंतःपुर में आग लगा दो, 17. हे देव! ये ग्वाले नादान हैं, 18. ईर्ष्या से तो जीवन का पतन होता है, 19. अधिकार से काम कराना अंधकार है, 20. नीचे वाला ऊपर प्रतिष्ठित हो सकता है।

उ) साधु (केवल अ,ब,स, द ही लिखें)

1. ब, 2. स, 3. अ, 4. द, 5.अ, 6. ब, 7. स, 8. द, 9. द, 10.अ, 11. अ, 12. ब, 13. ब,14. स, 15. स, 16. अ, 17. स, 18. स, 19. अ, 20. द

ऊ) दर्शन-(द्वितीय पंक्ति के ही शब्द लिखें)

1. सहनशीलता, 2. आभूषण, 3. खंतिसूरा, 4. तेजस्वी, 5. समता, 6. वायु, 7. वशीकरण, 8. वैर, 9. नादान, 10. सोना, 11. क्षमा/कर्त्तव्य, 12. धरती, 13. दीवार, 14. मुनि, 15. जयन्तसेन, 16. मृगावती, 17. क्षमा-निधि,

18. दुर्गति, 19. क्रोध, 20. बहरा, 21. दुःखी, 22. क्षमा गुण, 23. पवित्र, 24. साता, 25. ज्ञान।

ए) ज्ञान

1. अर्जुन, 2. सूर्य, 3. तालाब, 4. बलराम, 5. प्रेम, 6. कलेक्टर, 7. पहचान, 8. मंत्री, 9. संन्यासी, 10. ब्रह्मा, 11. विनय, 12. जयणा, 13. आदर्श, 14. संस्कार, 15. सुधर्मास्वामी

ऐ) चारित्र

1. पनाह, 2. तप, 3. राह, 4. रास, 5. तीर, 6. तीन, 7. साधक, 8. अनशन, 9. जिन, 10. सम, 11. राइ, 12. सहारा, 13. तीन, 14. मन, 15. अमर ।

20) (ओ) तप

ए. ज्ञानीजन कहे क्रोध तणा फल, कड़वा हलाहल तजजो।

ब. क्रोड पूर्व संयम फल भांगे, करे तप नहीं लेखे लागे जी।

स. पाप इतने हुए मुझसे, उसका कोई भी माप नहीं।

द. पश्चाताप पाप खाता, परिग्रह दान खाता । क्रोधाग्नि क्षमा को खाता, कहता 'संयम' है।

इ. जग में रहे सवि जीव के प्रति मैत्री भाव बना रहे।

22. (औ) देव (बाएं से दाएं)

1. शास्त्र, 2. आराधना, 5. प्रभु, 6. प्रसारक, 7. गुण, 8. सिंह, 10. शालीनता, 12. विपाक, 15. प्राणी, 16. जनक

(ऊपर से नीचे)

1. शान्तिप्रसाद, 2. आभूषण, 3. धर्म, 4. वीर, 7. गुरो, 8. सिंचन, 9. सात्विक, 10. शान्ति, 11. तामसिक, 12. विलम्ब, 13. वाणी, 14. तज।

'क्षमापना अपना बनाती'
(ओपन बुक एक्झाम) के परिणाम

प्रथम से पंचम स्थान पाने वाले परीक्षार्थी

क्र.	नाम	प्राप्तांक	स्थान	गाँव/शहर
1.	कु. संतोष पिता गौतम बाफना	244	प्रथम	विजयवाड़ा
2.	श्रीमति जूली वीरेन्द्र गोलेचा	228	द्वितीय	उज्जैन
3.	ऋषभ पिता कांतिलाल मेहता	228	द्वितीय	जावरा
4.	श्रीमति प्रीति विनोद खाबिया	226	तृतीय	बड़नगर
5.	श्रीमति सुरभि हर्षित जैन	226	तृतीय	बड़नगर
6.	श्रीमति स्नेहा अक्षय नारेलिया	226	तृतीय	शाजापुर
7.	श्रीमति अपेक्षा कैलाश भण्डारी	225	चतुर्थ	विजयवाड़ा
8.	श्रीमति शांति श्रीपाल मेहता	225	चतुर्थ	उज्जैन
9.	श्रीमति सुषमा हुकुमचन्द चौरड़िया	225	चतुर्थ	उज्जैन
10.	श्रीमति वंदना प्रियांक पारख	225	चतुर्थ	सारंगपुर
11.	श्रीमति रिंकल नरेश वजावत	224	पंचम	चैन्नई
12.	श्रीमति स्वीटी प्रदीप जैन	224	पंचम	मैसूर
13.	श्रीमति मंजू उत्तम भण्डारी	224	पंचम	विजयवाड़ा
14.	श्रीमति प्रेमलता नरेन्द्र जैन	224	पंचम	इन्दौर

101 सांत्वना पुरस्कार के विजेता परीक्षार्थी

श्रीमति शीतल पंकज जैन, उज्जैन	श्रीमति वैशाली आशीष औरा, बड़नगर
श्रीमति सीमा प्रदीप पिपाड़ा, रतलाम	श्रीमति मीनल अभयकुमार नाहर, बड़नगर
श्रीमति प्रीति मनीष जैन, नरवर	श्रीमति संगीता भरत मोरखिया, मुम्बई
श्रीमति संगीता संजय खाबिया, बड़नगर	श्रीमान दिलीपकुमार सूरजमल जैन, उज्जैन
श्रीमति डॉ. प्रियंका सौरभ कटारिया, खाचरोद	श्रीमति विमला यशवंत सिरोहिया, निम्बाहेड़ा

101 सांत्वना पुरस्कार के विजेता परीक्षार्थी

श्रीमति सरोज सुशील गिरिया, बड़नगर	श्री प्रकाशचंद कपूरचंद जैन, उज्जैन
कु. जूली पिता टीकमचंद कोठारी, शाजापुर	श्रीमति स्नेहलता विमल गुगलिया, रतलाम
श्रीमति निर्मला महेन्द्र कोठारी, शाजापुर	श्रीमति किरणदेवी पारसमल भण्डारी, विजयवाड़ा
कु. प्रेरणा रूपेश चपड़ोद, जावरा	श्रीमति हंसा विक्रम जैन, विजयवाड़ा
कु.रियांशी संजय जैन, जावरा	श्रीमति अनिता सुशील सर्राफ, बड़नगर
श्रीमति शकुन्तला वर्द्धमान तलेरा, थांदला	श्रीमति अंजना राजेन्द्र कोठारी, शाजापुर
श्रीमति प्रतिभा नितिन पगारिया, उज्जैन	कु. श्यामा पिता बद्रीलाल नन्देड़ा, सरसी (जावरा)
श्रीमति संजना संदीप मौन्नत, रतलाम	श्रीमति पूजा नीलेश जैन, इन्दौर
श्रीमति खुशबू रजत जैन, कुक्षी	श्रीमति खुशबू प्रतापसिंह कोठारी, मन्दसौर
श्रीमति नीतु राजेश जैन, विजयवाड़ा	श्रीमति विमला दिनेश जैन, मुंबई
श्रीमति आयुषी रविन्द्र छाजेड़, शाजापुर	श्रीमति अर्पिता अभिषेक पारख, राजगढ़ (ब्यावरा)
श्रीमान देवेन्द्र श्रेणिकलाल सर्राफ, बड़नगर	श्रीमति चायना अभिषेक जैन, कुक्षी (धार)
श्रीमति प्राशी राजकुमार तिलगौता, इन्दौर	श्रीमति ज्योति प्रमोद बोराणा, रतलाम
श्रीमति संतोषी महावीर लुंकड़, मैसूर	श्रीमति सुनिता राजेन्द्र जैन, नैल्लोर
श्रीमति कुसुम राजेन्द्र गिरिया, उज्जैन	श्रीमति सीमा संजय संघवी, विजयवाड़ा
श्री संजय नीलू गिरिया, उज्जैन	श्रीमति रेखा प्रवीण जैन, चैन्नई
श्रीमति अंजना अजय गिरिया, उज्जैन	श्रीमति प्रीति पंकज औरा, बड़नगर
श्रीमति ललिता ललित जैन, विजयवाड़ा	श्रीमति संगीता अशोक चौपड़ा, बड़नगर
श्रीमति निशा संजय जैन, नैल्लौर	श्रीमति अंगूरबाला संतोष मूणत, जावरा
श्रीमति रानी प्रमोद तांतेड़, उज्जैन	श्रीमति ऊषा शांतिलाल सिसोदिया, निम्बाहेड़ा
श्रीमति साधना सुभाष खाबिया, बड़नगर	श्रीमति ऊषा प्रकाशचन्द जैन, रतलाम
श्रीमति शीतल सुधीर मेहता, जावरा	श्रीमति मंजू किशोर जैन, मैसूर
श्री गिरीश रमेश जैन, चैन्नई	श्रीमति अनिता पुखराज सियाल, बड़नगर
कु. खुशबू भंवरलाल जैन, विजयवाड़ा	श्रीमति आशा दिलीप ओरा, बड़नगर
श्रीमति प्रिया सतीश ओरा, बड़नगर	श्रीमति मेघा निलेश ओरा, बड़नगर

101 सांत्वना पुरस्कार के विजेता परीक्षार्थी

श्रीमति दिपाली रितेश चपड़ोद, जावरा	श्रीमति शीला प्रकाशचन्द जैन, बड़नगर
श्रीमति शीला सुशील चौपड़ा, बड़नगर	कु. दिव्या पिता राजकुमार जैन, निम्बाहेड़ा
श्रीमति कुसुम ताराचन्द मेहता, गौतमपुरा	श्रीमति अनिता विमलेश जैन, बड़नगर
श्री प्रदीप पिता राजमल जैन, उज्जैन	श्रीमति स्वाती निकित कुमार कोठारी, शाजापुर
श्रीमति ललिता पारसमल पालेचा, निम्बाहेड़ा	श्रीमति हंसा कुंदनमल भटेवरा, बड़नगर
श्रीमति अनिता राजेन्द्र कुमार तलेसरा, बड़नगर	श्री बलवानदास मंगलदास बैरागी, शाजापुर
श्रीमति प्रीति राजेन्द्र कोठारी, उज्जैन	श्रीमति रेणु विनोदकुमार बम, बड़नगर
श्रीमति डॉ.अंगूरबाला ऋषभ सेठिया, निम्बाहेड़ा	श्रीमति बेबीरानी अरिहंत कुमार जैन, करनुल
श्रीमति मंजू प्रकाशचंद सकलेचा, नलखेड़ा	श्रीमति मधु बाबुलाल बागरेचा, चैन्नई
श्रीमति मंगला विपिन नाहर, चितौड़गढ़	कु. आरती पिता नंदलाल चौरड़िया, निम्बाहेड़ा
श्रीमति खुशबू विशाल जैन, कुक्षी	श्रीमति शकुन्तला अभयकुमार जैन, निम्बाहेड़ा
श्रीमति वर्षा नितिन सेठिया, निम्बाहेड़ा	श्रीमति शिल्पा पंकज जैन, शाजापुर
श्रीमति संगीता राजेशभाई, सूरत	श्रीमति पिंकी विनोदकुमार जैन, विजयवाड़ा
श्रीमति नेहा सौरभ ओरा, जावरा	श्रीमति मधु प्रकाश पोखरना, अजमेर
श्री मोहित पिता मनोज जैन, शाजापुर	श्री विजयकुमार सौभाग्यमल राठौर, उज्जैन
श्रीमति संगीता महावीर जैन, चित्तलदुर्गा (कर्ना.)	कु.यशा पिता चंपालाल जैन, चैन्नई
कु. सौम्या आलोक कुमार बरडिया, महिदपुर रोड	श्रीमति शकुंतला वीरेन्द्र खाबिया, मंदसौर
श्रीमति इन्दुबाला मुकेश चत्तर, रतलाम	श्रीमति प्रीति दिनेश गाँधी, नैल्लूर
श्री प्रकाश मफतलाल वोहरा, मुंबई	कु. जयना पिता राजेन्द्र जैन, बड़नगर
कु. मयूरी पिता सुमतिलाल जैन, उज्जैन	कु. संदीपा पिता पारसमल मूणत, महिदपुर
श्रीमति मंगला महावीर जैन, चित्तलदुर्गा	

रजत रश्मियाँ

रु. 1000=00 श्री रामलालजी गिरिया भाटपचलाना की स्मृति में रविराज रेस्टोरेंट की ओर से

रु. 500=00 मुनिश्री संयमरत्नविजयजी म.सा. के उपदेश से।

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

જુગ જુગ જીવો જિન શાસનના શિરતાજ

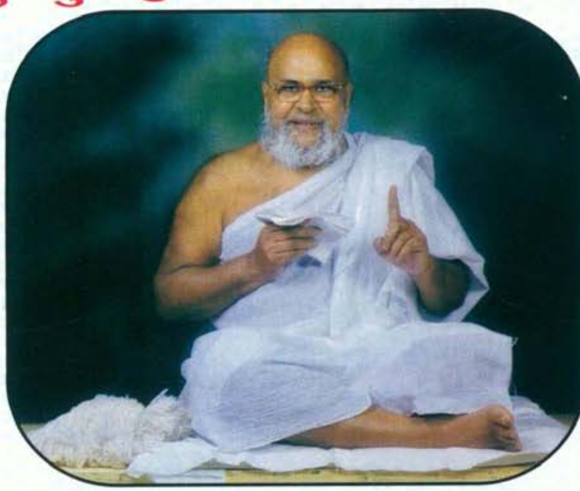

સંવત ૨૦૭૨ ના કારતર વદ-૧૩ ને બુધવાર તા. ૯-૧૨-૨૦૧૫ ના મંગલમય દિવસે યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ૭૯મા જન્મદિવસ તથા ૮૦ મા વર્ષમાં પ્રવેશ પ્રસંગે અંતઃ કરણ પૂર્વકની આગોતરી હાર્દિક શુભેચ્છા અને વધાઈ સાથે કોટી કોટી વંદના.

શાશ્વતધર્મ-ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર
સુરેશ સંઘવી-નડીઆદ

શ્રી સકળ સંઘને નૂતન વર્ષાભિનંદન

જીવન વ્યવહારોની સમરસતાના તાલાવાણાથી ગુંથાયેલા હોવા છતાં શ્રી જૈન સંઘોના વિવિધ સ્થળોએ વસવાટ કરતા શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ મોટી સંખ્યામાં જોડાઈ તપ-આરાધના સંપન્ન કરી રહ્યા છે તેના પરથી નિશ્ચિતપણે કહી શકાય કે ધર્મ સંસ્કૃતિએ શાસનનો મહિમા અન પ્રભાવ પ્રસ્થાપિત કર્યો છે.

કર્મસતાએ કોઈની પણ કસોટી કરવામાં કસર છોડી નથી તેમ છતાં પણ તેની સામે શાસન અને ધર્મીજનોનો પુરૂષાર્થ તેમજ દેવ, ગુરૂ, ધર્મ પ્રત્યે રહેલી શ્રધ્ધાએ અપૂર્વ સુખશાતા બક્ષી છે.

ધર્મમય વાતાવરણ શ્રી સકળ સંઘને નવી સદીના બૌધ્ધિક સર્વોપરિતાના યુગમાં ધર્મ આરાધના ધ્વારા આત્મશુધ્ધિનું અનુપમ સોપાન કરવા સાથે પુણ્યનું ભાથું બાંધવા શાસન-સમાજ અને ગચ્છ માટે સક્ષમ બનવાની પ્રેરણા આપે છે. ભૌતિક વિકાસ આધુનિકતા માટે અનિવાર્ય છે તેમ માનવ સંસ્કૃતિનો વિકાસ પણ અનિવાર્ય છે. સ્વસ્થ સંસ્કારી ધર્મીજનો શાસન-સમાજની આધારશીલા છે.

જે દિલના દેવાલયને અજવાળે... અંતરના આકાશને ઉઘાડે... પ્રાણોને પ્રેમથી પલાળે અને ધર્મ આરાધના ધ્વારા દેહના દીપને ઉજમાળે એનું નામ દિવાળી સહુ જીવો સાથે મન જો મળે... વેરની ગાંઠો ગળે અને દિ'જો વળે તોજ સાર્થક બને દિવાળી.

દર વરસે દીપ સે દીપ જલે નો સંદેશો લઈ આવે છે આ દિવાળીનું પર્વ અને સ્વસ્થ સંપન્ન સંસ્કાર સાથે ધર્મ આરાધના ધ્વારા વિશ્વમાં દિવ્ય પ્રકાશ આપવાનું આહવાન કરે છે નવા વર્ષની સુપ્રભાત... માટે જીનેશ્વર પરમાત્માની અસીમ કૃપા.. દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાન ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભાશુભ આશિર્વાદ મેળવી સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક સુદ-૧ નવા વરસ ની સુપ્રભાતથી ધર્મઉધ્ધમમાં જોડાઈ જીવન સફરની શરૂઆત કરી આવતા વરસની દિવાળે ને પણ સફળ બનાવીએ તેવી અંતઃકરણ પૂર્વકની શુભેચ્છા સાથે સકળ સંઘને નૂતન વર્ષાભિનંદન.

લિ. શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર
સુરેશ સંઘવી

ગુરૂજન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિમુનિમંડળ અને સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં તા. ૨૧-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ અ.ભા. રાજેન્દ્ર જૈન તરૂણ પરિષદના અધિવેશન તથા તા. ૨૨-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ તેમજ મહિલા પરિષદના વાર્ષિક સંમેલન નો કાર્યક્રમ સંપન્ન વિસ્તૃત અહેવાલ આવતા અંકે....

ગુરૂ એક ભક્તો અનેક...
પૂજ્યશ્રી પ્રત્યે રહેલી શ્રધ્ધા સાથે શિસ્ત જરૂરી

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયની અને દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ગચ્છની વિશ્વમાં ખ્યાતિ ફેલાવનાર યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ સકળ સંઘને ખોબલે ખોબલે વાસક્ષેપ કરી આશિર્વાદ આપ્યા છે જે પુણ્યત્માના આશિર્વાદથી અત્યારે ત્રિસ્તુતિક સમુદાયના ભક્તો સુખ સાહેબીમાં આળોટે છે અને ધર્મ ધ્યાનમાં જોડાય છે પૂજ્ય વર્તમાન ગુરૂદેવ પ્રત્યે જે શ્રધ્ધાભક્તિ રહેલી છે તે માટે અન્ય સમુદાયના સંત મહાત્માઓ તેમના પ્રવચનમાં કહે છે કે ગુરૂ ભક્તિ જોવી હોય તો ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના વર્તમાન આચાર્યદેવના વંદન-દર્શન કરી આવજો.

વર્તમાન સમયમાં પૂજ્ય ગુરૂદેવની ઉંમર ૮૦ વર્ષની થવા આવી છે વારંવાર સ્વાસ્થ્ય માં ફેરફાર થતો રહે છે. તો પણ શ્રધ્ધાળુ ભક્તો પૂજ્યશ્રી પાસે વાસક્ષેપ કરાવાનો આગ્રહ રાખે છે ચોક્કસ શ્રધ્ધાનો વિષય છે પરંતુ દરેક શ્રધ્ધાળુ ભક્તોએ તેમના સ્વાસ્થ્યનો વિચાર કરી ધક્કા મુકી કર્યા સિવાય બે ફુટના અંતરથી દુર રહી વંદન-દર્શનના સમયે લાઈનબધ્ધ શિસ્ત જાળવી દર્શન કરી આશિર્વાદ મેળવવા જોઈએ તોજ ખરી શ્રધ્ધાભક્તિ કરી કહેવાય ગુરૂ એક છે ભક્તો અનેક છે. પાકટ ઉંમરે પૂજ્યશ્રીનો થાક ઉતારવાની ફરજ આપણા સહુની છે. શ્રધ્ધા તો એવી રાખવાની છે કે આપણા હૃદય મંદિરમાં પૂજ્યશ્રી સ્થાપિત થવા જોઈએ અને શરીરના રૂંવાડે રૂંવાડે જયંત ગુરૂ બિરાજમાન હોવા જોઈએ વધુ લખાયું હોય તો મિચ્છામિ દુઃકડમ

લિ. સુરેશ સંઘવી-નડીઆદ

જૈન જગતના નભમંડળના ચમકતા સિતારા તુલ્ય શાસનના શિરતાજ...

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાત્મક વાણી દ્વારા

વોરા મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવારમાં આવેલ શ્રધ્ધાભક્તિનો જયઘોષ વિશ્વમાં ગાજી ઉઠ્યો.. !!!

જૈન જગતના નભ મંડળના ચમકતા સિતારા તુલ્ય શાસનના શિરતાજ, ગચ્છ પ્રગતિના ઉતુંગ શિખરો સર કરનાર યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાત્મક વાણી દ્વારા અશક્ય જણાતા કાર્યો શક્ય બની જાય છે. પૂજ્યશ્રીની માર્મિક વાણીથી પ્રેરાઈ હજારો શ્રધ્ધાવંત ભક્તોએ વિક્રમ સર્જક તપ આરાધનાઓ કરી છે અને કરવા જઈ રહ્યા છે. એવો જ એક શ્રધ્ધાનો સૂરજ શ્રી પેપરાલ તીર્થે યોજાયેલ ઉપધાન તપના લાભાર્થી વોરા મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવાર માટે ઉગી નીકળ્યો હતો.

શ્રી નવકાર મહામંત્રની આરાધના, પર્યુષણ પર્વની ભવ્ય ઉજવણી, ઉપધાન તપ તેમજ વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોના પુલકિત અવસરની ઉજવણીના આનંદથી શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્ય ધરા હરખાઈ ઉઠી છે.

પૂજ્યશ્રીના પ્રથમ શિષ્યરત્ન તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. થી છેલ્લા શિષ્યરત્ન સુધીમાં કાર્યશક્તિ કેટલી બુલંદ છે તેનો અનુપમ પરિચય શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતેના ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ ધ્વારા સકળ સંઘે જોયો છે.

આ ચાતુર્માસ દરમ્યાન પંચ મંગલ મહાશ્રુત સ્કંદાધિ મહા મંગલકારી ઉપધાન તપની આરાધના કરાવવા યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલને પ્રેરણા કરી હતી અને તે અંગેની તૈયારીઓ આદરી દેવાઈ હતી. ઉપધાન તપની આરાધના કરાવવાનો લાભ શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવારને મળતાં સમસ્ત

પરિવાર હરખાઈ ઉઠ્યો હતો અને શ્રી મહેન્દ્રભાઈ (બાબાભાઈ) નો આનંદસાગર ઘુઘવાટા કરવા લાગ્યો હતો. લાભાર્થી શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવાર દ્વારા ગુરૂજન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા ખાતે યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ અને વિશાળ સંખ્યામાં સાધ્વીજી મંડળની પાવનકારી નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૧ ના ભાદરવા સુદ-૧૦ ને બુધવાર તા. ૨૩-૯-૨૦૧૫ ના રોજથી આસો વદ-૧૨ ને રવિવાર તા. ૮-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ સુધી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધાદિ ઉપધાન તપનું આયોજન કરાયું હતું.

ઉચ્ચ કોટીની ઉદારતા સાથે આ આયોજનને ચાર ચાંદ લગાવવા અને વોરા પરિવારની ભાવનાને સાકાર કરવા સાથે અદ્ભુત સફળતા અપાવવા શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ તેમજ દરેક પરિષદોએ જવાબદારી ઉપાડી લીધી હતી. આ ભવ્ય આયોજનમાં ૬૫૦ જેટલા ઉપધાન તપના આરાધકો જોડાયા હતા. તેની યશોગાથા ચારેય ફીરકાઓના સંઘોમાં ગવાઈ રહી છે. ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થના આંગણે ઉપધાન તપના આયોજનમાં ૫૦ દિવસ દરમ્યાન કોઈ આરાધકની કુડી આંખપણ દુખવા ન આવી હોય અને વિશાળ સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હોય તેવો શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયનો પ્રથમ પ્રસંગ હતો.

ત્યાગની પ્રતિમૂર્તિ, માનવ માત્રના કલ્યાણ અને સમભાવ દાખવતા, તીર્થ પ્રભાવક, દીક્ષા દાનેશ્વરી, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ ઉપધાન તપ આરાધકોની ભાવનાને બુલંદ બનાવી હતી. સાચા અર્થમાં રાષ્ટ્રસંત બનીને ધાર્મિકતાનો ધોધ વરસાવ્યો હતો. પૂર્વ ભવોમાં અનંતવાર જન્મ ધારણ કરી કરેલા પાપોની નિર્જરા માટે પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ દ્વારા અપાયેલ માર્મિક વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈ વિશાળ સંખ્યામાં ૬૫૦ થી વધુ આરાધકો ઉપધાન તપની આરાધનામાં જોડાયા હતા. અપૂર્વ કોટીની ઉદારતા સાથે વોરા પરિવારની અનુમોદનીય સેવાભક્તિ અને સંઘ ભક્તિ જોઈ આખો સમાજ

અભિભૂત થઈ ગયો હતો. ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થના આંગણે શ્રી મધુકર મહાવારની છત્ર છાયામાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૧ ના આસો વદ-૧૨ ને રવિવાર તા. ૮-૧૧-૧૫ ના રોજ ઉપધાન તપના ૪૪૦ આરાધકો મોક્ષમાલા પરિધાન કરવાના હોઈ રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ અને ગુજરાતના દરેક શહેરોમાંથી સગા-સ્નેહીઓ અને શ્રધ્ધાળુ ભક્તો શ્રી પેપરાલ તીર્થેઆવવા લાગ્યા હતા. આસો વદ-૧૧ ની સાંજે થરાદમાં મેળા જેવું વાતાવરણ સર્જાઈ ગયું હતું. પેપરાલ, લાખણી અને થરાદના તમામ વેપારીઓનો ધંધો આવી કાળઝાળ મોંઘવારીમાં પણ ત્રણ ગણો થઈ ગયો હતો અને નાના વેપારીઓને મોઢે તો એવું પણ સાંભળવા મળ્યું હતું કે દર વરસે જયંત બાપજી આટલામાં જ ચોમાસું કરે તો અમારૂ કલ્યાણ થઈ જાય. ડીસાથી થરાદ સુધી ક્યાંય પાંચ છ વ્યક્તિનો સમુહ દેખાય એટલે જીપવાળા પ્રથમ પુછી લેતા કે પેપરાલ જવું છે ?

માળા રોપણના શુભ દિવસે ૧૦ હજારથી વધુ શ્રધ્ધાળુઓ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ને આંગણે ઉમટી પડ્યા હતા અને ચઢાવાના લાભાર્થી પરિવારો દ્વારા પ્રથમ માળા પરિધાન બાદ ક્રમવાર માળા રોપણનો કાર્યક્રમ ભવ્ય રીતે સંપન્ન થયો હતો.

માળા પરિધાન કાર્યક્રમ દરમ્યાન શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં નિરવ શાંતિ વચ્ચે જાણે કુટુંબ મેળો મળ્યો હોય તેવું લાગી રહ્યું હતું. વોરા પરિવારે દરેક આરાધકોને મળી શુખશાતા પુછી હતી ત્યારે આરાધકો અને લાભાર્થી પરિવારોની હર્ષની મારી આંખો ભીની બની ગઈ હતી અને સહુની આંખોમાં ઝળઝળીયા આવી ગયાં હતાં.

ઉપધાન તપની આરાધના નિર્વિઘ્ને પૂર્ણ થતાં અને સમાજજનોની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે માળા રોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થતાં ઢોલના ધબકારા અને બેન્ડના રણકારા સાથે સમસ્ત શ્રધ્ધાવંત ભાવિકોએ આનંદ અને ઉલ્લાસના ભાવો છલકાવી હૈયાની હેલી વરસાવી દીધી હતી અને માળા રોપણ કાર્યક્રમ દીપી ઉઠ્યો હતો.

શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવારમાં આવેલ શ્રધ્ધાભક્તિનો જયઘોષ વિશ્વમાં ગાજી ઉઠ્યો હતો.

૨૦૭૧ ના અંતિમ દિવસે પ્રભુ મહાવીર નિર્વાણની ઉત્સાહ ભેર ઉજવણી...

શ્રી પેપરાલ તીર્થે મધુકર મહાવીરની છત્ર છાયામાં શ્રી ગૌતમસ્વામી છંદ, પૂજ્યશ્રીના માંગલિક આશિર્વાદ માટે ઉભરાયો શ્રધ્ધાવંત ભક્તોનો માનવ મહેરામણ...

પૂજ્યશ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં હજ્જારો ભક્તોએ બેસતા નૂતન વર્ષ પર્વને આનંદથી આવકાર્યું.

મોક્ષમાળા પહેરી પેપરાલમાં ઢોલ ધ્રબુક્યા થરાદમાં

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે ઉપધાન તપના અંતિમ ચરણે એટલે કે વાઘ બારસના શુભ દિવસે મોક્ષમાળા પરિધાન કાર્યક્રમ સંપન્ન થવાનો હોઈ અને સંઘવી-દેસાઈ પરિવારના કુળદેવી માતાજીની (ગોત્રજ) પડલી ભરવા આવતા પરિવારજનો એમ મળી કુલ દસ હજારની સંખ્યાથી વધુ સમાજજનો વાઘ બારસના રોજ શ્રી પેપરાલ તીર્થના આંગણે ઉમટી પડ્યા હતા. યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં અંદાજીત ૪૪૦ ઉપધાન તપના આરાધકોએ મોક્ષ માળા પરિધાન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. આ કાર્યક્રમ વેળાએ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં આભને આંબતો ઉત્સાહ જે રીતે વ્યાપી ગયો હતો તેનું વર્ણન શબ્દોમાં થઈ શકે તેમ નથી મોક્ષમાળા પહેરી પેપરાલમાં ઢોલ ધ્રુબક્યાં થરાદમાં ઉપધાનતપના આરાધકોએ પૂજ્યશ્રીના આશિર્વાદ મેળવી વાજતે-ગાજતે થરાદનગરના આંગણે પધરામણી કરી હતી શેરીએ શેરીએ આનંદનો સાગર લહેરાઈ ગયો હતો. આરાધકોને શાતા પુછવા માટે પડાપડી થઈ હતી. આઠ વર્ષથી ૭૦ વર્ષના ૪૪૦ આરાધકોએ ૪૭ દિવસની આ કઠોર તપશ્ચર્યા કરી વિક્રમ સર્જયો હતો.

શ્રી પેપરાલ તીર્થ થી થરાદ ખાતે ઉમટી પડેલા જૈન પરિવારોએ સંવત ૨૦૭૧ ના અંતિમ દિવસે પ્રભુ મહાવીર નિર્વાણની ઉત્સાહભેર ઉજવણી કરી હતી સમાજના હજ્જારો ભાવિકોએ નવા વર્ષની પૂર્વ સંધ્યાએથી માંડીને મોડી રાત સુધી મોટા દેરાસરના પરિસરમાં પ્રભુ ભક્તિના સ્તવનો ગાઈને રમઝટ

મચાવી દીધી હતી. દેરાસરને ઝગમગતા દીવડાઓથી ઝળહળતું બનાવી દેવાયું હતું અને પ્રભુજીને ભવ્ય અને દિવ્ય અંગરચના કરાઈ હતી તેમજ સમુહ આરતીનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. પ્રભુ મહાવીર નિર્વાણની ઉજવણી કરી હતી અને દિવાળી પર્વની આપલે કરી ખુશાલીના આ પર્વને ધામધૂમ પૂર્વક ઉજવ્યું હતું. દિવાળીના પર્વને અનેક વિધ રીતે ઉજવનારા થરાદ, ડીસા, લાખણી, જેતડા વિગેરે સ્થળોએથી ભાવિકો શ્રી ગૌતમ સ્વામી કેવળ જ્ઞાન એટલે કે બેસતા નૂતનવર્ષ પર્વને આનંદથી આવકારવા સાથે છંદ તેમજ પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ દ્વારા માંગલિક નું શ્રવણ કરવા શ્રી મધુકર મહાવીરની છત્રછાયામાં શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે શ્રધ્ધાવંત ભક્તોનો માનવ મહેરામણ ઉભરાઈ ગયો હતો.

સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક સુદ-૧ ને ગુરૂવાર તા. ૧૨-૧૧-૨૦૧૫ ની સુપ્રભાતે શ્રી પેપરાલ તીર્થના શ્રી મધુકર મહાવીર જિનાલયે પહોંચેલા હજ્જારો શ્રધ્ધાળુ ભક્તોએ ઘંટારવની સાથે પ્રભુ સ્તુતિ અને સ્તવનોની રમઝટ મચાવી પૂજ્યશ્રી સપરિવારના સાનિધ્યમાં પહોંચી ગયા હતા અને નૂતન વર્ષ પણ ધર્મ માહોલમાં સંપન્ન થાય તેવા પૂજ્યશ્રી પાસે આશિર્વાદ માંગ્યા હતા. પૂજ્યશ્રી દ્વારા માંગલિકનું શ્રવણ કરી બન્ને કરકમળો દ્વારા આશિર્વાદ મેળવી ધન્યતા અનુભવી હતી. અને પ્રભુજી અને ગુરૂદેવની સેવા પૂજામાં લાગી ગયા હતા. ત્યારબાદ નવકારશીને ન્યાય આપી રંગ બેરંગી કપડામાં સજ્જ યુવા-યુવતીઓએ ધાર્મિક પરંપરા મુજબ વડીલોના આશિર્વાદ મેળવ્યા હતા. અને સહુ કોઈએ વિતેલા વર્ષની તમામ ઘટનાઓને ભૂલી નૂતનવર્ષ સમૃધ્ધિમય, સુખદાયી, યશસ્વી અને શાંતિ આપનાર બની રહે તેવી શુભેચ્છા પાઠવી અરસ પરસ સાલ મુબારકની આપલે કરી હતી આ રીતે દિવાળી પર્વ અને બેસતા વર્ષની ઉજવણી સહુએ આનંદ ઉલ્લાસ સાથે કરી હતી. આજના દિવસે ગુરૂ પૂજનનો લાભ વોહેરા કાન્તાબેન બાબુલાલ પરિવારે લીધો હતો.

શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર પૂજ્યશ્રીના વરદ્હસ્તે શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદને વડીદીક્ષા અપાઈ...

શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે ચાતુર્માસ ગાળી રહેલ ૨૨ શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદને ઉત્રાધ્યના સૂત્રનાં જોગ ચાલી રહેલ હતા તે પૂર્ણ થતાં યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની નિશ્રા તેમજ તેમના વરદહસ્તે સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક સુદ-૭ ને બુધવાર તા. ૧૮-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ ૨૨ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદને વડી દીક્ષા અપાઈ હતી જે શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના નામ અત્રે પ્રસ્તુત છે.

(૧) પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી પવિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.
(૨) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી પરાગનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૩) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી વીરનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૪) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મેઘનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૫) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મેરૂનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૬) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મંગલનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૭) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મૌલીનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૮) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૯) પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સુવ્રતનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૦) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી શ્રી સોહમપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૧) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી નમિનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૨) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી આદિનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૩) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી શ્રેયાંશ નિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૪) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી તીર્થનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૫) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી સત્વપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૬) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી મંત્રકલાશ્રીજી મ.સા.
(૧૭) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી અર્પણ પ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૮) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી નયનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૯) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા.
(૨૦) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી પદરેખાશ્રીજી મ.સા.
(૨૧) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી શુભનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૨૨) પૂજ્ય સાધ્વીશ્રીજી ઉદયનિધિશ્રીજી મ.સા.

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થના પ્રથમ ચાતુર્માસની પ્રચંડ સફળતાના સાચા સારથી.... તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી, મુનિરાજશ્રી સિધ્ધરત્નવિજયજી, મુનિરાજ શ્રી વિદ્વદરત્નવિજયજી અને મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.

મુનિભગવંતોની જહેમત રંગ લાવી.....

ગુરૂ જન્મભૂમિ પાવનધામ પેપરાલ તીર્થના આંગણે યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવન નિશ્રામાં યોજાયેલ સંવત ૨૦૭૧ ના વર્ષના ચાતુર્માસને સાંપડેલી પ્રચંડ સફળતાની સર્વત્ર નોંધ લેવાઈ છે ત્યારે આ ચાતુર્માસના પ્રચંડ સફળતાનો શ્રેય જો કોઈને આપવો જ હોય તો આ શ્રેયના સાચા હકદાર છે. તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી, મુનિરાજ શ્રી સિધ્ધરત્નવિજયજી, મુનિરાજ શ્રી વિદ્વદરત્ન વિજયજી અને મુનિરાજ શ્રી નિપૂણરત્ન વિજયજી મ.સા. તેમજ અન્ય સાધુ ભગવંતો.

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થના આ ચાતુર્માસની મહતાના લીધે શ્રી જયંત સેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ તેમજ દરેક સંઘોના અગ્રણીઓ પરિષદના કાર્યકરો વિગેરેએ વિવિધ પ્રાસંગિક વ્યવસ્થાની જવાબદારી ઉપાડી લીધી હતી. પરંતુ કામે

લાગી ગયેલા કમીટી સભ્યો, અગ્રણીઓ તેમજ કાર્યકરોને સમયે સમયે કુશળ માર્ગદર્શન પુરૂ પાડી આ ધર્મોત્સવની સફળતા માટે સતત પ્રવૃત રહેલા ઉપરોક્ત મુનિ ભગવંતોની જહેમત આ ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ ને દિપાવવામાં કારણૂત બની હતી.

મુનિરાજશ્રી નિપૂણરત્ન વિજય.

નિપૂણ એટલે કુશળ, વ્યાખ્યાનમાં કુશળ, વિનયગુણમાં કુશળ, વાતચીતની કળામાં કુશળ, લેખનમાં પણ કુશળ આ મુનિરાજ ભગવંતની વ્યાખ્યાન કળા એટલી અદ્ભુત છે કે એમના પ્રવચનમાં ભીડ જામે છે.

શ્રી સિદ્ધિગિરિરાજાના ૧૦૮ નામો
(નવ્વાણુપ્રકારી પૂજાના આધારે ૯૯ તથા અન્ય)

૧ શ્રી શત્રુંજય ગિરિરાજાય નમઃ
૨ શ્રી રૈવતગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૩ શ્રી બાહુબલિ ગિરિરાજાય નમઃ
૪ શ્રી મરૂદેવ ગિરિરાજાય નમઃ
૫ શ્રી સિદ્ધરાજ ગિરિરાજાય નમઃ
૬ શ્રી સિદ્ધક્ષેત્ર ગિરિરાજાય નમઃ
૭ શ્રી સહસ્રકમલ ગિરિરાજાય નમઃ
૮ શ્રી મુક્તિનિલય ગિરિરાજાય નમઃ
૯ શ્રી શતકૂટગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૦ શ્રી સિદ્ધાચલ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૧ શ્રી ઢંકગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૨ શ્રી કોડીનિવાસ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૩ શ્રી વિમલાચલ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૪ શ્રી પુંડરીકગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૫ શ્રી ભગીરથ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૬ શ્રી કદંબગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૭ શ્રી લોહિત્યગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૮ શ્રી તાલધ્વજગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૧૯ શ્રી પુણ્યરાશિ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૦ શ્રી મહાબલગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૧ શ્રી દ્રઢશક્તિ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૨ શ્રી ભદ્રંકર ગિરિરાજાય નમઃ
૨૩ શ્રી શાશ્વતગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૪ શ્રી આનંદગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૫ શ્રી વિજયાનંદ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૬ શ્રી શતપત્ર ગિરિરાજાય નમઃ
૨૭ શ્રી મહાપીઠ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૮ શ્રી સુરગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૨૯ શ્રી મહાગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૦ શ્રી કર્મસૂદન ગિરિરાજાય નમઃ
૩૧ શ્રી મહાનંદ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૨ શ્રી કૈલાસગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૩ શ્રી પુષ્પાદંત ગિરિરાજાય નમઃ
૩૪ શ્રી શ્રીપદ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૫ શ્રી ભવ્યગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૬ શ્રી જયંતગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૭ શ્રી હસ્તગિરિ ગિરિરાજાય નમઃ
૩૮ શ્રી સિદ્ધશેખર ગિરિરાજાય નમઃ
૩૯ શ્રી રાજરાજેશ્વર ગિરિરાજાય નમઃ
૪૦ શ્રી મહાયશ ગિરિરાજાય નમઃ
૪૧ શ્રી માલ્યવંત ગિરિરાજાય નમઃ
૪૨ શ્રી મુક્તિરાજ ગિરિરાજાય નમઃ
૪૩ શ્રી જ્યોતિસ્વરૂપ ગિરિરાજાય નમઃ
૪૪ શ્રી પૃથ્વીપીઠ ગિરિરાજાય નમઃ

૪૫ શ્રી દુ:ખહર ગિરિરાજાય નમ:
૪૬ શ્રી મણિકંત ગિરિરાજાય નમ:
૪૭ શ્રી વિશાલભદ્ર ગિરિરાજાય નમ:
૪૮ શ્રી મેરૂમહીધર ગિરિરાજાય નમ:
૪૯ શ્રી કંચનગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૫૦ શ્રી આનંદધર ગિરિરાજાય નમ:
૫૧ શ્રી પુણ્યકંદ ગિરિરાજાય નમ:
૫૨ શ્રી જયાનંદ ગિરિરાજાય નમ:
૫૩ શ્રી પાતાલમૂલ ગિરિરાજાય નમ:
૫૪ શ્રી વિભાસ ગિરિરાજાય નમ:
૫૫ શ્રી વિલાસ ગિરિરાજાય નમ:
૫૬ શ્રી જગતારણ ગિરિરાજાય નમ:
૫૭ શ્રી અકલંક ગિરિરાજાય નમ:
૫૮ શ્રી અકર્મક ગિરિરાજાય નમ:
૫૯ શ્રી પુરૂષોત્તમ ગિરિરાજાય નમ:
૬૦ શ્રી મહાતીર્થ ગિરિરાજાય નમ:
૬૧ શ્રી હેમગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૬૨ શ્રી અનંતશક્તિ ગિરિરાજાય નમ:
૬૩ પર્વતરાજ ગિરિરાજાય નમ:
૬૪ શ્રી સુભદ્રગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૬૫ શ્રી અજરામર ગિરિરાજાય નમ:
૬૬ શ્રી ક્ષેમંકર ગિરિરાજાય નમ:
૬૭ શ્રી અમરકેતુ ગિરિરાજાય નમ:
૬૮ શ્રી ગુણકંદ ગિરિરાજાય નમ:
૬૯ શ્રી સહસ્રસ્ત્રપત્ર ગિરિરાજાય નમ:
૭૦ શ્રી તમોકંદ ગિરિરાજાય નમ:
૭૧ શ્રી શિવંકર ગિરિરાજાય નમ:
૭૨ શ્રી કર્મક્ષય ગિરિરાજાય નમ:
૭૩ શ્રી મહાપદ્મ ગિરિરાજાય નમ:
૭૪ શ્રી વિશ્વાનંદ ગિરિરાજાય નમ:
૭૫ શ્રી વિજયભદ્ર ગિરિરાજાય નમ:
૭૬ શ્રી ઈન્દ્રપ્રકાશ ગિરિરાજાય નમ:
૭૭ શ્રી કપર્દીવાસ ગિરિરાજાય નમ:
૭૮ શ્રી મુક્તિનિકેતન ગિરિરાજાય નમ:
૭૯ શ્રી કૈવલદાયક ગિરિરાજાય નમ:
૮૦ શ્રી ચર્ચગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૮૧ શ્રી અષ્ટોતરશતક ગિરિરાજાય નમ:
૮૨ શ્રી સૌંદર્ય ગિરિરાજાય નમ:
૮૩ શ્રી પ્રીતિમંડન ગિરિરાજાય નમ:
૮૪ શ્રી યશોધર ગિરિરાજાય નમ:
૮૫ શ્રી કામુકકામ ગિરિરાજાય નમ:
૮૬ શ્રી અભયકંદ ગિરિરાજાય નમ:
૮૭ શ્રી ઉજ્જવલગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૮૮ શ્રી સુમતિ ગિરિરાજાય નમ:
૮૯ શ્રી શ્રેષ્ઠ ગિરિરાજાય નમ:
૯૦ શ્રી મહોદય ગિરિરાજાય નમ:
૯૧ શ્રી અભિનંદ ગિરિરાજાય નમ:
૯૨ શ્રી ભવતરણ ગિરિરાજાય નમ:
૯૩ શ્રી ગજચંદ્ર ગિરિરાજાય નમ:
૯૪ શ્રી સુરકાંત ગિરિરાજાય નમ:
૯૫ શ્રી અચલ ગિરિરાજાય નમ:
૯૬ શ્રી સહજાનંદ ગિરિરાજાય નમ:
૯૭ શ્રી મહેન્દ્રધ્વજ ગિરિરાજાય નમ:
૯૮ શ્રી સર્વાર્થસિધ્ધ ગિરિરાજાય નમ:
૯૯ શ્રી પ્રિયંકર ગિરિરાજાય નમ:

(૯૯ સિવાયના નામો)

૧૦૦ શ્રી બ્રહ્મગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૧ શ્રી નાન્દિગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૨ શ્રી શ્રેય:પદ ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૩ શ્રી પ્રભોપદ ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૪ શ્રી સર્વકામદ ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૫ શ્રી ક્ષિતિમંડલમંડન ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૬ શ્રી સહસ્રાખ્ય ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૭ શ્રી તાપસગિરિ ગિરિરાજાય નમ:
૧૦૮ શ્રી સ્વર્ણગિરિ ગિરિરાજાય નમ:

कुमकुम सने पगलिये

चातुर्मास अन्तर्गत धार्मिक आयोजन एवं तपस्याओं की झड़ी लगी

महवा। श्री राज राजेन्द्र जयन्त आराधना भवन, महवा पर साध्वी डॉ.श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी, श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में चातुर्मास अन्तर्गत अनेक धार्मिक एवं तप-आराधना के आयोजन हुए । गुरुपूर्णिमा महोत्सव, नवदिवसीय श्री नवकार आराधना, एकासना-पारणा, बहुमान, श्री पर्युषण महापर्व में एकासणा, स्वामी वात्सल्य, संवत्सरी पारणा, तपस्वी बहुमान, स्नात्र पूजा, प्रवचन, लक्की ड्रा आदि आयोजन हुए ।

पर्युषण महापर्व में श्री वीर जन्म वाचन में त्रिशला माता बनकर नृत्य के साथ 14 स्वप्नों के अवतरण का आयोजन, श्री पंच परमेष्ठी तप आराधना, श्री रत्नत्रयी तप आराधना, सुदी प्रतिपदा की महामांगलिक, महवा इतिहास में पहली बार भक्ति संध्या का आयोजन, 56 दिक् कुमारिका 64 इन्द्रकृत स्नात्र-महोत्सव, आसोज शाश्वती श्री नवपद ओली आराधना, चातुर्मासिक श्री राजेन्द्र धर्म आराधना, नियमावली कार्ड प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। पर्युषण महापर्व के दौरान 41 उपवास, 31 उपवास, अट्ठाई तप आदि अनेक तपस्याएँ हुईं।

साध्वीजी का देवलोकगमन, विभिन्न श्रीसंघों एवं परिषदों ने दी

श्रद्धांजलि

मुंबई। गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी मातृहृदया कोमललताश्रीजी म.सा. का 16 अक्टूबर 2015 को राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर 10 वीं खेतवाड़ी, मुंबई में दोपहर 3.25 बजे नवकार स्मरण करते हुए समाधिपूर्वक देवलोक गमन हुआ। रविवार, 25 अक्टूबर को दोपहर 2.00 बजे गुणानुवाद सभा पू. मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज श्री चन्द्रयशविजयजी म.सा., साध्वीजी श्री शासनलताश्रीजी, अनेकांतलताश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित की गई। मुनिश्री वैभवरत्नविजयजी ने कहा कि पुण्यशाली आत्मा ने सारे सुयोग प्राप्तकर समाधिमरण को प्राप्त किया। मुनिश्री चन्द्रयशविजयजी म.सा. ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि अपने गच्छ समुदाय में वे प्रवर्तिनी पद पर न होते हुए भी उनके समान थीं। उनकी सरलता हृदय को छूने वाली थी। साध्वीश्री अनेकांतलताश्रीजी ने उनकी अप्रमत्त दिनचर्या का वर्णन करते हुए कई प्रसंग बताए। सभा में श्री रमेश धरु (अध्यक्ष अ.भा.श्रीराजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्), श्री मंगलप्रभात लोढ़ा (सांसद), श्रीमती मंजू लोढ़ा, श्री जे.के.संघवी, श्री चम्पकलाल मोरखिया, श्री मुकेश वर्द्धन आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गुणानुवाद किया। सभा में श्री सेवंतीभाई मोरखिया (अध्यक्ष श्री थराद त्रिस्तुतिक जैन संघ, मुंबई), भीनमाल तपागच्छ जैन संघ के अध्यक्ष श्री कोलचंदजी मेहता (भीनमाल), अचलगच्छ जैन संघ के अध्यक्ष श्री घेवरचंदजी सेठ, श्री सुरेशजी बाफना, श्री कुंदनमलजी मास्टर, श्री कीर्तिभाई पारीख, श्री शांतिभाई दैयप, श्री नवीनभाई बलू, श्री जयेशभाई देसाई, श्री ललितभाई आदाणी, श्री प्रवीणभाई वोरा, श्री पृथ्वीराजजी कावेडी, श्री मफतलाल भाई –नैनावा, श्री सांकलचंदजी संघवी (संघवी ग्रुप), श्री मांगीलालजी धुम्बडीया,

श्री कांतिलालजी-पाथेड़ी, श्री शेषमलजी-दाधाल सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री संजयभाई बाऊ ने किया। मधुकर -संगीत ग्रुप ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए।

साध्वीजी का जीवन सौरभ -

जन्म नाम-ज्योतिबेन, पिता-श्री सांकलचंदजी खिवेंसरा, माता-सुनीदेवी, जन्मस्थान- सांथु (जि. जालोर, राज.), दीक्षा-वि.सं.2024, ज्येष्ठ सुदी 2 - सांथु, दीक्षा गुरु - आचार्य देवेश श्रीमद् विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.। गुरुणी-साध्वीश्री लावण्यश्रीजी म.सा.। बड़ी दीक्षा-ज्येष्ठ सुद 15 (संवत् 2026) सियाणा। दीक्षा पर्याय-48 वर्ष। कालधर्म दि. 16 अक्टूबर 2015, विहार भूमि - राजस्थान, म.प्र., तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक। शिष्याएँ-12 ठाणा, समुदाय परिवार 28 ठाणा।

पूज्य साध्वीजी को श्रद्धांजलि अर्पित

इंदौर। पूज्य साध्वीश्री कोमललताश्रीजी म.सा. को इन्दौर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा श्री राजेन्द्र उपाश्रय में साध्वीश्री सूर्योदया श्रीजी म.सा. की निश्रा में देववंदन से तथा अगले दिन गुणानुवाद-आदरांजलि सभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसी प्रकार गुमाश्ता नगर स्थित श्री राजेन्द्र सूरी गुरुमंदिर उपाश्रय में भक्तामर पश्चात् आदरांजलि अर्पित की गई।

* अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा इन्दौर ने पूज्य साध्वीजी भगवंता श्री कोमललता श्रीजी को भावभीनी बिदाई दी। अंतिम संस्कार की बेला में परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु, मार्गदर्शक श्री जे.के.संघवी, उपाध्यक्ष नवीन बल्लु, द.भारत से श्री राजेन्द्र जैन सहित हज़ारों की संख्या में कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

अपने शोक संदेश में श्री शांतिलालजी रामाणी, रमेश धरु, अशोक श्रीश्रीमाल सहित अन्य श्रद्धालुओं ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए साध्वीश्री के निधन को गच्छ, समाज, परिषद् के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि पूज्य साध्वीजी की सरलता अभी भी मनोमस्तिष्क पर छाई हुई है। आपका सर्वाधिक ध्यान ज्ञान शिविरों के

माध्यम से बच्चों को सुसंस्कारित करने पर रहा।

* झकनावदा। साध्वीश्री कोमल-लताश्रीजी के निधन पर उनकी आत्मा की शांति एवं उन्हें उच्च गति प्राप्त हो इस हेतु नवकार महामंत्र का जाप कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। स्थानीय परिषद् कार्यालय प्रांगण में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् शाखा झकनावदा के अध्यक्ष श्री मनीष कुमट, श्री शम्भुलाल सेठिया, श्री अर्जुन सेठिया, श्री दिनेश माण्डोत, श्री मोनू सेठिया, श्री बाबुलाल सेठिया, श्री कमल जैन, श्री पीयूष राठौड, श्री रोशन सेठिया, श्री गब्बर जैन, श्री मितेश कुमट सहित अन्य उपस्थित थे।

* पारा। सकल श्रीसंघ व परिषद् परिवार पारा द्वारा साध्वीश्री कोमललताश्रीजी के देहावसान पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मनोहर छाजेड़ ने साध्वीजी के निधन को गुरु गच्छ एवं त्रिस्तुतिक संघ के लिए अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि साध्वीजी का पारा जैन संघ से गहरा लगाव था। 1985 में राष्ट्रसंत श्री के साथ आपका पारा में चातुर्मास हुआ था। आपके नाम के अनुरूप ही सभी संघों से आपका व्यवहार कोमल रहा। श्रीसंघ महामंत्री श्री राजेन्द्र कोठारी ने धार्मिक पाठशाला में उनकी अथाह रूचि की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। सभी ने मिलकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की एवं नमस्कार महामंत्र का जाप किया।

पंचान्हिका महोत्सव सम्पन्न

इंदापुर। साध्वीश्री तत्वलताश्रीजी म., श्री कुसुमलताश्रीजी, सा. श्री राज यशाश्रीजी, सा. श्री जिनांकयशाश्रीजी आदि ठाणा के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व क्षमायाचना, तपस्वीजनों की तपस्या के अनुमोदन एवं स्व. साध्वी श्री कोमललताश्रीजी के आत्मश्रेयार्थ दिनांक 14 नवंबर से 18 नवंबर 2015 तक पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें सिद्धितप ग्यारह उपवास, अट्ठाई के पारणे, श्री अट्ठारह अभिषेक, केसरिया आदिनाथ महापूजन, श्री उवस्सगहरम् पार्श्वनाथ महापूजन, श्री गौतम स्वामी महापद पूजन एवं श्री गुरुपद महापूजन आदि कार्यक्रम हुए।

श्री संघ सौरभ

श्रद्धांजलि अर्पित

टाण्डा। प्रमुख गुरुभक्त श्री शांतिलालजी कोठारी की धर्मपत्नि श्रीमति लीलाबाई कोठारी का अरिहंत शरण शनिवार दिनांक 24 अक्टूबर 2015 को हो गया। आप समाज के अग्रणी श्री सुरेशजी कोठारी की माताजी थीं। आपकी स्मृति में मातृ वंदना कार्यक्रम 4 नवंबर को रखा गया। 5 नवंबर को स्वामी वात्सल्य, दोपहर में अंतरायकर्म पूजा, जयन्त धरोहर, लीला शांति सदन टाण्डा में सम्पन्न हुई। समाज द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

चांदी की आंगी चढ़ाई गई

बदनावर। पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंत सेन सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद, साध्वीश्री दर्शनकलाश्रीजी एवं साध्वीश्री जीवनकलाश्रीजी की प्रेरणा से, स्व. शांतिलालजी, स्व.सूरजबाई, स्व. श्री हिम्मतलालजी चौरड़िया की स्मृति में श्री सुरेशचन्द्र, नरेन्द्रकुमार, विजयकुमार, महावीर कुमार चौरड़िया परिवार (बामनिया वाले) की ओर से प्रभु श्री वासुपूज्य स्वामी भगवान को चांदी की आंगी चढ़ाई गई।

जीर्णोद्धार वर्ष पर सामूहिक आरती

कुक्षी। कुक्षी स्थित श्री शांतिनाथजी का बड़ा मंदिर के जिर्णोद्धार का 200 वाँ वर्ष मिति आसोज सुदी 2 संवत् 2072 को प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर मंदिरजी में रोशनी की गई व सामूहिक आरती का आयोजन हुआ। इस महत्वपूर्ण वर्ष में वर्षभर कुछ न कुछ कार्यक्रम चलते रहने की संभावना है।

सामूहिक ओलीजी का आयोजन

जावरा। साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी की सुशिष्या साध्वी डॉ. श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में चल रहे चातुर्मास अन्तर्गत पूज्य साध्वीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट पिपली बाजार द्वारा संचालित इस वर्ष की आसोज माह की सामूहिक ओलीजी का सम्पूर्ण लाभ एवं आराधकों के पारणे, श्रीसंघ एवं आमंत्रित अतिथियों के स्वामीवात्सल्य का लाभ श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति की आज्ञा से स्व. सेठ श्री सागरमलजी, स्व. सोहनबाई, स्व. बाबुलालजी

चौरड़िया की स्मृति में प्रकाशचन्द सुरेशकुमार चौरड़िया (बाबूलाल सागरमल जैन बोरखेड़ावाला, जावरा) परिवार को प्राप्त हुआ है। लगभग 100 आराधकों द्वारा निरंतर 9 दिवसीय आयम्बिल की तपस्या की गई। श्री संघ, चातुर्मास समिति एवं लाभार्थी परिवार द्वारा सभी की सुख शाता पूछी गई। श्रीसंघ के सभी सदस्यों का ओलीजी समापन पर बुधवार दिनांक 28 अक्टूबर 2015 को नवकारसी एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन पिपली बाजार जैन पंचायती नोहरे पर रखा गया। यह जानकारी चातुर्मास प्रचार प्रसार सचिव सचिन चत्तर ने दी।

तांतेड़ पुनः अध्यक्ष मनोनीत

जावरा। जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंत सेन सूरीश्वरजी अनुयायी श्रीसंघ जावरा के नवीन पदाधिकारियों का चयन पीपली बाजार, जैन पंचायती नोहरा पर आयोजित जनरल मीटिंग में किया गया। इसमें निर्विरोध रूप से श्री बाबुलालजी तांतेड़ को पुनः तीसरी बार अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। श्री तांतेड़ को सभी समाजजनों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। श्री तांतेड़ ने उनके प्रति प्रदर्शित स्नेह और विश्वास पर खरा उतरने का भरोसा जताया। यह जानकारी श्रीसंघ महासचिव प्रदीप सिसौदिया ने दी।

यात्रा आयोजन होगा

पालीताणा। प.पू.गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. सह मुनि मंडल एवं साध्वीजी म.सा. के सान्निध्य में श्री जयंतगिरि शत्रुंजय तीर्थाधिराज की चौविहार छट्ट करके सात यात्रा का आयोजन किया जाएगा। इसमें मोहनखेड़ा तीर्थ से 2 जनवरी 2016 को प्रस्थान, यात्रा के शुभ दिन 4 एवं 5 जनवरी, सिद्धांचल जी (पालीताणा) से प्रस्थान 6 जनवरी दोप. 2 बजे किया जाएगा। इसका लाभ संघवी वालीबाई सागरमलजी छाजेड़ परिवार,पारा जिला झाबुआ (म.प्र.) द्वारा लिया गया है।

पवित्रता – पवित्रता तभी सध सकती है, जब व्यक्ति वैभाविक प्रवृत्तियों से उपरत होगा। भाषांतर से ऐसा कहा जा सकता है कि आत्मगुणों का विकास या आत्मरमण ही पवित्रता का एक मात्र साधन है। कुछ लोग साधन–शुद्धि के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते। वे शुद्ध साध्य के लिए अशुद्ध–साधनों को स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं देखते। पर मेरी दृष्टि में यह ठीक नहीं है। शुद्ध–साध्य के लिए साधन भी शुद्ध ही चाहिए। पवित्रता को साधने के लिए अपवित्र साधन से ही सध सकता है।

परिषद प्रांगण से

वार्षिक सम्मेलन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न...

पेपराल (उत्तर गुजरात) अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद व महिला परिषद का वार्षिक सम्मेलन गुरू जन्मभूमि पेपराल में सम्पन्न हुआ । सम्मेलन को पावन सान्निध्यता सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. तथा वरिष्ठ मुनिराजश्री नित्यानंदविजयजी म.सा. ने प्रदान की । परिषद स्वयं सेवकों का समागम पेपराल मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मफतलालभाई व परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु (मुंबई) की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर सर्वानुमति से संगठन सशक्तिकरण, सेवा व समाजोन्नयन से जुड़े प्रस्तावों की सर्वानुमति से पारित किया गया सम्मेलन में वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. ने भी मार्ग दर्शन दिया।

अ.भा. श्रीराजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का वर्ष 2015 का वार्षिक सम्मेलन बनास कांठा की पावन भूमि पेपराल में आयोजित किया

गया। संगठन की वार्षिक गतिविधियों के आंकलन व आगामी कार्यक्रमों पर चिंतन करने के लिए देश भर के परिषद स्वयंसेवकों का पेपराल की धरा पर आगमन हुआ। परम पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी के दर्शन ने कार्यकर्ताओं में नए उत्साह का संचार किया । गुरूदेव की वात्सल्यता व स्नेह के अमीझरा ने कार्य परिषदजनों ने गुरूभक्ति से सराबोर कर दिया। परम पूज्य गुरूदेव के मुखारविंद से मंगलाचरण के उद्घोष के साथ ही परिषद सम्मेलन ने आकार लेना प्रारंभ किया।

सम्मेलन में समर्पणता के भावों के साथ उपस्थित स्वयं सेवकों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए पूज्य आचार्य श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने फरमाया कि संगठन शक्ति के बल पर गुरूदेव आचार्य श्री यतीन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. ने समाज निर्माण का सपना संजोया था। महज 136 कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में गठित यह संस्था आज समाज के लिए वरदान बनी हुई है। वास्तव में परिषद हमारे समर्पणता के भावों व गुरूभक्ति के स्वरूप को प्रकट करती हैं। परिषद के वर्तमान स्वरूप से मुझे बेहद प्रसन्नता है। परिषदजनों के अथक परिश्रम से गुरूदेव के समाजोन्नयन का स्वप्न साकार हुआ है। संस्था में अनुशासन स्थापित रखना हमारा लक्ष्य है। सभी सदस्यों की आपस में तालमेल बना कर अपने लक्ष्य की संपूर्ति की दिशा में कार्यशील रहना होगा ।

वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. ने परिषदजनों का आशीर्वाद प्रदान कर समाजसेवा का संकल्प धारण कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू (मुंबई) ने अपने उद्बोधन में कहा कि परिषद ने एक वर्ष में धार्मिक शिक्षण का लक्ष्य निर्धारित करते हुए धार्मिक क्षैत्र के हर पड़ाव को स्पर्श करने का प्रयास किया हैं। आगामी वर्ष को ''धार्मिक शिक्षा प्रसार वर्ष'' के रूप में मनाया जाएगा। परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ओ.सी.

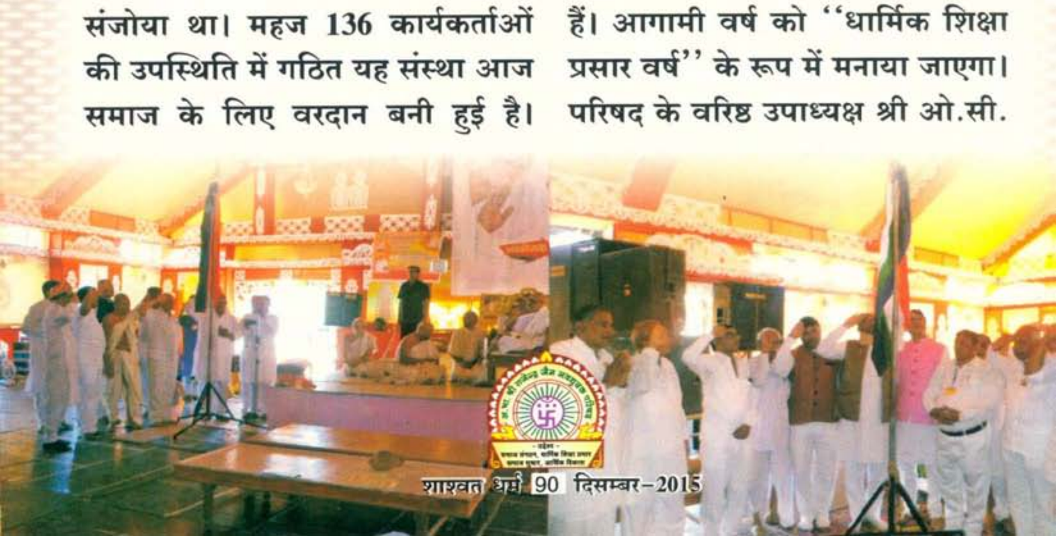

जैन ने परिषद के उद्देश्यों को पूर्ण करने का आव्हान किया।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्षा अंगुरबाला सेठिया ने कहा कि देश भर की महिला परिषद शाखाएं सक्रियता के साथ समाजसेवा के क्षैत्र में जुडी हुई हैं। नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश धारीवाल (कुक्षी) ने अपने संबोधन में कहा कि समाज व परिषद एक दूसरे के पूरक हैं। परिषद ने युवा पीढ़ी में धार्मिक शिक्षा का बीज अंकुरित किया है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्री श्रीमाल ने केन्द्रीय परिषद के वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा संगठन को मजबूत करने की आव्हान किया। आपने कहा कि प्रत्येक शाखा परिषद में प्रत्येक 2 वर्ष में संगठन की निर्वाचन प्रक्रिया अनिवार्य रूप से संपादित करें। परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अरविंद भाई देसाई ने भी संबोधित किया ।

सम्मेलन के प्रथम सत्र में गुजरात की प्रादेशिक ईकाई के प्रगति प्रतिवेदन का वाचन प्रदेश महामंत्री श्री संजय अदाणी ने किया। म.प्र. ईकाई का प्रतिवेदन श्री संजय कोठारी (उज्जैन), दक्षिण भारत का प्रतिवेदन श्री ओ.सी. जैन ने प्रस्तुत किया। प्रारंभ में सम्मेलन की शुरूआत परिषद के ध्वज के ध्वजारोहण के साथ हुई। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने झंडावंदन किया। तत्पश्चात ध्वज वंदना हुई। प्रारंभ में चरम तीर्थंकर महावीर स्वामी के चित्र पर दीप

प्रज्जवलन व माल्यार्पण मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मफतलाल भाई व उपाध्यक्ष श्री हीराभाई बेदलिया, श्री पोपटभाई, श्री नवीन भाई बल्लू, डॉ. अंगूरबाला सेठिया, तरूण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अभय बरबोटा, परिषद राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेंद्र जैन (बड़नगर) ने किया।

पेपराल वासियों ने किया अभिनंदन–

बनास की भूमि को तपोभूमि का रूप प्रदान करने पर पेपराल के ग्रामवासियों ने युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. को प्रशस्ति पत्र भेंट कर अभिनंदन किया। ग्रामवासियों की ओर से अभिनंदन पत्र श्री मफतलालभाई, श्री पोपटभाई, श्री हीराभाई वेदलिया ने आचार्य श्री के हस्तकमल में समर्पित किया । अभिनंदन पत्र का वाचन श्री प्रकाश छाजेड़ (पारा) ने किया। सम्मेलन में ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष श्री मफतलालभाई, श्री चंद्रकांतभाई (धार्मिक शिक्षक), पोपटभाई का भी अभिनंदन परिषद परिवार ने किया।

शाखा परिषदों ने प्रस्तुत किया सेवा का लेखाजोखा–

राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला परिषद के द्वितीय सत्र की शुरूआत दोपहर में हुई । जिसमें देशभर से सम्मेलन में भाग लेने आए शाखा परिषदों के प्रतिनिधियों ने संगठन की वार्षिक गतिविधियों के प्रगति प्रेतिवेदनों का वाचन किया। द्वितीय सत्र में मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा. मुनिराज श्री अपूर्वरत्न विजयजी म.सा., मुनिराज श्री चारित्ररत्न

विजयजी म.सा. ने भी मार्गदर्शन प्रदान किया। मुनिराज श्री निपूणरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि जो व्यक्ति गुरू चरण में रहता है उसका आचरण बदल जाता है। गुरूदेव ने परिषद सिंचन अपने परिश्रम से कर वटवृक्ष का स्वरूप प्रदान किया है। इसके पूर्व परिषद संगठन मंत्री श्री प्रकाशजी छाजेड़ (पारा) प्रवक्ता श्रीशांतिलालजी गोखरू (बड़नगर) पर्यावरणमंत्री श्री अनिलजी दसेड़ा, कमलेशजी जैन (अलीराजपुर), श्री राजकुमारजी नाहर (बड़नगर), श्री दिनेशजी धरू (डीसा), श्री सुजीतजी सोलंकी (विजयवाडा), श्री पारसजी सकलेचा (जावरा), श्री चिरागजी भंसाली, श्री विनोदजी डांगी, श्री मनीषजी बाफना, श्री ब्रजेशजी बोहरा, श्री वीरेन्द्रजी डोसी (मंदसौर), श्री ऋषभजी सेठिया (निम्बाहेडा), श्री राजकमलजी जैन (रतलाम), श्री राजकुमार भंडारी (करवड़), श्री अशोकजी चोरडिया (खाचरोद), श्री निखिलजी सेठिया (झाबुआ) ने भी उद्बोधन दिया। संचालन श्री शांतिलाल गोखरू ने किया।

कार्यक्रम में श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेडा (जावरा), श्री राजेन्द्र जैन (नवयुवक) परिषद के राष्ट्रीय प्रचारमंत्री श्री सुधीर लोढ़ा (मंदसौर), श्री विनोदभाई कोरदिया (डीसा), श्री सुशीलजी छाजेड़ परिषद जनकल्याण मंत्री (रतलाम), श्री नगीनजी सकलेचा (जावरा), श्री कौस्तुभजी डांगी (निम्बाहेडा), श्री जवाहरलालजी जैन (अलीराजपुर), श्री इन्दरमलजी दसेडा

(जावरा), श्री शशांक जी लुणावत (राजगढ), श्रीमती गुणमाला नाहर, श्रीमती पद्मा सेठ, श्री मुकेश जैन नाकोड़ा (झाबुआ), श्री रमेशजी जैन अनोखी (सूरत) उपस्थित थे।

जयनाद के साथ प्रभातफेरी–

सुदूर क्षैत्र से समागम में सम्मिलित होने के लिए पेपराल की धरा पर पहुंचे परिषदजनों की प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। परम पूज्य आचार्य देवेश के जयकारें के साथ स्वयं सेवक का सामेला सभा स्थल से निकला। गुरूजन्म भूमि पर दर्शन करने के लिए गुरूभक्तों की होड़ लग गई। ''गुरूजी हमारों अंतर्नाद...हमने आपो आशीर्वाद'' के जयघोष के साथ प्रभातफेरी गंतव्य स्थल पर पहुंची। प्रभातफेरी में मुनिराजद्वय श्री डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा. एवं श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. ने सान्निधता प्रदान की।

डीसा शाखा ने सर्वश्रेष्ठता हासिल की–

देशभर की 250 शाखाओं के वर्षभर के उल्लेखनीय सेवा कार्यों के आधार पर उन्हे केन्द्रीय परिषद द्वारा पुरस्कार से नवाजा गया। तीन सदस्यीय चयन समिति के सदस्य श्री संजयजी अदाणी, श्री सुधीर लोढा एवं श्री दिनेश मामा ने शाखाओं के सेवा कार्यों का आंकलन कर पुरस्कारों की घोषणा की। तदानुसार डीसा (गुजरात) शाखा के गत वर्ष में किए गए सेवा कार्य सर्वश्रेष्ठता के पडाव को छूने में सफल हुए। डीसा शाखा के पदाधिकारियों को सर्वश्रेष्ठता से सम्मानित किया गया। इसी कडी में श्रेष्ठ श्रेणी का प्रथम

पुरस्कार सूरत परिषद, द्वितीय पुरस्कार राजगढ शाखा, तृतीय पुरस्कार मुंबई प्रार्थना समाज को प्रदत्त किया गया। चिकित्सा क्षैत्र में अलीराजपुर, सेवा क्षैत्र में विजयवाड़ा, ज्ञानपीठ जयंत ज्योति पुरस्कार भायंदर (मुंबई) शाखा, व्यक्तिगत लेखन पुरस्कार श्री दिनेश जैन, रचनात्मक सेवा कार्य पुरस्कार जावरा, सम्मेलन में सर्वाधिक उपस्थिति पुरस्कार डीसा, केंद्रीय कार्यालय से संपर्क पुरस्कार हुबली, शाखा कार्यों के लिए मंदसौर, जीवदया पुरस्कार खाचरोद,अहिंसा पुरस्कार अहमदाबाद, शाश्वत धर्म प्रचार पुरस्कार सूरत, वैयावच्च पुरस्कार पारा एवं पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार निम्बाहेडा शाखा परिषदों को प्रदान किया गया।

इसी प्रकार महिला परिषद शाखाओं को भी उल्लेखनीय सेवाकार्य के लिए पुरस्कृत किया गया। प्रथम पुरस्कार निम्बाहेडा, द्वितीय पुरस्कार डीसा, तृतीया पिपलौदा सर्वाधिक उपस्थिति पुरस्कार थराद, धार्मिक महिला शिक्षा कुक्षी व सामायिक पुरस्कार झाबुआ शाखा परिषद को प्रदान किए गए।

पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन सुरीजी का जन्म दिवस स्वास्थ दिवस के रूप में

इन्दौर। प. पूज्य आचार्य देवेश सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद्विजय जयन्तसेन सुरिश्वरजी म.सा. का 80 वां जन्म दिवस परिषद परिवार इस बार भी स्वास्थ्य दिवस के रूप में सम्पूर्ण भारत की शाखाओं द्वारा एकरूपता के अनुरूप मगसर वद 13, 9 दिसम्बर 2015 को विभिन्न प्रकार के स्वास्थ शिविर जैसे हृदय रोग निवारण, जनरल चैकिंग, नैत्र शिविर रक्तदान, शिविर, रक्त परिक्षण शिविर, विकलांग निवारण, शिविर अथवा अस्पतालों में रोगियों को दवाई वितरण, भोजन वितरण, फल वितरण कर मनायेंगे। साथ ही उपाश्रय में गुरू गुणानुवाद सभा भी आयोजित की जावे।

शिविर स्थानिय व्यवस्थानुसार दो चार दिन आगे-पिछे आयोजित किये जा सकते हैं।

तरूण परिषद का वार्षिक सम्मेलन संपन्न

गुजरात प्रांत में स्थित गुरू जन्मभूमि पेपरालतीर्थ पर अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद का 16 वाँ वार्षिक सम्मेलन प.पू.सुविशाल गच्छाधिपति, तरूण परिषद संस्थापक, राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय डॉ.जयन्तसेन सूरीश्वरजी ''मधुकर'' महाराजा साहेब के परम पावन सानिध्य में संपन्न हुआ।

सम्मेलन में प्रथम सत्र के प्रारंभ में राष्ट्रीय निर्देशक अनिलजी जैन, सुनिलजी डैडी, चिरागजी भंसाली, अभयजी बरबोटा, शशांक लुणावत द्वारा ध्वजवंदन किया गया। ध्वज गीत सिद्धार्थ तलेसरा ने गाया। तत्पश्चात गुरूदेव श्री के मंगलाचरण के साथ मुनिराज चारित्ररत्न विजयजी म.सा. ने परीषद को मार्गदर्शन दिया। मुनिराज निपूणरत्न विजयजी म.सा. ने सम्यकत्व को परीभाषित करते हुये सद्गुरू के प्रति आस्था समर्पण को समझाया, उसके बाद आचार्य श्री द्वारा सभी तरूण परिषद सदस्यों को समकित धारण कराया (गुरू दीक्षा) दी। श्री जयन्तसेन सूरी शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपरालतीर्थ के अध्यक्ष श्री मफतभाई द्वारा हीराभाई का बहुमान निलेश लोढ़ा, अर्पित खाबिया, राजेन्द्र पटवा, करण मोरखिया, पक्षाल कोरडिया, पियुष संघवी, अर्पित कोठारी, पवन कटारिया, भाविक माजनी, प्रतिक जैन, मनीष बाफना, स्वस्तिक जैन, नितेश सोनगरा आदि ने किया।

द्वितीय सत्र में सभी शाखा परिषदों ने अपना-अपना प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें कार्यो के आधार पर शाखाओं को पुरूस्कृत किया गया।

सर्वश्रेष्ठ शाखा प्रथम	: सुरत–	श्री चाँदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लडेगांव धार स्मृति
सर्वश्रेष्ठ शाखा द्वितीय:	राजगढ़–	श्री सीतारामजी भंवरलालजी मेहता, उज्जैन स्मृति
सर्वश्रेष्ठ शाखा तृतीय :	अहमदाबाद–	स्व.श्री इंदरमलजी खाबिया, बड़नगर की स्मृति में
नवपल्लवित शाखा	: मोटेरा–	श्री विमलकुमारजी, पंकजजी, नितेशजी सोनगरा, इन्दौर
जीवदया क्षेत्र	: डीसा–	श्री भैरूलालजी सौभाग्यमलजी भण्डारी, राजगढ़
पर्यावरण क्षेत्र	: चौमेला–	स्व.श्रीमती चांदबाई बाफना, संजीत की स्मृति में
सेवाकार्य क्षेत्र	: बड़नगर–	श्री विमलचंदजी सुनिलजी प्रवीणजी डुंगरवाल, नयागांव
वैयावच्च क्षेत्र	: रतलाम–	स्व.श्री समीरमलजी कोठारी पारा की स्मृति में
धार्मिक शिक्षा क्षेत्र	: जावरा–	श्री विरेन्द्रकुमारजी नानालालजी जैन भाबरा
सामाजिक क्षेत्र	: निम्बाहेड़ा–	श्री चिरागजी मानमलजी भंसाली रिंगनोद
परिषद गौरव	: अहमदाबाद–	श्री कनकमलजी समीरमलजी लुणावत रिंगनोद
चिकित्सा क्षेत्र	: पारा–	स्व. श्री सूरजमलजी पिछोलीया चौमेला की स्मृति में
सर्वाधिक उपस्थिति :	डिसा–	स्व. श्रीमति रोशनबाई बरबोटा रतलाम की स्मृति में

पूज्य गुरूदेव श्री के श्रीमुख से तरूण परिषद की नवीन राष्ट्रीय कार्यकारिणी को मनोनित किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष	: अभय बरबोटा, रतलाम
राष्ट्रीय महामंत्री:	अर्पित खाबिया, बड़नगर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष:	आविक माजनी, अहमदाबाद
उपाध्यक्ष	: करण मोरखिया, सूरत.
	किरण वाणीगोता, बिजापुर
मंत्री	: राजेन्द्र पटवा, उज्जैन
सहमंत्री	: पियुष संघवी, झाबुआ
कोषाध्यक्ष	: हर्ष बाफना, राजगढ़
शिक्षामंत्री	: साकेत गिरीया, बड़नगर
संगठन मंत्री	: विशाल गोखरू, निम्बाहेड़ा
प्रचारमंत्री	: पवन कटारिया, जावरा

सभी नव-नियुक्त पदाधिकारियों को मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई।

सम्मेलन का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री पवन जैन, चौमहला ने किया।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का मालवा सहित विभिन्न प्रांतों में प्रवास

(श्री अशोक श्रीश्रीमाल)

परमपूज्य सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जी की पावन प्रेरणा और शुभाशीर्वाद से प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी पर्यूषण पर्व पश्चात् 'अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय शाखा सदस्यों द्वारा विभिन्न स्थानों पर चातुर्मास हेतु विराजित गुरु भगवंत, मुनि भगवंत तथा साध्वीजी महा.सा. के दर्शन, वंदन तथा मिच्छामि दुक्कड़म् के साथ-साथ उनका शुभाशीर्वाद प्राप्त करने, परिषद् के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु प्रवास किए गए।

दौरे का शुभारम्भ पेपराल में विराजित परमपूज्य गुरुदेव एवं समस्त श्रमण-श्रमणी भगवंतों के तप-आराधना की सुख शाता पूछते हुए संवत्सरी के पावन पर्व के साथ किया गया। पर्व पर्यूषण की आराधना पूज्यश्री की निश्रा में की गई। परामर्शदाता श्री जे.के.संघवी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु, महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, म.प्र. के महामंत्री श्री मोहितजी तांतेड़, श्री मोहनजी ढालावत, श्री पारसजी कोठारी सहित परिषद् के अनेक सदस्य उपस्थित थे। पंचमी के दिन सौ.वृ.त.जैन श्वेता. श्री संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई, उपाध्यक्ष श्री अरविंदजी देसाई, श्री रमेशजी नड़ियाद, म.प्र. प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़, परिषद् के राष्ट्रीय-प्रांतीय परिवार की उपस्थिति व परस्पर क्षमायाचना के दौरान पूज्यश्री ने कहा कि निर्मल हृदय से कार्य करने से ऊर्जा और उत्साह कई गुना बढ़ जाता है। विशुद्ध भावना के साथ जब महात्माओं का आशीष व प्रेरणा मिलती है और उस दिशा में कार्य किया जाता है तो वह कार्य संघ,समाज तथा प्राणीमात्र के लिए हितकारी होता है। संघ-परिषद् समाज हित में सकारात्मक कार्यों को निरन्तर आगे बढ़ाते रहें। मजबूत संगठन, सभी के प्रति सद्भावना, आपसी मैत्री भावना, सभी के प्रति सम्मान, विनम्रता, विवेकशीलता ये बिंदु हमारे वर्तमान और भावित प्रकल्पों को साकार करेंगे।

प्रवास में सभी से मिलना-जुलना परिषद् में सक्रियता

लाएगा। लगातार सम्पर्क, विचारों के आदान-प्रदान में वृद्धि करता है, सम्बन्धों में प्रगाढ़ता लाता है। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि परिषद् अच्छा कार्य कर रही है।

प्रवास का द्वितीय चरण मालवा प्रांत के इन्दौर शहर से आरंभ किया गया। प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ कुंवर मंडली स्थित श्री राजेन्द्र उपाश्रय में साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी, कैलाशश्रीजी एवं विपुलदर्शिता श्रीजी के दर्शन वंदन किए। पश्चात् स्थानीय परिषद् की बैठक हुई जिसमें श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सोहनलालजी पारिख, परिषद् के राष्ट्रीय शिक्षामंत्री श्री नीरज सुराणा, संगठन मंत्री श्री महेन्द्र जैन, प्रांतीय जनकल्याण मंत्री श्री अनिलजी सकलेचा, गुमाश्ता नगर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री कैलाशजी मेहता सहित वरिष्ठजन उपस्थित थे। दोपहर में प्राचीन तीर्थ मक्सीजी पहुँचे। दर्शन-पूजन पश्चात् यहाँ भी स्थानीय परिषद् की बैठक सम्पन्न हुई। ट्रस्टी डॉ. श्री अश्विन तथा परिषद् अध्यक्ष श्री हेमन्त वैदमुथा सहित लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे। संगीतकार श्री हेमन्तजी ने बताया कि यहाँ पूज्य गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरि गुरु मंदिर में अखण्ड ज्योति तथा नियमित दर्शन-पूजन होता है। गुरु सप्तमी पर विशाल शोभायात्रा -पूजन आरती, सामूहिक स्वधर्मी वात्सल्य का कार्य परिषद् एवं ट्रस्टीगण गुरुभक्तों के साथ सम्भालते हैं।

शाजापुर में मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी एवं श्री भुवनरत्न विजयजी म.सा. ने आशीर्वाद प्रदान किया। स्वाध्याय, ज्ञानार्जन एवं पीएचडी की तैयारियाँ कर रहे मुनिराजश्री ने पाठशाला पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया।

सायंकालीन बैठक जावरा परिषद् संघ के साथ हुई। यहाँ राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री शांतिलालजी गोखरु, श्री अनिलजी दसेड़ा, श्री नगीनजी सकलेचा, प्रांतीय महामंत्री श्री मोहितजी तांतेड़, श्री वीरेन्द्रजी राठौर सहित अन्य पदाधिकारीगणों ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रातः साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शना श्रीजी आदि ठाणा 3 के दर्शन, वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य साध्वीजी ने धार्मिक शिक्षण शिविर के माध्यम से बच्चों को सुसंस्कारित करने पर ध्यान देने को कहा। इस अवसर पर श्री ब्रजेशजी बोहरा भी उपस्थित थे।

बदनावर में परिषद् एवं संघ द्वारा संचालित जैन विद्यालय के प्रांगण में पदाधिकारियों की बैठक हुई। स्थानीय शाखा ने वार्षिक गतिविधियों की

जानकारी दी। बैठक को श्री रमेशभाई धरु, श्री अशोक श्रीश्रीमाल, श्री वीरेन्द्र राठौर, श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ा ने संबोधित किया। प्रांतीय महामंत्री श्री मोहितजी ने शाखा के उल्लेखनीय कार्यों की सराहना की। संचालन श्री शांतिलालजी गोखरू ने किया। पदाधिकारीगणों ने श्री अनिलजी मूणत के निवास पर जाकर उनकी माताजी के निधन पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मोहनखेड़ा तीर्थ तथा म्यूजियम में दर्शन, पूजन पश्चात् सायंकाल राजगढ़ में विराजित साध्वीजी श्री काव्यरत्नाश्रीजी आदि ठाणा 3 के दर्शन किए। रात्रि में राजगढ़ परिषद् की बैठक हुई जिसमें अध्यक्ष श्री कांतिलालजी जैन, सचिव व केन्द्रीय पदाधिकारी श्री दिनेश मामा, संचालक श्री मोदीजी ने परिषद् के कार्यों में विशेषकर पशु चिकित्सा शिविर, नैत्र शिविर, अपाहिज निवारण शिविर आदि सेवाकार्यों की जानकारी दी। श्री राजमलजी पुराणिक के निवास पर शोक संवेदना व्यक्त की।

प्रातः कुक्षी में श्री मनोहरलालजी पुराणिक की माताजी श्रीमती चन्दरबाई के निधन पर उनके निवास पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। कुक्षी परिषद् तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री रमेश धारीवाल के साथ निवास पर पहुँचे।

दोपहर में बाग परिषद् के साथ सायंकाल झाबुआ परिषद् के साथ बैठक सम्पन्न हुई। झाबुआ में राजवाड़ा चौक पर ढोल के साथ परिषद् साथियों द्वारा जोरदार आगवानी की गई। यहाँ चातुर्मास हेतु विराजित साध्वीजी पुण्यदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा 3 के दर्शन कर उपाश्रय हाल में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में पिछले 50 वर्षों से लगातार पूज्यश्री की निश्रा में आराधना करने वाली गुरुभक्ता श्रीमति लीलाबहन भण्डारी उपस्थित थीं। नवयुवक एवं महिला परिषद् के साथ बालिका एवं तरुण परिषद् ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, पुष्पमाला अर्पण पश्चात् नन्हें बच्चों द्वारा शानदार स्वागत गीत की प्रस्तुति से हुआ। परिषद् सचिव श्री निखिल भंडारी ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री भंडारी एवं अध्यक्ष श्री मुकेशजी नाकोड़ा ने प्रतिवेदन की प्रति भेंट कर झाबुआ परिषद् द्वारा किए जा रहे कार्यों का विस्तृत उल्लेख किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री रमेशजी भाई, अशोक श्रीश्रीमाल, प्रकाशजी छाजेड़, ब्रजेशजी बोहरा, प्रकाशजी तलेसरा, दिनेश मामा, यशवंत

भंडारी आदि पदाधिकारियों ने परिषद की स्थानीय व राष्ट्रीय गतिविधियों का उल्लेख किया।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का गुजरात व राजस्थान का प्रवास

पेपराल में पूज्य गुरुदेव की पावन निश्रा में अ.भा.श्रीसंघ की कार्यकारिणी एवं नवनियुक्त प्रतिनिधियों की 4 अक्टूबर 2015 को सम्पन्न बैठक में परिषद् के राष्ट्रीय, प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ विभिन्न शाखा परिषद् के सदस्य भी उपस्थित थे। परिषद् के मार्गदर्शक श्री शांतिलालजी रामाणी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ओ.सी.जैन, श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, श्री सोहनलालजी पारेख, श्री जावंतराजजी वाणीगोता, श्री रमेशजी धारीवाल, श्री पारसजी जैन, श्री नवीन बल्लू, श्री राजेन्द्र दंगवाड़ा, श्री राजेन्द्र सुराणा, श्री पारस भंडारी, श्री विनोद कोरडिया, श्री नीरज सुराणा, श्री कौस्तुप डांगी, श्री महेन्द्रजी बागवला, श्री सुशीलजी छाजेड़, श्री भेरुलालजी सेठ, राजस्थान प्रांतीय अध्यक्ष श्री बाबुलालजी कटारिया सहित अनेक परिषद् साथियों ने परमपूज्य गुरुदेव, मुनि एवं साध्वीजी भगवंत, पधारे समस्त श्रीसंघों से परस्पर क्षमायाचना, विचार विमर्श कर परिषद् की गतिविधियों से अवगत कराया।

भीनमाल

72 जिनालय में दर्शन-पूजन पश्चात् श्री महावीर जिनालय उपाश्रय में साध्वीश्री नयनप्रभाश्रीजी, श्री अनंतदृष्टाश्रीजी, श्री मयूरकलाश्रीजी आदि ठाणा 20 के दर्शन-वंदन के साथ साध्वीश्री मयूरकलाश्रीजी की वाणी में प्रवचन का श्रवण लाभ भी मिला। साध्वीजी ने कहा- देव,गुरु और धर्म के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा और समर्पण यदि है तो चरम लक्ष्य की सम्पूर्ण बाधाएँ अपने आप क्रमशः दूर होती चली जाती हैं। एक जिज्ञासु के प्रश्न -'क्या हमें हमारा जन्मदिन अथवा किसी भी घनिष्ठ व्यक्ति का जन्मदिन मनाना चाहिए? और यदि हम उसे बजाय केक़ काटने-मोमबत्ती फूंकने की पाश्चात्य शैली के स्थान पर सामायिक अथवा अन्य धार्मिक आयोजन के साथ मनायें तो क्या हर्ज है?' के प्रत्युत्तर में आप ने कहा कि धार्मिक आयोजन, सामायिक करना अच्छी बात है पर जन्मदिवस की खुशी के बजाय मैं क्यों जन्म की खुशी मनाऊँ इस पर चिन्तन करना ज्यादा सार्थक है। प्रभु से विनती करें कि मुझे अजन्मा बना दें, बार-बार जन्म मरण को मिटा दें। मनाना है तो प्रभु के कल्याणक अथवा साधु-

साध्वीजी के संयम दिवस की अनुमोदना दिवस खुशी के साथ धार्मिक आयोजन रखकर मनाने से हमारी चारित्राचार-अन्तराय दूर होगी। भीनमाल में श्री शांतिलालजी रामाणी, श्री ओ.सी.जैन, श्री रमेशजी धरु, श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, श्री मुकेशजी, झाबुआ आदि उपस्थित थे।

धाणसा

मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म.सा., श्री अशोकविजयजी म.सा., श्री आनन्द विजयजी म.सा. तथा साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी आदि ठाणा 6 के यहाँ दर्शन-वंदन किए। मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म.सा. ने आशीर्वचन में-सकारात्मक सोच के साथ, चतुर्विध संघ संगठन में मजबूती, एकता, परस्पर मिलनसारिता, स्नेह बढ़ाने हेतु अधिक सक्रियता से पहल करने की बात कही जो जिनशासन हित में अधिक कारगर होगी।

वागरा

मुनिराज श्री जयकीर्तिविजयजी म.सा. स्वास्थ्य की प्रतिकूलता से ठाणा पंथी हैं। दर्शन-वंदन के पश्चात् पूज्यश्री, श्री रमेशभाई धरु के पिताश्री बच्चुभाई धरु तथा पूर्व के श्रावकों की स्मृतियाँ ताजा कर रहे थे। यहाँ जिनमंदिर के शताब्दी महोत्सव तथा पूज्य गुरुदेवश्री के आगमन की जोरदार तैयारियाँ चल रहीं थीं।

अहमदाबाद

खानपुर में साध्वीश्री कनक प्रभाश्रीजी, श्री दर्शितगुणाश्रीजी आदि ठाणा 6, मीठाखली में साध्वी श्री बसंतमालाश्रीजी, श्री रंजनमाला श्रीजी, तपा वाडज में साध्वीश्री दिव्यदृष्टा श्रीजी ठाणा-3 मोटेरा में साध्वी श्री अध्यात्मकलाश्रीजी, श्री जेयगणाश्रीजी, रतनपोल में साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन कर परिषद् के लिए शुभाशीष व मार्गदर्शन प्राप्त किया।

महाराष्ट्र

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु, उपाध्यक्ष श्री नवीन बल्लु, मार्गदर्शक श्री जे.के.संघवी ने संयुक्त तथा अलग-अलग साधु-साध्वी भगवंतों के दर्शन-वंदन का लाभ लिया।

मुंबई 7 रास्ता

मुनिराज श्री वैभवरत्न विजयजी आदि ठाणा 3, खेतवाड़ी मुंबई में-साध्वीश्री कोमललताश्रीजी आदि ठाणा 9, भायंदर में साध्वीश्री शासनलताश्रीजी ठाणा 4 के सुखशाता पृछना की। महाराष्ट्र के इन्दापुर में चातुर्मास कर रही साध्वीश्री

तत्वलताश्रीजी म.सा., साध्वीश्री कुसुमलताश्रीजी म.सा. (जिनका पिछले वर्ष कसरावद में ऐतिहासिक चातुर्मास हुआ था)का दर्शन,वंदन, मिच्छामि दुक्कड़म् के पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु ने उनकी सुख साता पूछी और परिषद् के लिए शुभ संदेश लिया।

पाटण

विराजित साध्वीश्री सिद्धिनिधिजी म.सा. ठाणा 3 का दर्शन, वंदन राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, शिक्षामंत्री श्री नीरज सुराणा, संगठन मंत्री श्री महेन्द्र जैन ने किया।

दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु में प्रवास

अक्टूबर के द्वितीय सप्ताह में पदाधिकारियों ने दक्षिण भारत के गुंटूर शहर में चातुर्मास हेतु विराजित साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. के दर्शनार्थ योजना बनाई। प्रवास की शुरुआत विजयवाड़ा शहर से की। विजयवाड़ा में परिषद् के मार्गदर्शक आदरणीय श्री शांतिलालजी रामाणी, अध्यक्ष श्री रमेश धरु, महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, सहमंत्री श्री पारस भण्डारी प्रांतीय सहमंत्री श्री सुजित सोलंकी उपस्थित थे। प्रवास के संयोजक श्री सुजित सोलंकी के साथ विजयवाड़ा शाखा द्वारा प्रति मंगलवार को संचालित होने वाली अन्नदान योजना के कार्यक्रम स्थल पर गए। यहाँ लगभग पाँच सौ व्यक्तियों को भोजन दिया जा रहा था।

विजयवाड़ा शाखा द्वारा संचालित इस योजना में लाभार्थी द्वारा 5600/-रु. राशि लेकर कतारबद्ध 500 लोगों को पूरा भोजन वितरित किया जाता है। बहुत ही व्यवस्थित और सुचारू रूप ले चुकी इस योजना में इस दिन का लाभ श्री रमेशभाई ने लिया। पदाधिकारियों ने अपने हाथों से भोजन वितरित किया।

राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर की बैठक में विजयवाड़ा शाखा द्वारा चल रही अन्य गतिविधियों में प्रति पाक्षिक वृद्धाश्रम में जाकर भोजन देना, प्याऊ सहित अन्य संचालित प्रकल्पों की जानकारी प्राप्त हुई। आचार्यश्री के चातुर्मास के दौरान आदरणीय श्री शांतिलालजी रामाणी द्वारा गठित परिषद् ने यहाँ के कार्यकर्ताओं के सक्रिय प्रयासों से देश की अग्रणी शाखाओं में स्थान पाया है। बैठक को श्री शांतिलालजी रामाणी सहित सभी पदाधिकारियों ने संबोधित किया।

गुल्लीमेरु

राजमहेन्द्री और काकीनाड़ा के समीपस्थ गुल्लीमेरु तीर्थ पर आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से निर्मित सुन्दर जिनालय है। जमीन से निकली प्राचीन प्रतिमाओं पर स्थानीय जैन व जैनेत्तर समुदायों की भी अत्यंत श्रद्धा है। जंगल में मंगल की प्रतीति कराने वाले इस तीर्थ पर मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी एवं श्री विद्वतरत्न विजयजी म.सा ने उपधान करवाया था।

यहाँ दर्शन-वंदन कर राजमण्डी के अन्य प्राचीन जिनालयों में दर्शन किए। परिषद् के सदस्य तथा संघ अध्यक्ष, ट्रस्टीगण की उपस्थिति में यहाँ राजमण्डी में बैठक आयोजित हुई। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अधिक सक्रियता से कार्य करने की प्रेरणा दी। श्री शांतिलालजी रामाणी ने आश्वस्त किया कि केन्द्रीय परिषद् द्वारा परिषद् की प्रवास अल्पता को दूर कर निरंतर प्रवास करते रहेंगे जिससे दक्षिण भारत में भी सक्रियता बनी रहेगी।

यहाँ 20 से अधिक सदस्यों को शपथ दिलाई गई। श्री प्रकाशजी भण्डारी, श्री अशोकजी, श्री महावीरजी तथा अन्य साथियों की सराहनीय पहल रही।

गुंटूर

साध्वीजी भगवंता श्री आत्म-दर्शनाश्रीजी का चातुर्मास तपस्या व आराधनाओं से भरपूर रहा। अन्य तपस्याओं के साथ दो बहनों को अट्ठाई के पारणे, अट्ठाई की आठ अट्ठाई तप हुए। पदाधिकारीगण तपस्वी के यहाँ सुख शाता पूछने हेतु भी गए। गुन्टूर वन टाउन एवं टू टाउन की संयुक्त बैठक हुई। वन टाउन के श्री राजेश भण्डारी ने बताया कि यद्यपि हम वे सभी कार्य जो परिषद् करती आ रही है, उसे उम्दा तरीके से करते हैं, पर हमारा बैनर राजेन्द्र सेवा समिति व अन्य है। टू टाउन के श्री जयंतीलालजी ने बताया कि केन्द्रीय परिषद् के निर्देशानुसार तथा स्थानीय शाखा परिषद् के विभिन्न प्रकल्पों को भी अच्छे से संचालित किया जा रहा है।

बैठक का आरम्भ साध्वीजी के मंगलाचरण से आरम्भ हुआ। श्री शांतिलालजी रामाणी, श्री रमेशजी, श्री अशोकजी आदि ने स्थानीय कार्यकर्ताओं को राष्ट्रीय परिषद् के प्लेटफार्म से जुड़ने का आह्वान किया। आपने कहा कि इन कार्यों को परिषद् के साथ जोड़कर राष्ट्रीय स्तर पर व्यापकता से संलग्न करें।

साध्वीजी ने कहा चूंकि उत्तर

भारत में पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों का विचरण अधिक है, फलस्वरूप गुजरात, मालवा, महाराष्ट्र स्थित परिषदों की सक्रियता अधिक रही है। दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार की अल्पता, राष्ट्रीय पदाधिकारियों के अल्प प्रवास, उत्तर-दक्षिण के कार्यकर्ताओं के परस्पर मिलने अथवा परिचय प्रक्रिया में कमी जैसे कुछ कारण हैं जिससे परिषद् के प्रति रुझान में कमी दृष्टिगोचर होती है। आप सभी का दायित्व है कि दक्षिण भारत में नियमित प्रवास का प्रयास कर परिषद एवं उसके माध्यम से अ.भा. स्तर पर किए जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी का प्रसार करें, रूचि जागृत करें। उन्होंने कहा कि वैचारिक सिंचन का अभाव सक्रियता में शुष्कता लाता है। मेरी प्रबल भावना है कि इन क्षेत्रों में समीपस्थ सभी परिषदों विशेषकर महिलाओं, बहनों का सम्मेलन आयोजित किया जाना चाहिए। समय-समय पर सम्मेलन के आयोजनों एवं प्रवास से कार्यकर्ताओं का उल्लास एवं जोश बना रहेगा।

नैल्लूर

परिषद् का ऐतिहासिक स्वर्णजयंति कार्यक्रम यहाँ सम्पादित हुआ। राजेन्द्रनगर तीर्थ स्थली। यह एक ऐसा स्थल है जहाँ से श्री शांतिलालजी रामाणी जैसे परम गुरुभक्त परिषद् और श्रीसंघ की नेतृत्व पंक्ति से जुड़े हुए हैं। सायंकाल साध्वीजी भगवंता श्री के दर्शन वंदन किए। साध्वीजी ने परिषद् के सेवाकार्यों को अद्भूत बताते हुए वैय्यावच्च, समाजसेवा और धार्मिक कार्यों में निरंतरता बनाए रखने की प्रेरणा दी। रात्रि में राजेन्द्र भवन में आयोजित बैठक में सक्रियता पर बल दिया। अतिशीघ्र चयन प्रक्रिया पूर्ण कर सेवा गतिविधियों को राष्ट्रीय कार्यक्रमों की मुख्य धारा में आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया गया।

चैन्नई

प्रातः परिषद् के अध्यक्ष श्री सूर्यप्रकाश भंडारी के निवास पर दिनेशजी करोड़पति, अभिषेकजी रामाणी की उपस्थिति में चर्चा हुई। इस अवसर पर तरुण सदस्यों को साथ लेकर सेवाकार्यों एवं उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए परिषद् की पताका को फहराने का संकल्प लिया।

दक्षिण भारत के इस अल्प प्रवास में जहाँ आत्मीयता के दर्शन हुए वहीं निरन्तर प्रवास की आवश्यकता भी महसूस की गई। निरंतर सिंचन से ही पौधे को हरा-भरा पल्लवित कर पाएंगे।

सूरत। तरुण परिषद् शाखा द्वारा जीवदया के सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। शाखा सदस्यों द्वारा पांजरा पोल जाकर लगभग 2500 गायों एवं अन्य पशुओं के लिए खाद्य सामग्री की व्यवस्था की गई। पशुओं को चारा, तरबूज, केले आदि प्रदान किए गए। इस कार्य की सभी ने बहुत अनुमोदना की।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषदः- सुरत

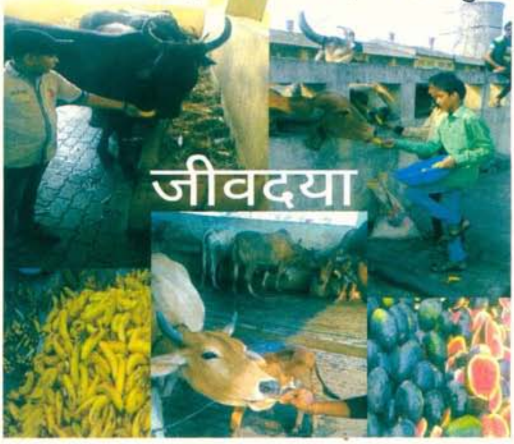

नवयुवक परिषद् की नवीन कार्यकारिणी का गठन

विनोद सरसीवाला
अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

लोकेन्द्र मोदी
महामंत्री
नवयुवक परिषद

राजगढ़। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा राजगढ़ की नवीन कार्यकारिणी का गठन श्री परिषद भवन पर वरिष्ठ समाजसेवी श्री बाबूलालजी मामा, श्री भेरुलालजी भंडारी व श्री कैलाशजी धाड़ीवाल के आतिथ्य में, शाखा अध्यक्ष श्री कांतिलालजी जैन की अध्यक्षता में किया गया।

इस अवसर पर सर्वानुमति से केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री कांतिलाल जैन, श्री बसंतीलाल लोढ़ा, श्री कांतिलाल भण्डारी, श्री दिनेश मामा को मनोनीत किया गया। निर्वाचन अधिकारी तरुण परिषद् के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री शशांक लुणावत ने नवीन कार्यकारिणी की घोषणा की जिसमें अध्यक्ष श्री विनोद डांगी सरसीवाला, उपाध्यक्ष श्री संजय मामा व नितिन धाड़ीवाल, महामंत्री श्री लोकेन्द्र मोदी, कोषाध्यक्ष श्री संदीप लोढ़ा, सहमंत्री श्री सिद्धार्थ जैन, शिक्षामंत्री श्री अशोक छजलानी, संगठन मंत्री श्री नितिन भण्डारी, प्रसारण मंत्री श्री प्रणय भण्डारी बनाए गए। 11 सदस्यीय कार्यकारिणी का गठन भी किया गया। बैठक का संचालन निवृत्तमान सचिव श्री दिनेश मामा ने किया। अंत में आभार श्री कीर्ति भण्डारी ने व्यक्त किया।

उज्जैन। अध्यात्म संस्थान 'महाकाल यंत्रा' की संस्थापिका श्रीमति संगीता सोनी ने श्री विनायक ए लुनिया को पत्रकारिता एवं समाजसेवा में योगदान हेतु 'युवारत्न' से सम्मानित करने की घोषणा की।

विजयवाड़ा। स्थानीय शाखा द्वारा पाक्षिक सेवा गतिविधि में 15 दिन में एक बार विभिन्न आश्रमों में बच्चों, वृद्धों, निःशक्तजनों के लिए नाश्ता एवं भोजन उपलब्ध कराने की योजना निरंतर जारी है। इस कार्य की सभी स्थानों पर अनुमोदना हो रही है।

विजयवाड़ा। विजयवाड़ा परिषद् के पदाधिकारियों ने आंध्रप्रदेश की विभिन्न परिषद् शाखाओं का दौरा किया। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमान शांतिलालजी रामाणी, परिषद् अध्यक्ष श्री रमेशजी धरु, श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, केन्द्रीय सहमंत्री श्री पारसमलजी भंडारी, दक्षिण भारत के सहमंत्री एवं विजयवाड़ा शाखा अध्यक्ष श्री सुजीत जी सौलंकी ने दिनांक 13 अक्टूबर को विजयवाड़ा का दौरा कर परिषद् के कार्यकर्ताओं की आमसभा में सेवाकार्यों की जानकारी प्राप्त की। शाम को राजमण्डी शाखा का दौरा कर शाखा की पुनर्स्थापना की गई। दिनांक 14 अक्टूबर को गूंटूर की दोनों शाखाओं का दौरा कर साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी की निश्रा में सभा आयोजित हुई जिसमें दोनों शाखाओं की जानकारी ली गई। शाम को नैल्लोर में परिषद् की सभा में श्री रामाणीजी ने शाखा को सक्रिय होने का संदेश दिया। इस दौरे से दक्षिण की विभिन्न परिषद् शाखाओं में नई ऊर्जा का प्रवाह हुआ है। सभी शाखाएं अपने कार्य एवं योजनाओं को सुचारू रूप से आगे बढ़ा रही हैं।

विजयवाड़ा में श्री रमेशजी, श्री अशोकजी ने भी मंगलवार को यहाँ संचालित एक योजना के अन्तर्गत गरीबों को अपने हाथों से भोजन परोसा। 'पहली रोटी गाय की' योजना भी सफल रही है। 11 अक्टूबर को परिषद् ने अपनी पाक्षिक गतिविधि में आश्रमों में जाकर लोगों को भोजन एवं नाश्ता करवाया। उक्त जानकारी श्री सुजीत सौलंकी ने दी।

जैन विश्व

* जबलपुर। खरतरगच्छाचार्य श्री जिनपीयूषसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में नूतन दादावाड़ी हेतु भूमिपूजन एवं मुहूर्त कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

* मुंबई। भारत विकास परिषद् मुंबई सेन्ट्रल एवं मणिधारी युवा परिषद् द्वारा 'घर एक मंदिर' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाज सेवा एवं महिला उत्थान के उत्कृष्ट कार्यों हेतु श्रीमती सुशीला बेन कपासी को 'नारी चेतना सम्मान' से सम्मानित किया गया।

* मुंबई। जैन समाज के संत पंन्यास हंसरत्नविजयजी म.सा. ने गुणरत्न संवत्सर व्रत पूर्ण किया है। इस व्रत में संतश्री ने 16 महिनों में 423 दिन उपवास किया। इसका समारोह 1 नवंबर को बांद्रा कुर्ला काम्प्लेक्स में मनाया गया।

* बड़ोदरा। कोठी पोल विस्तार में स्थित प्राचीन श्वेताम्बर जैन मंदिर देश का प्रथम वाई फाई जैन मंदिर बना। मंदिर 450 वर्ष पुराना है।

* धानेरा। श्री मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर में केशर की वर्षा हुई जिससे पूरा जैन मंदिर केशर के छींटों से भर गया। इस कारण मंदिर एवं गांव की प्रसिद्धि चारों ओर फैल रही है।

* पावापुरी। श्री पावापुरी तीर्थ में 3 नवंबर से 12 नवंबर 2015 तक भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव बड़े हर्ष एवं धूमधाम से मनाया गया।

* बैंकाक। बैंकाक श्वे. तेरापंथ के आद्य प्रवर्त्तक आचार्य श्री भिक्षु के 213 वें चरमोत्सव पर भिक्षु जैन धर्म जागरण का आयोजन किया गया।

* बालाश्रम (जालोर, राज.)। मरुधर में अड़तालीस पट्टी के सभी गाँवों का स्नेह सम्मेलन 25 दिसम्बर 2015 को बालाश्रम जि. जालौर (राज.) के ग्राम उम्मेदपुर के श्री भीड़भंजन श्वे. पार्श्वनाथ जैन मंदिर में रखा जाएगा।

* ओसवाल समाज की राष्ट्रीय पत्रिका 'ओसवाल महिमा' की ओर से ओसवाल स्थापना दिवस पर अखिल भारतीय स्तर पर लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता की अंतिम तिथि को 25 दिसम्बर 2015 तक बढ़ा दिया गया है। प्रतियोगिता का विषय 'देश की प्रगति में ओसवाल समाज का योगदान' है। उक्त जानकारी पत्रिका के प्रधान सम्पादक संघवी श्री मिट्ठुलाल डागा ने दी।

* ब्रिटिश पार्लियामेंट में राष्ट्रसंत मुनि श्री पुलकसागरजी महाराज को 'भारत गौरव' सम्मान से अलंकृत किया गया। मुनिश्री के प्रतिनिधियों ने इसे प्राप्त किया।

* गुवाहाटी। साध्वीश्री अणिमाश्री एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाश्रीजी के सान्निध्य में गुवाहाटी तेरापंथ सभा के तत्वावधान में वृहद श्रावक सम्मेलन आयोजित किया गया।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
  भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि.....   दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिंम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 112

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज

राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का

कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता : अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक : शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनैजर : आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिएशन
शाश्वत अध्यक्ष : नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिएशन
अध्यक्ष : श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001